INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान पुलिस कॉन्स्टेबल

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

LATEST EDITION

HANDWRITTEN NOTES

भाग- 2

इतिहास + संस्कृति + भूगोल + राजव्यवस्था (भारत)

Whatsapp - https://wa.link/thcvpm 1 website - https://bit.ly/raj-police-notes

इतिहास

प्राचीन भारत का इतिहास

1. सिन्धु घाटी सभ्यता
2. वैदिक काल
3. बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म
4. शैव धर्म, वैष्णव धर्म इत्यादि
5. महाजनपद काल
6. मौर्य काल (321-185 ई.पू.)
7. गुप्त काल साम्राज्य

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

मध्यकालीन भारत

1 अरबों का सिन्ध पर आक्रमण

2 दिल्ली सल्तनत

- गुलाम वंश से लोदी वंश तक

3 भक्ति आन्दोलन

4 सूफी आन्दोलन

5 बहमनी एवं विजयनगर साम्राज्य

6 मुग़ल साम्राज्य (1526-1707)

- बाबर से बहादुर शाह द्वितीय तक (1857 ई.)

आधुनिक भारत का इतिहास

1 यूरोपीय कम्पनियों का आगमन

2 अंग्रेजों की विभिन्न नीतियाँ

- राजनैतिक नीति , धार्मिक नीति सामाजिक नीति इत्यादि

3 1857 की क्रांति से पूर्व के जन आंदोलन

4 1857 की क्रांति

5 क्रांतिकारी आंदोलन से आजादी तक

6 कैबिनेट मिशन (मार्च 1946)

भारतीय संस्कृति के कुछ महत्त्वपूर्ण विषय

1 भारत के प्रमुख शास्त्रीय नृत्य, लोकनृत्य,

2 वाद्य यंत्र,

3 लोककला शैलियाँ, वास्तुकला शैलियाँ

4 भारतीय चित्रकला

5 मुगलकालीन स्थापत्य कला इत्यादि

विश्व भूगोल

1. सौर मण्डल

2. महाद्वीप एवं महत्त्वपूर्ण स्थान
3. पर्वत एवं पठार
4. महासागर
5. मैदान, मिट्टी एवं विविध

भारत भूगोल

1. सामान्य परिचय
2. भौतिक विभाजन
3. नदियाँ एवं झीलें
4. जलवायु
5. कृषि एवं पशुपालन
6. मृदा / मिट्टी
7. प्राकृतिक वनस्पतियाँ
8. प्रमुख खनिज एवं ऊर्जा संसाधन
9. भारतीय उद्योग
10. परिवहन तंत्र
11. अन्य महत्त्वपूर्ण One liner तथ्य
12. पारिस्थितिकी और वन्य जीव

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

भारत की राजव्यवस्था

1. संविधान सभा
2. संविधान की विशेषताएँ
3. उद्देशिका (प्रस्तावना)
4. नागरिकता
5. मौलिक अधिकार
6. नीति निदेशक तत्व
7. मूल कर्तव्य
8. राष्ट्रपति
9. उपराष्ट्रपति
10. प्रधानमंत्री एवं मंत्रिपरिषद
11. भारतीय संसद
12. उच्चतम न्यायालय
13. निर्वाचन आयोग
14. नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक
15. नीति आयोग
16. केंद्रीय सतर्कता आयोग
17. केंद्रीय सूचना आयोग
18. राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग
19. संघ लोक सेवा आयोग
20. संविधान संशोधन

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

21. अन्य महत्त्वपूर्ण तथ्य

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

प्राचीन भारत का इतिहास

अध्याय – I

सिन्धु घाटी सभ्यता

- यह दक्षिण एशिया की प्रथम नगरीय सभ्यता थी।
- इस सभ्यता को सबसे पहले हड़प्पा सभ्यता नाम दिया गया।
- सबसे पहले 1921 में हड़प्पा नामक स्थल की खोज दयाराम साहनी द्वारा की गई थी।
- सिन्धु घाटी सभ्यता को अन्य नामों से भी जानतें हैं।
- सैंधव सभ्यता- जॉन मार्शल के द्वारा कहा गया
- सिन्धु सभ्यता - माटिंयर व्हीलर के द्वारा कहा गया
- वृहतर सिन्धु सभ्यता – ए. आर-मुगल के द्वारा कहा।
- सरस्वती सभ्यता भी कहा गया।
- मेंलूहा सभ्यता भी कहा गया।
- कांस्यकालीन सभ्यता भी कहा गया।
- यह सभ्यता मिश्र एवं मेंसोपोटामिया सभ्यताओं के समकालीन थी।
- इस सभ्यता का सर्वाधिक फैलाव घग्घर हाकरा नदी के किनारे हैं। अतः इसे सिन्धु सरस्वती सभ्यता भी कहते हैं।
- 1902 में लार्ड कर्जन ने जॉन मार्शल को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग का महानिदेशक बनाया।
- जॉन मार्शल को हड़प्पा व मोहनजोदड़ों की खुदाई का प्रभार सौंपा गया।
- 1921 में जॉन मार्शल के निर्देशन पर दयाराम साहनी ने हड़प्पा की खोज की।
- 1922 में राखलदास बनर्जी ने मोहनजोदड़ों की खोज की।
- 20 सित० 1924 को जॉन मार्शल ने द इलस्ट्रेटेड लन्दन न्यूज' के माध्यम से इस सभ्यता की खोज की घोषणा की।

सिन्धु सभ्यता की प्रजातियां –

- प्रोटो-आस्ट्रेलायड - सबसे पहले आयी
- भूमध्यसागरीय - मोहनजोदड़ो की कुल जनसंख्या में सर्वाधिक

- मंगोलियन – मोहनजोदड़ो से प्राप्त पुजारी की मूर्ति इसी प्रजाति की है।
- अल्पाइन प्रजाति।

सिन्धु सभ्यता की तिथि

- कार्बन 14 (C^{14}) - 2500 से 1750 ई.पू.
- ह्विलेर - 2500-1700 ई.पू.
- मार्शल - 3250-2750 ई.पू.

इस सभ्यता का विस्तार

- इस सभ्यता का विस्तार पाकिस्तान और भारत में ही मिलता है।

पाकिस्तान में सिन्धु सभ्यता के स्थल

- सुत्कांगेडोर
- सोत्काकोह
- बालाकोट
- डाबर कोट
- **सुत्कांगेडोर**- इस सभ्यता का सबसे पश्चिमी स्थल है जो दाश्क नदी के किनारे अवस्थित है। इसकी खोज आरेल स्टाइन ने की थी।
- सुत्कांगेडोर को हड़प्पा के व्यापार का चौराहा भी कहते हैं।

भारत में सिन्धु सभ्यता के स्थल,

- **हरियाणा**- राखीगढ़ी, सिसवल कुणाल, बणावली, मितायल, बालू
- **पंजाब** – कोटलानिहंग खान चक्र 86 बाड़ा, संघोल, टेर माजरा
  रोपड़ (रूपनगर) - स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद खोजा गया पहला स्थल
- **कश्मीर** - माण्डा
  चिनाब नदी के किनारे
  सभ्यता का उत्तरी स्थल
- **राजस्थान** - कालीबंगा, बालाथल
  तरखान वाला डेरा
- **उत्तर प्रदेश**- आलमगीरपुर
  सभ्यता का पूर्वी स्थल

- माण्डी
- बड़गाँव
- हलास
- सनौली

- **गुजरात**
  धौलावीरा, सुरकोटड़ा, देसलपुर रंगपुर, लोथल,
  रोजदिख्वी,तेलोद,नगवाड़ा,कुन्तासी,शिकारपुर, नागेश्वर ,मेंघम प्रभासपाटन भोगन्नार

- **महाराष्ट्र**- दैमाबाद
  सभ्यता की दक्षिणतम सीमा
  फैलाव- त्रिभुजाकार
  क्षेत्रफल- 1299600 वर्ग किलों मीटर

इस सभ्यता की महत्त्वपूर्ण बातें -

- स्वतन्त्रता के बाद सर्वाधिक स्थल गुजरात में खोजे गये हैं।
- अल्लाहदीनो एवं मोहनजोदड़ो से सोने की वस्तुएं भारी संख्या में मिली हैं।
- जुते हुए खेत के साक्ष्य कालीबंगा से मिले हैं।
- चन्हुदड़ो लोथल एवं बगसरा से मनकें बनाने की कार्यशाला मिली है।
- कालीबंगा तथा पिराक (बलूचिस्तान) से एकसाथ दो फसल उगाने के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
- लोथल एवं कालीबंगा से युग्म शवाधान के साक्ष्य प्राप्त हुए।
- लोथल कालीबंगा, संघोला, बणावली आमरी नागेश्वर, बगाड़ एवं राखीगढ़ी से यज्ञवेदी का साक्ष्य मिलता है।
- कालीबंगा एवं बणावली की यज्ञवेदी सामुदायिक महत्त्व की थी।
- ऋग्वेद में हड़प्पा सभ्यता को हरियूपिया कहा गया है।
- रहमानदेरी प्राचीनतम नगर है जहाँ ग्रिड सड़कों एवं निवासों की व्यवस्था हुई।
- अभी तक सिन्धु सभ्यता के 2800 से अधिक स्थलों की खोज हो चुकी है।
- सिन्धु सभ्यता के 7 नगर

➢ हड़प्पा
➢ बनावली
➢ मोहनजोदड़ो
➢ धौलावीरा
➢ चन्हुदड़ो

- लोथल
- कालीबंगा

प्रमुख स्थल एवं विशेषताएँ

- **हड़प्पा**

  रावी नदी के किनारे पर स्थित

  दयाराम साहनी ने खोजा। खोज- वर्ष 1921 में

उत्खनन-

- 1921-24 व 1924-25 में दयाराम साहनी द्वारा।
- 1926-27 से 1933-34 तक माधव स्वरूप वत्स द्वारा
- 1946 में मार्टीमर ह्वीलर द्वारा
- इसे 'तोरण द्वार का नगर तथा 'अर्द्ध औद्योगिक नगर' कहा जाता है।
- पिगट ने हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो को इस सभ्यता की जुड़वा राजधानी कहा है। इन दोनों के बीच की दूरी 640 km.
- 1826 में चार्ल्स मैसन् ने यहाँ के एक टीले का उल्लेख किया, बाद में उसका नाम ह्वीलर ने MOUND-AB दिया।
- हड़प्पा के अन्य टीले का नाम MOUND-F है।
- हड़प्पा से प्राप्त कब्रिस्तान को R-37 नाम दिया।
- यहाँ से प्राप्त समाधि को HR नाम दिया।
- हड़प्पा के अवशेषों में दुर्ग, रक्षा प्राचीन निवास गृह चबूतरा, अन्नागार तथा ताम्बे की मानव आकृति महत्त्वपूर्ण हैं।

मोहनजोदड़ो

- सिन्धु नदी के तट पर मोहनजोदड़ो की खोज सन् 1922 में राखलदास बनर्जी ने की थी। उत्खनन - राखलदास बनर्जी (1922-27)
  - मार्शल
  - जे.एच. मैके
  - जे.एफ. डेल्स
- मोहनजोदड़ो का नगर कच्ची ईंटों के चबूतरे पर निर्मित था।

- मोहनजोदड़ो सिन्धी भाषा का शब्द, अर्थ- मृतकों का टीला मोहनजोदड़ो को स्तूपों का शहर भी कहा जाता है।
- बताया जाता है कि यह शहर बाढ़ के कारण सात बार उजड़ा एवं बसा।
- यहाँ से यूनीकॉर्न प्रतीक वाले चाँदी के दो सिक्के मिले हैं।
- वस्त्र निर्माण का प्राचीन साक्ष्य यहाँ से मिलता है। कपास के प्रमाण - मेंहरगढ़
- सुमेरियन नाव वाली मुहर यहाँ से मिली है।
- मोहनजोदड़ो की सबसे बड़ी इमारत संरचना यहाँ से प्राप्त अन्नागार है। (राजकीय भण्डारागार)
- यहाँ से एक 20 खम्भों वाला सभा भवन मिला है। मैके ने इसे 'बाजार' कहा है।
- बहुमंजिली इमारतों के साक्ष्य, पुरोहित आवास, पुरोहितों का विद्यालय, पुरोहित राजा की मूर्ति, कुम्भकारों की बस्ती के प्रमाण भी मोहनजोदड़ो से मिले हैं।
- बड़ी संख्या में कुओं की प्राप्ति ।
- 8 कक्षों वाला विशाल स्नानागार भी यहीं से प्राप्त हुआ हैं।

<u>कालीबंगा-</u>

- कालीबंगा की खोज अमलानन्द घोष द्वारा गंगानगर में गयी थी।
- सरस्वती नदी (वर्तमान घग्घर के तट पर)
- कालीबंगा वर्तमान में हनुमानगढ़ में है।
- उत्खनन - बी.बी लाल।1953 में
  वी. के. थापड़
- कालीबंगा - काले रंग की चुड़ियाँ
- कालीबंगा - सैंधव सभ्यता की तीसरी राजधानी
- कालीबंगा से एक साथ दो फसलों की बुवाई तथा जालीदार जुताई के साक्ष्य मिले।
- कालीबंगा से प्राप्त दुर्ग दो भागों में बंटा हुआ- द्विभागीकरण
- सड़को को पक्का बनाने का प्रमाण कालीबंगा से प्राप्त हुआ है।
- युग्म शवाधान का साक्ष्य शवों का अन्तिम संस्कार की तीनों विधियों के साक्ष्य यहाँ से प्राप्त।
- भूकम्प आने के प्राचीनतम प्रमाण
- वृषभ की ताम्रमूर्ति भी कालीबंगा से प्राप्त हुई है।

- यहाँ से प्राप्त लेखयुक्त बर्तन से स्पष्ट होता है कि इस सभ्यता की लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी।

चन्हूदड़ो -

- खोज एन. जी. मजूमदार
- उत्खनन मैंके ने किया ।
- सिन्धु सभ्यता का यह औद्योगिक शहर था ।
- यहाँ मणिकारी, मुहर बनाने, भार-माप के बटखड़े बनाने का काम होता था।
- सिन्धु संस्कृति के बाद विकसित झूकर- झांगर संस्कृति के अवशेष यहाँ से ही मिले।

लोथल

- खोज एस. आर. राव (रंग नाथ राव)1954 में की थी
  - लघु हड़प्पा
  - लघु मोहनजोदड़ो की संज्ञा
- बन्दरगाह या जल भण्डार या गोदीबाड़ा यहाँ की सबसे महत्त्वपूर्ण खोज है।
- लोथल का बन्दरगाह ही सिन्धु सभ्यता की सबसे बड़ी इमारती संरचना है।
- लोथल से वृत्ताकार या चतुर्भुजाकार आग्निवेदी पाई गई हैं ।
- लोथल का मिश्र एवं मेंसोपोटामिया के साथ सीधा व्यापार होता था।

धौलावीरा

- खोज जे.पी. जोशी द्वारा-(1967-68)में मनहर एवं मानसेहरा नदियों के बीच कादिर द्वीप पर की खोज की ।
- धौलावीरा एक आयताकार नगर था । जो तीन भागों में विभक्त था।
  धौलावीरा से जल-प्रबंधन के साक्ष्य

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ हैं यह एक सैंपल मात्र हैं / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी हे जो आपको **“राजस्थान पुलिस कांस्टेबल”** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास हैं

कि ये नोट्स आपकी **"राजस्थान पुलिस कांस्टेबल"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063 , 8504091672

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – 3

बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म

उदय के कारण

- छठी ई.पू. में वैदिक संस्कृति कर्मकाण्डों व आडम्बरों से ग्रसित हो गई।
- मध्य गंगा घाटी में इसी समय 62 सम्प्रदायों का उदय हुआ। उनमें जैन और बौद्ध सम्प्रदाय प्रमुख थी।

बौद्ध धर्म

- बौद्ध धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध थे।
  सिद्धार्थ-बचपन का नाम - सिद्धि प्राप्त करने के लिए जन्म लेने वाला।
- जन्म 563 ई.पू. –कपिलवस्तु के लुम्बिनी नामक स्थान पर हुआ था। (नेपाल)
- कुल- शाक्य (क्षत्रिय कुल)
- बुद्ध की माता – महामाया थी। उनकि मृत्यु के बाद पालन पोषण महाप्रजापति गौतमी ने किया था।
- पिता – शुद्धोधन शाक्य गण के मुखिया थे।
- 16 वर्ष की आयु में गौतम बुद्ध का विवाह- यशोधरा से हुआ इनके पुत्र का नाम राहुल था।

महाभिनिष्क्रमण

- 29 वर्ष की आयु में सांसारिक समस्याओं से व्यथित होकर गृहस्थ जीवन का त्याग कर दिया था।
- अनोमा नदी के तट पर सिर मुण्डन
- काषाय वस्त्र धारण किये।
- प्रथम गुरु आलार कलाम थे।
- सांख्य दर्शन के आचार्य
- बाद में उरुवेला (बोधगया) प्रस्थान

- यहाँ पांच साधक मिले।
- इनमें कौण्डिय प्रमुख थे ।

ज्ञान प्राप्ति –

- 35 वर्ष की आयु में – बोध गया में ज्ञान की प्राप्ति हुई।
- वैशाख पूर्णिमा को पीपल के वृक्ष के नीचे
  निरंजना नदी (पुनपुन) के तट पर ज्ञान की प्राप्ति हुई।
- इसी दिन से गौतम बुद्ध तथागत कहलाये तथा गौतम बुद्ध नाम भी यहीं से हुआ। वह स्थान बोधगया कहलाया। जिसने सत्य को प्राप्त कर लिया।

धर्मचक्र प्रवर्तन-

- बुद्ध ने प्रथम उपदेश सारनाथ (ऋषिपतनम) में दिया जिसे बौद्धग्रंथों में धर्मचक्रप्रवर्तन कहलाया।
- बोधगया से सारनाथ आये
- प्रथम उपदेश दिया-5 ब्राहमण सन्यासियों को
  मागधी भाषा में।
- गौतम बुद्ध का बौद्ध संघ में प्रवेश हुआ।
- सर्वप्रथम अनुयायी – तपस्स जाट शुद्र कालिक
- प्रिय शिष्य- आनन्द
  बौद्ध धर्म की प्रथम महिला भिक्षुणी - गौतमी (बुद्ध की मौसी)

अन्तिम उपदेश

- कुशीनारा में सुभच्छ को दिया
- हिरण्यवती नदी तट पर

महापरिनिर्वाण (मृत्यु)

- कुशीनारा में ५४३ ई.पू.
- ४० वर्ष की आयु में
- बुद्ध के अवशेष ८ भागों में डाले गये जहाँ स्तूप बनाये गये।

वैशाख पूर्णिमा का महत्व

- वैशाख पूर्णिमा को बुद्ध पूर्णिमा भी कहते हैं।
- गौतम बुद्ध का जन्म, ज्ञान प्राप्ति
- महापरिनिर्वाण - वैशाख पूर्णिमा को
  अपवाद - महाभिनिष्क्रमण
- गौतम बुद्ध में ३२ महापुरुषों के लक्षण बताये गये हैं।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

बुद्ध के प्रमुख वचन

- जीवन कष्टों से भरा है।
- लिप्सा तृष्णा का ही दूसरा रूप है।

बौद्ध धर्म के त्रिरत्न

- बुद्ध , धम्म , संघ

बुद्ध के चार आर्य सत्य

1. दुःख
2. दुःख समुदाय
3. दुःख निरोध (निवारण)

4. प्रतिपदा

- इन्ही का कालान्तर में विस्तार होकर ये अष्टांगिक मार्ग कहलाये।

अष्टांगिक मार्ग

1. सम्यक दृष्टि
2. सम्यक संकल्प
3. सम्यक वाणी
4. सम्यक कर्मान्त
5. सम्यक आजीव
6. सम्यक व्यायाम
7. सम्यक स्मृति
8. सम्यक समाधि

- समाधि मनुष्य के जीवन का परम लक्ष्य निर्वाण प्राप्ति।
- जीवन-मरण चक्र से मुक्ति

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

बुद्ध धर्म

- अनीश्वरवादी
- पुनर्जन्म में विश्वास
- अनात्मवादी धर्म

बौद्ध धर्म के प्रतीक

जन्म - कमल व साण्ड

गृहत्याग - घोड़ा

ज्ञान - पीपल (बोधि वृक्ष)

निर्वाण - पद-चिह्न

मृत्यु - स्तूप

- बौद्ध धर्म का सर्वाधिक विस्तार कोशल राज्य में हुआ था।
- बौद्ध धर्म के सर्वाधिक उपदेश श्रावस्ती में दिये गये।
- बौद्ध धर्म के प्रचार केन्द्र - मगध

बौद्ध संगीतियां

1. प्रथम बौद्ध संगीति 483 ई.पू. संरक्षक - अजातशत्रु था। राजगृह में रचना रची गयी। इसका अध्यक्ष महाकश्यप था सुत्तपिटक विनयपिटक
   (बुद्ध के उपदेश) (संघ के नियम)

2. द्वितीय बौद्ध संगीति 383 ई.पू. वैशाली में हुई थी संरक्षक - कालाशोक
   अध्यक्ष – सबाकामी था
   वैशाली में भिक्षुओं में मतभेद हो गया था।

3. तृतीय बौद्ध संगीति 255 ई.पू. पाटलिपुत्र में रचना रची गयी
   संरक्षक - अशोक
   अध्यक्ष मोगालिपुत्र तिस्स
   अभिधम्मपिटक
   (बुद्ध के दार्शनिक विचार)

चतुर्थ बौद्ध संगीति प्रथम शताब्दी ई. कुण्डलवन (कश्मीर) में हुई थी इस संगीति का

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी हे जो आपको **"राजस्थान पुलिस कांस्टेबल"** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे

*हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी "**राजस्थान पुलिस कांस्टेबल**" की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /*

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063 , 8504091672

अध्याय – 6

मौर्य काल (321-185 ई.पू.)

- शासन काल चतुर्थ शताब्दी ई.पू. से द्वितीय शताब्दी ई.पू. तक (321-185 ई.पू)
- स्थापना चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा आचार्य चाणक्य (विष्णुगुप्त) के सहयोग से। (मगध में) की।
- मौर्य शासन से पहले मगध पर नंद वंश के शासक धनानन्द का शासन था।
- मौर्य राजवंश ने लगभग 137 वर्ष तक भारत में राज किया।
- राजधानी पाटलिपुत्र (पटना)
- साम्राज्य 52 लाख वर्ग किलोमीटर तक फैला हुआ था।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

आचार्य चाणक्य

- जन्म तक्षशिला में (आचार्य)
- अन्य नाम विष्णुगुप्त, कौटिल्य
- चन्द्रगुप्त का प्रधानमंत्री तथा प्रधान पुरोहित आचार्य चाणक्य थे।
- पुराणों में चाणक्य को "द्विजर्षभ" कहा गया है जिसका मतलब है श्रेष्ठ ब्राह्मण
- चन्द्रगुप्त मौर्य की मृत्यु के बाद भी बिन्दुसार के समय भी प्रधानमंत्री बना रहा (कुछ समय के लिए)
- चाणक्य तक्षशिला विश्वविद्यालय में आचार्य रहे थे।

- इन्होंने अर्थशास्त्र नामक पुस्तक की रचना की।
- अर्थशास्त्र मौर्यकालीन साम्राज्य की राजव्यवस्था एवं शासन प्रणाली पर प्रकाश डालता है।
- अर्थशास्त्र में 15 अधिकरण तथा 180 प्रकरण हैं।

चन्द्रगुप्त मौर्य

- चन्द्रगुप्त मौर्य 322 ई.पू. धनानन्द को हरा कर मगध का शासक बना।
- इसने सिकंदर के उत्तराधिकारी सेल्यूकस को भी हराया था।
- सेल्युकस की पुत्री हेलन का विवाह चन्द्रगुप्त मौर्य के साथ हुआ।
- उपाधियां - पाटलिपुत्रक (पालिब्रोथस)
- भारत का मुक्तिदाता
- प्रथम भारतीय साम्राज्य का संस्थापक

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

मेगस्थनीज

- मेगस्थनीज सेल्युकस 'निकेटर' का राजदूत था।
- चन्द्रगुप्त के शासन काल में पाटलिपुत्र में कई वर्षों तक रुका।
- इसने 'इंडिका' नामक पुस्तक की रचना की जिससे मौर्यकालीन शासन व्यवस्था की जानकारी मिलती है।
- मेगस्थनीज भारत आने वाला प्रथम राजदूत था।
- जस्टिन-चन्द्रगुप्त की सेना को डाकुओं का गिरोह कहतें हैं।
- यूनानियों ने चन्द्रगुप्त को सेंड्रोकोट्स नाम दिया।
- चन्द्रगुप्त जैन धर्म का अनुयायी था।
- चन्द्रगुप्त के संरक्षण में प्रथम जैन संगीति पाटलिपुत्र में हुई थी।
- चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपना शासन अपने पुत्र बिन्दुसार को सौंप दिया था।

- फिर वह अपने गुरु भद्रबाहु के साथ श्रवणबेलगोला (मैसूर) चला गया।
- वहां पर उसने सलेखना विधि (अन्न-जल त्याग) द्वारा मृत्यु (297/298 ई.पू.) को प्राप्त किया।
- चन्द्रगुप्त मौर्य के लिए वृषल उपनाम मुद्राराक्षस नामक ग्रंथ में मिलता है।
- 'वृषल' शब्द का अर्थ है निम्न कुल। चन्द्रगुप्त मौर्य को ब्राह्मण साहित्य में शुद्र कुल, बौद्ध एवं जैन ग्रंथ में क्षत्रिय कुल तथा रोमिला थापर ने वैश्य कुल में उत्पन्न माना है

बिन्दुसार 298 ई.पू.

- अन्य नाम अमित्रघात था।
- इसने अपने साम्राज्य को सुरक्षित रखने में सफलता प्राप्त की।
- सीरिया के शासक एन्टीयोकस ने डायमेंकस को बिन्दुसार के दरबार में भेजा था।
- बिन्दुसार आजीवक सम्प्रदाय का अनुयायी था।

जैन ग्रथों में बिन्दुसार को सिंहसेन कहा

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

नोट – प्रिय पाठकों, यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी हे जो आपको **"राजस्थान पुलिस कांस्टेबल"** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें, हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **"राजस्थान पुलिस कांस्टेबल"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

मध्यकालीन भारत का इतिहास

अध्याय – 2

दिल्ली सल्तनत

(गुलाम वंश से लोदी वंश तक)

दिल्ली सल्तनत के क्रमानुसार पाँच वंश निम्नलिखित थे -

- 1.गुलाम वंश / मामलुक वंश (1206-1290)
- 2.खिलजी वंश (1290-1320)
- 3.तुगलक वंश (1320-1414)
- 4.सैय्यद वंश (1414-1451)
- 5.लोदी वंश (1451-1526)
- इनमें सें चार वंश मूलतः तुर्क थे जबकि अंतिम वंश लोदी वंश अफगान था।

गुलाम वंश के शासक –

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-1210 ई .तक)

- भारत में तुर्की राज्य /दिल्ली सल्तनत /मुस्लिम राज्य की स्थापना करने वाला शासक ऐबक ही था।
- गुलाम वंश की स्थापना कुतुबुद्दीन ऐबक ने 1206 ई. में की थी। इसने अपनी राजधानी लाहौर में बनाई।
- ऐबक का अर्थ होता है चंद्रमुखी।
- ऐबक के राजवंश को कुतुबी राजवंश के नाम से जन जाता है।
- मुहम्मद गौरी ने ऐबक को अमीर-ए-आखूर अस्तबलों का प्रधान के पद पर नियुक्त किया।
- 1192 ई .के तराईन के युद्ध में ऐबक ने गौरी की सहायता की।
- तराईन के द्वितीय युद्ध के बाद गौरी ने ऐबक को अपने मुख्य भारतीय प्रदेशों का सूबेदार नियुक्त किया।

- जून 1206 में राज्याभिषेक करवाया तथा सुल्तान की बजाय मलिक/सिपहसालार की उपाधि धारण की यह उपाधि इसे मुहम्मद गौरी ने दी थी।
- इसने अपने नाम के सिक्के भी नहीं चलाये एवं अपने नाम का खुतबा पढ़वाया)खुतबा एक रचना होती थी जो मौलवियों से सुल्तान शुक्रवार की रात को नजदीक की मस्जिद में अपनी प्रंशसा में पढ़वाते थे।(खुतबा शासक की संप्रभूता का सूचक होता था।
- ऐबक ने प्रारंभ इंद्रप्रस्थ दिल्ली के पास को सैनिक मुख्यालय बनाया तथा कुछ समय बाद यल्दौज तथा कुबाजा (मुहम्मद गौरी के दास) के संघर्ष को देखते हुए लाहौर को अपनी राजधानी बनाया।
- ऐबक ने यल्दौज पर आक्रमण कर गजनी पर अधिकार कर लिया, लेकिन गजनी की जनता यल्दौज के प्रति वफादार थी तथा 40 दिनों के बाद ऐबक ने गजनी छोड़ दिया।

ऐबक की मृत्यु –

- 1210 ई .में लाहौर में चौगान पोलो खेलते समय घोड़े से गिर जाने के कारण ऐबक की मौत हो गई। इसका मकबरा लाहौर में ही बनाया गया है।
- भारत में तुर्की राज्य का वास्तविक संस्थापक कुतुबुद्दीन ऐबक को मान जाता है।
- भारत में मुस्लिम राज्य का संस्थापक मुहम्मद गौरी को माना जाता है। स्वतंत्र मुस्लिम राज्य का संस्थापक कुतुबुद्दीन ऐबक को माना जाता है।
- कुत्तुबुद्दीन ऐबक के दरबार में हसन् निजामी एवं फख-ए-मुदब्बिर आदि प्रसिद्ध विद्वान थे।
- 'कुव्वत-उल-इस्लाम -''अढ़ाई दिन का झोंपड़ा बनवाया। तथा 'कुतुबमीनार 'का निर्माण कुतुबुद्दीन ऐबक ने शुरू करवाया और इल्तुतमिश ने पूरा किया। कुतुबमीनार शेख ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी की स्मृति में बनवाया गया है।
- कुतुबुद्दीन ऐबक को अपनी उदारता एवं दानी प्रवृति के कारण लाखबख्श (लाखों का दानी)कहा गया है।
- इतिहासकार मिन्हाज ने कुतुबुद्दीन ऐबक को उसकी दानशीलता के कारण हातिम द्वितीय की संज्ञा दी है।
- प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय को ध्वस्त करने वाला ऐबक का सहायक सेनानायक बख्तियार खिलजी था।

इल्तुतमिश (1210-1236 ई)

- मलिक शम्सुद्दीन इल्तुतमिश ऐबक का दामाद था, न कि उसका वंशज। इल्तुतमिश का शाब्दिक अर्थ राज्य का रक्षक स्वामी होता हैं।। उसका समानार्थक शब्द आलमगीर या जहाँगीर विश्व विजेता भी होता हैं।
- ऐबक की मृत्यु के समय इल्तुतमिश बंदायूँ यू.पी .का इक्तेदार था।
- इल्तुतमिश दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संस्थापक तथा प्रथम वैधानिक सुल्तान था। जिसने दिल्ली को अपने राजधानी बनाया ।
- इसने 1229 ई .में बगदाद के खलीफा अल-मुंतसिर-बिल्लाह से सुल्तान की उपाधि व खिलअत इजाजत प्राप्त की।
- इल्तुतमिश ने अपने नाम का खुतबा पढ़वाया तथा मानक सिक्कें टंका चलाया था। टंका चांदी का होता था)। टंका =48 जीतल(
- इल्तुतमिश यह पहला मुस्लिम शासक था जिसने सिक्कों पर टकसाल का नाम अंकित करवाया था।
- शहरों में इल्तुतमिश ने न्याय के लिये काजी, अमीर-ए-दाद जैसे अधिकारी नियुक्त किये।
- इल्तुतमिश ने अपने 40 तुर्की सरदारों को मिलाकर तुर्कान-ए-चहलगामी नामक प्रशासनिक संस्था की स्थापना की थी।

इक्ता प्रणाली का संस्थापक -

- इल्तुतमिश ने प्रशासन में इक्ता प्रथा को भी स्थापित किया। भारत में इक्ता प्रणाली का संस्थापक इल्तुतमिश ही था। इक्ता का अर्थ है – धन के स्थान पर तनख्वाह के रूप में भूमि प्रदान करना ।
- इसने दोआब गंगा-यमुना क्षेत्र में हिन्दुओं की शक्ति तोड़ने के लिए शम्सीतुर्की उच्च वर्ग सरदारों को ग्रामीण क्षेत्र में इक्तायें जागीर बांटी।
- 1226 में रणथंभौर पर आक्रमण
- 1227 में नागौर पर आक्रमण
- 1232 में मालवा पर आक्रमण - इस अभियान के दौरान इल्तुतमिश उज्जैन से विक्रमादित्य की मूर्ति उठाकर लाया था।

- 1235 में ग्वालियर का अभियान -इस अभियान के दौरान इल्तुतमिश ने अपने पुत्रों की बजाय पुत्री रजिया को उत्तराधिकारी घोषित किया।
- 1236 ई. में बामियान अफगानिस्तान पर आक्रमण। यह इल्तुतमिश का अंतिम अभियान था।
- इल्तुतमिश पहला तुर्क सुल्तान था जिसने शुद्ध अरबी सिक्के चलाये।
- इल्तुतमिश के दरबार में मिन्हाज-उस-सिराज मलिक दाजुद्दीन को संरक्षण मिला।
- अजमेर की मस्जिद का निर्माण इल्तुतमिश ने करवाया था।
- इल्तुतमिश से सम्बन्धित 'हश्म-ए-कल्ब 'या कल्ब-ए-सुल्तानी सुल्तान द्वारा स्थापित सेना को कहा जाता था।
- इल्तुतमिश को भारत में गुम्बद निर्माण का पिता कह जाता है उसने सुल्तानगढ़ी का निर्माण करवाया।

निर्माण कार्य-

- स्थापत्य कला के अन्तर्गत इल्तुतमिश ने कुतुबुद्दीन ऐबक के निर्माण कार्य कुतुबमीनार को पूरा करवाया। भारत में सम्भवतः पहला मकबरा निर्मित करवाने का श्रेय भी इल्तुतमिश को दिया जाता है।
- इल्तुतमिश ने बदायूं की जामा मस्जिद एवं नागौर में अतारकिन के दरवाजा का निर्माण करवाया। उसने दिल्ली में एक विद्यालय की स्थापना की।

मृत्यु -

बयाना पर आक्रमण करने के लिए जाते समय मार्ग में इल्तुतमिश बीमार हो गया। इसके बाद इल्तुतमिश की बीमारी बढ़ती

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी हे जो आपको **"राजस्थान पुलिस कांस्टेबल"** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है

कि ये नोट्स आपकी **"राजस्थान पुलिस कांस्टेबल"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063 , 8504091672

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

लोदी वंश के शासक

1. बहलोल लोदी (1451 - 1489 ई.)
2 सिकंदर लोदी (1489 - 1517 ई.)
3. इब्राहिम लोदी (1517 - 1526 ई.)

बहलोल लोदी (1451 - 1489 ई.)

- बहलोल लोदी ने 1451 ई. में लोदी राजवंश की स्थापना की और 1489 ई. तक दिल्ली सल्तनत पर शासन किया।
- सैय्यद वंश के अंतिम शासक आलमशाह ने बहलोल लोदी के पक्ष में दिल्ली सल्तनत के सिहासन पर स्वेच्छा से त्याग दिया था।
- बहलोल लोदी अफगान मूल का था।
- बहलोल लोदी ने दिल्ली सल्तनत में बैठने के बाद "बहलोल शाह गाजी" की उपाधि ली। उसने सरहिन्द के एक हिन्दू सुनार की बेटी से शादी की।
- दिल्ली पर प्रथम अफगान राज्य की स्थापना का श्रेय बहलोल लोदी को दिया जाता है।
- बहलोल लोदी ने बहलोल सिक्के का प्रचलन करवाया था।
- बहलोल लोदी अपने सरदारों को मकसद-ए- अली कहकर पुकारता था।
- बहलोल लोदी की 1489 ई में मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु के बाद, उसका पुत्र सिकंदर लोदी दिल्ली सल्तनत के सिहासन पर बैठा।
- बहलोल लोदी राजदरबार में सिहासन पर न बैठकर दरबारियों के बीच बैठता था।

सिकंदर लोदी (1489 - 1517 ई.)

- 1489 ई. में बहलोल लोदी की मृत्यु के बाद सिकंदर लोदी दिल्ली सल्तनत का उत्तराधिकारी हो गए और लोदी राजवंश का दूसरा शासक बना।
- उसके बचपन का नाम निजाम खान था, लेकिन सत्ता सम्भालने के बाद उसने अपना नाम "सुल्तान सिकंदर शाह" रख दिया जो बाद में सिकंदर लोदी के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

- सिकंदर लोदी ने 1489 ई. से 1517 ई. तक दिल्ली सल्तनत पर शासन किया। सिकंदर लोदी, बहलोल लोदी का दूसरा पुत्र था और बारबक शाह, बहलोल लोदी का सबसे बड़ा पुत्र था, जो जौनपुर का वायसराय था।
- 1494 ई. तक इसने सम्पूर्ण बिहार को जीत लिया। इसने पूर्वी राजस्थान के राजपूत राज्यों पर भी आक्रमण किया तथा धौलपुर, नरवर, मंदरेल, चंदेरी, नागौर, उतागिरी को जीत लिया।
- इन राजपूत राज्यों पर नियंत्रण स्थापित करने के लिये 1504 ई. में सिकंदर लोदी ने आगरा शहर को बसाया । तथा उसे अपनी राजधानी बनाया तथा यहाँ पर बादलगढ़ का किला बनाया।
- 1506 ई. में आगरा को अपनी राजधानी बनाया। सिकंदर लोदी ने ग्वालियर पर भी आक्रमण किया तथा कर वसूला लेकिन सल्तनत में नहीं मिला पाया।
- इसने कृषि व वाणिज्य व्यापार के विकास के लिये कदम उठाये। कृषि उत्पादन को बढ़ावा देने के लिये अनाज से जकात नामक कर हटाया।
- राज्य में कठोर कानून व्यवस्था के माध्यम से व्यापारियों को संरक्षण दिया। इसने भूमि की पैमाइश करवाई इसके लिये गज-ए-सिकंदरी (30 इंच) को पैमाना बनाया।
- सिकंदर लोदी ने मोहरम मनाने पर पाबंदी लगाई।
- सिकंदर लोदी के आदेश पर आयुर्वेद के संस्कृत ग्रंथ का फारसी में फरहंग-ए-सिकंदरी के नाम से अनुवाद किया गया।
- इसी के काल में फारसी भाषा में संगीत पर लज्जत-ए-सिकंदरी नाम से ग्रंथ लिखा गया। कबीर इसका समकालीन था।
- 'गुलरुखी' शीर्षक से फारसी कविताएँ लिखने वाला सुल्तान सिकंदर लोदी था ।
- सिकंदर लोदी ने नगरकोट के ज्वालामुखी मन्दिर की मूर्ति को तोड़कर उसके टुकड़ों को कसाइयों को मांस तौलने के लिए दे दिया था ।
- सिकंदर लोदी ने मुसलमानों को ताजिया निकलने पर एवं मुसलमान स्त्रियों को पीरों तथा संतों के मजार पर जाने पर रोक लगा दी थी ।
- दिल्ली की मोठ मस्जिद सिकंदर लोदी के प्रधान मंत्री वजीर मियां भोइया ने 1505 में बनवाई थी ।

इब्राहिम लोदी (1517- 1526 ई.)

- इब्राहीम लोदी, सिकंदर लोदी का सबसे छोटा बेटा था। सिकंदर लोदी की मृत्यु के बाद इब्राहिम लोदी 1517 ई. में राजगद्दी पर बैठा और 1526 ई. तक दिल्ली सल्तनत पर शासन किया। वह लोदी राजवंश का अंतिम राजा और दिल्ली सल्तनत का अंतिम सुल्तान था।
- 1517-18 ई में इब्राहीम लोदी खतौंनी (बूंदी) के युद्ध में राणा सांगा से पराजित हुआ।

तुजुक-ए-बाबरी (बाबर की आत्मकथा) के अनुसार दौलत खाँ लोदी आलम खाँ तथा सांगा के दूत बाबर से

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी हे जो आपको **"राजस्थान पुलिस कांस्टेबल"** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **"राजस्थान पुलिस कांस्टेबल"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063 , 8504091672

अध्याय – 6

मुग़ल साम्राज्य (1526-1707)

- पानीपत के मैदान में 21 अप्रैल, 1526 को इब्राहिम लोदी और चुगताई तुर्क जलालुद्दीन बाबर के बीच युद्ध लड़ा गया।
- लोदी वंश के अंतिम शासक इब्राहिम लोदी को पराजित कर खानाबदोश बाबर ने तीन शताब्दियों से सत्तारूढ़ तुर्क अफगानी सुल्तानों की- दिल्ली सल्तनत का तख्ता पलट कर दिया।
- बाबर ने मुग़ल साम्राज्य और मुग़ल सल्तनत की नींव रखी।
- मुगल वंश का संस्थापक बाबर था, अधिकतर मुगल शासक तुर्क और सुन्नी मुसलमान थे मुगल शासन 17 वीं शताब्दी के आखिर में और 18 वीं शताब्दी की शुरुआत तक चला और 19 वीं शताब्दी के मध्य में समाप्त हुआ।
- बाबर का जन्म छोटी सी रियासत 'फरगना में 1483 ई. में हुआ था। जो फ़िलहाल उज़्बेकिस्तान का हिस्सा है।
- बाबर अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् मात्र 11 वर्ष की आयु में ही फरगना का शासक बन गया था। बाबर को भारत आने का निमंत्रण पंजाब के सूबेदार दौलत खाँ लोदी और इब्राहिम लोदी के चाचा आलम खाँ लोदी ने भेजा था।
- पानीपत का प्रथम युद्ध 21 अप्रैल, 1526 ई. को इब्राहिम लोदी और बाबर के बीच हुआ. जिसमें बाबर की जीत हुई
- खनवा का युद्ध 17 मार्च 1527 ई में राणा सांगा और बाबर के बीच हुआ, जिसमें बाबर की जीत हुई
- चंदेरी का युद्ध 29 मार्च 1528 ई में मेंदनी राय और बाबर के बीच हुआ, जिसमें बाबर की जीत हुई
- घाघरा का युद्ध 6 मई 1529 ई में अफगानो और बाबर के बीच हुआ, जिसमें बाबर की जीत हुई

नोट -पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर ने पहली बार तुलुगमा युद्ध नीति का इस्तेमाल किया था। उस्ताद अली एवं मुस्तफा बाबर के दो प्रसिद्ध निशानेबाज थे। जिसने पानीपत के प्रथम युद्ध में भाग लिया था।

- पानीपत का प्रथम युद्ध बाबर का भारत पर उसके द्वारा किया गया पांचवा आक्रमण था, जिसमें उसने इब्राहिम लोदी को हराकर विजय प्राप्त की थी और मुग़ल साम्राज्य की स्थापना की थी।
- बाबर की विजय का मुख्य कारण उसका तोपखाना और कुशल सेना प्रतिनिधित्व था। भारत में तोप का सर्वप्रथम प्रयोग बाबर ने ही किया था।
- पानीपत के इस प्रथम युद्ध में बाबर ने उज्बेकों की 'तुलगमा युद्ध पद्धति तथा तोपों को सजाने के लिये' उस्मानी विधि जिसे 'रूमी विधि' भी कहा जाता है, का प्रयोग किया था।
- पानीपत के युद्ध में विजय की खुशी में बाबर ने काबुल के प्रत्येक निवासी को एक चाँदी का सिक्का दान में दिया था। अपनी इसी उदारता के कारण बाबर को 'कलन्दर' भी कहा जाता था।

बाबर ने दिल्ली सल्तनत के पतन के पश्चात् उनके शासकों को 'सुल्तान' कहे जाने की परम्परा को तोड़कर अपने आपको

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी हे जो आपको **"राजस्थान पुलिस कांस्टेबल"** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **"राजस्थान पुलिस कांस्टेबल"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063 , 8504091672

औरंगजेब (1658-1707 ई.)

- औरंगजेब का जन्म 3 नवंबर 1618 को उज्जैन के निकट दोहन नामक स्थान पर हुआ था ।
- उत्तराधिकार के युद्ध में विजय होने के बाद औरंगजेब 21 जुलाई 1658 को मुग़ल साम्राज्य की गद्दी पर आसीन हुआ ।
- औरंगजेब ने 1661 ई. में मीर जुमला को बंगाल का सूबेदार नियुक्त किया जिसने कूच बिहार की राजधानी को अहोमो से जीत लिया।
- औरंगजेब के गुरु मीर मुहम्मद हकीम थे ।
- औरंगजेब सुन्नी धर्म को मनाता था उसे जिन्दा पीर कहा जाता था ।
- 1633 में मीर जुमला की मृत्यु के बाद औरंगजेब ने शाइस्ता खाँ को बंगाल का गवर्नर नियुक्त किया।
- औरंगजेब शाहजहाँ के काल में 1636 ई.से 1644 ई तक दक्षिण के सूबेदार के रुप में रहा । औरंगाबाद मुगलों की दक्षिण सूबे की राजधानी थी।
- शासक बनने के बाद औरंगजेब के दक्षिण में लड़े गए युद्धों को दो भागों में बाँटा जा सकता है - बीजापुर तथा गोलकुंडा के विरुद्ध युद्ध और मराठों के साथ युद्ध।
- औरंगजेब ने 1665 ई. में राजा जयसिंह को बीजापुर शिवाजी का दमन करने के लिए भेजा।
- जयसिंह एवं शिवाजी के बीच पुरन्दर की संधि 22 जून 1665 ई. को संपन्न हुई ।

- पुरंदर की संधि के अनुसार शिवाजी को अपने 23 किले मुगलों को सौंपने पड़े तथा बीजापुर के खिलाफ मुगलों की सहायता करने का वचन देना पड़ा।

- शिवाजी की मृत्यु के बाद उनके पुत्र संभाजी ने मुगलों से संघर्ष जारी रखा किंतु 1689 ई में उसकी पकड़ कर हत्या कर दी गई।
- संभाजी की मृत्यु के बाद सौतेले भाई राजाराम ने भी मुगलों से संघर्ष जारी रखा, जिसे मराठा इतिहास में स्वतंत्रता संग्राम के नाम से जाना जाता है।

- मारवाड़ और मुगलों के बीच हुए इस तीस वर्षीय युद्ध (1679 – 1709 ई.) का नायक दुर्गादास था, जिसे कर्नल टॉड ने यूलिसिस' कहा है।
- औरंगजेब ने सिक्खों के नवें गुरु तेग बहादूर की हत्या करवा दी।

- औरंगजेब के समय हुए कुछ प्रमुख विद्रोह में अफगान विद्रोह (1667-1672), जाट विद्रोह (1669-1681), सतनामी विद्रोह (1672), बुंदेला विद्रोह (1661-1707), अकबर द्वितीय का विद्रोह (1681), अंग्रेजो का विद्रोह (1686), राजपूत विद्रोह (1679-1709) और सिक्ख विद्रोह (1607-1675 ई.) शामिल थे।
- औरंगजेब एक कट्टर सुन्नी मुसलमान था। उसका प्रमुख लक्ष्य भारत में दार-उल-हर्ष के स्थान पर दार-उल इस्लाम की स्थापना करना था।
- औरंगजेब ने 1663 ई.में सती प्रथा पर प्रतिबंध लगाया तथा हिन्दुओं पर तीर्थ यात्रा कर लगाया।
- औरंगजेब ने 1668 ई.में हिन्दू त्यौहारों और उत्सवों को मनायें जाने पर रोक लगा दी।
- औरंगजेब के आदेश द्वारा 1669 ई. में काशी विश्वनाथ मंदिर, मथुरा का केशवराय मंदिर तथा गुजरात का सोमनाथ मंदिर को तोड़ा गया।

औरंगजेब ने 1679 ई में हिन्दुओं पर जजिया कर पुनः आरोपित

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी हे जो आपको **"राजस्थान पुलिस कांस्टेबल"** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **"राजस्थान पुलिस कांस्टेबल"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063 , 8504091672

आधुनिक भारत का इतिहास

अध्याय – I

यूरोपीय कम्पनियों का आगमन

भारत में आने वाली यूरोपीय कम्पनियों का क्रम

पुर्तगालीडचब्रिटिशडेनिशफ्रांसीसीस्वीडस

वास्कोडिगामा

- यूरोपीय शक्तियों में पुर्तगाली कम्पनी ने भारत में सबसे पहले प्रवेश किया। भारत में आने के लिए इन्होंने नए समुद्री मार्ग की खोज की।
- पुर्तगाली व्यापारी वास्कोडिगामा ने 17 मई 1498 में भारत के पश्चिमी तट पर अवस्थित बंदरगाह कालीकट पहुँच कर की।
- बन्दरगाह पर कथडाबू नामक स्थान पर पहुंचा। वास्कोडिगामा का स्वागत कालीकट के शासक जमोरिन ने किया।
- नोट :- पेड्रो अब्रेज केब्रोल भारत पहुंचने वाला दूसरा पुर्तगाली था।
- 1502 ई. में वास्कोडिगामा पुनः भारत आया था।
- पुर्तगाली:- 1503 में पुर्तगालियों ने अपनी पहली फैक्ट्री कोचीन में स्थापित की थी।
- दूसरी फैक्ट्री की स्थापना 1505 ई. में कन्नूर में की गई।

फ्रांसिस्को डी. अल्मोड़ा [1505 - 1509]

- फ्रांसिस्को डी. अल्मोड़ा भारत में प्रथम पुर्तगाली गवर्नर/वायसराय बनकर आया था।
- इसने 1509 में मिस्त्र, तुर्की व गुजरात की संयुक्त सेना को पराजित कर दीव पर अधिकार कर लिया। इसे पुर्तगाली सरकार ने आदेश दिया था की यह भारत में ऐसे दुर्ग का निर्माण करे जिनका उद्देश्ये बस केवल सुरक्षा न होकर हिन्द महासागर के व्यापार पर पुर्तगाली नियत्रण स्थापित करना भी हो (उसके द्वारा अपनाई निति **नीले या शांत जल की निति** कहलाई)

- यह पॉलिसी हिन्द महासागर के व्यापार पर पुर्तगीज नियंत्रण स्थापित करने के लिए अल्मेड़ा ने शुरु की थी।
- पुर्तगाल की राजधानी –लिसवन

अल्फांसो डी० अल्बुकर्क (1509 - 1515)

- भारत में पुर्तगाली शक्ति की वास्तविक नींव डालने वाला अल्फांसो डी. अल्बुकर्क था।
- जो सर्वप्रथम 1509 ई. में भारत आया और उसी समय (1509 ईस्वी) उसने कोचीन में पुर्तगालियों के प्रथम - दुर्ग का निर्माण करवाया।
- 1509 ई० में अल्बुकर्क भारत में पुर्तगालियों का गवर्नर नियुक्त हुआ।
- 1510 ई० पुर्तगालियों ने गोवा के बन्दरगाह पर अधिकार कर लिया, जो उस समय बीजापुर के यूसुफ आदिल शाह सुल्तान के अधीन था।
- 1511 ई० में अल्बुकर्क ने मलक्का और 1515 ई० में फारस की खाड़ी में अवस्थित हरमुज बन्दरगाह पर अधिकार कर लिया।
- अल्बुकर्क ने अपने क्षेत्र में सती प्रथा बन्द करवा दी।
- अल्बुकर्क राजाराम मोहन राय का पूर्व गामी था।
- पुर्तगीजों को भारतीय स्त्रियों से विवाह के लिए अल्बुकर्क ने प्रोत्साहित किया।
- अल्बुकर्क ने पुर्तगीज सेना में भारतीयों की भर्ती प्रारम्भ की।

निन्हो डी० कुन्हा (1529-1538)

- अल्बुकर्क के बाद दूसरा महत्वपूर्ण पुर्तगाली गवर्नर निन्हों डी० कुन्हा था। जिसने 1529 ई. में भारत में कार्य भार ग्रहण किया।
- कुन्हा ने 1530 ई. में शासन का प्रमुख केन्द्र कोचीन के स्थान पर गोवा को बनाया।
- कुन्हा ने दमन, सालसेट, चौल, बम्बई सेन्टटॉमस, मद्रास और हुगली में पुनः अपने केन्द्र स्थापित किये।
- कुन्हा ने हुगली और सेंट टोमें मद्रास के पास पुर्तगाली बस्तियों को स्थापित किया।
- भारत में प्रथम पादरी फ्रांसिस्को जेवियर का आगमन पुर्तगाली गवर्नर मार्टिन डिसूजा 1542-1545 के समय हुआ।

- मुग़ल शासक अकबर के दरबार में दो पुर्तगाली इसाई पादरियों मोंसरेट तथा फादर एकाबिवा का आगमन हुआ।
- भारत में तंबाकू की खेती जहाज निर्माण तथा प्रिंटिग प्रेस की शुरुआत पुर्तगालियों के आगमन के पश्चात्य हुई।
- पुर्तगालियों ने ही सन् 1556 में प्रथम प्रिंटिग प्रेस की स्थापना की।
- 1661 ई० में तत्कालीन ब्रिटिश सम्राट (अंग्रेज) चार्ल्स द्वितीय ने पुर्तगाली राजकुमारी कैथरीन से विवाह कर लिया और पुर्तगालियों ने चार्ल्स द्वितीय को मुम्बई द्वीप दहेज में दे दिया।
- बंगाल के शासक 'मसूद शाह' द्वारा पुर्तगालियों को चटगाँव और सतगाँव में व्यापारिक कम्पनियाँ खोलने की अनुमति दी गई।
- अकबर' की अनुमति से हुगली में कम्पनी की स्थापना की गई।
- शाहजहाँ ने पुर्तगालियों के अधिकार से 'हुगली' को छीन लिया था।
- कार्टज आर्मेडा काफिला व्यवस्था :- यह समुद्री व्यापार पर नियंत्रण व्यवस्था थी। इसके अन्तर्गत कोई भी भारतीय या अरबी जहाज बिना 'परमिट' लिये अरब सागर में नहीं जा सकता था।
- इन जहाजों में काली मिर्च व गोला बारूद ले जाना मना था।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

पुर्तगालियों की भारत को देन

- मध्य अमेरिका से तम्बाकू, मूंगफली, आलू, मक्का,पपीता और अमरुद का भारत में प्रवेश पुर्तगालियों ने कराया।
- बादाम, लीची, संतरा, अनानास एवं काजू का प्रवेश अन्य देशों से भारत में पुर्तगालियों के माध्यम से हुआ।

जहाज निर्माण तथा प्रिंटिग प्रेस (1556 ई०) की स्थापना भारत में पुर्तगालियों ने

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **"राजस्थान पुलिस कांस्टेबल"** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है

कि ये नोट्स आपकी **"राजस्थान पुलिस कांस्टेबल"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063 , 8504091672

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – 3

1857 की क्रांति से पूर्व के जन आंदोलन

राजनीतिक – धार्मिक आंदोलन

फकीर विद्रोह (1776–77)

- यह विद्रोह बंगाल में विचरणशील मुसलमान धार्मिक फकीरों द्वारा किया गया था।
- इस विद्रोह के नेता मजनू शाह ने अंगेजी सत्ता को चुनौती देते हुए जमीदारों और किसानों से धन इक्कठा करना आरम्भ कर दिया।
- मजनू शाह की मृत्यु के बाद चिराग अली शाह ने आंदोलन को नेतृत्व प्रदान किया।

सन्यासी विद्रोह (1770 – 1820)

- संन्यासी विद्रोह भारत की आजादी के लिए बंगाल में अंग्रेज़ हुकूमत के विरुद्ध किया गया एक प्रबल विद्रोह था।
- संन्यासियों में अधिकांश शंकराचार्य के अनुयायी थे।
- इतिहास प्रसिद्ध इस विद्रोह की स्पष्ट जानकारी बंकिमचंद्र चटर्जी के उपन्यास 'आनन्दमठ' में मिलती है।

पागलपंथी विद्रोह (1813 - 33)

- उत्तर-पूर्वी भारत में प्रभावी पागलपंथी एक धार्मिक पंथ था।
- उत्तर-पर्वी क्षेत्र में हिन्दू मुसलमान और गारो तथा जांग आदिवासी इस पंथ के समर्थक थे।
- इस क्षेत्र में अंग्रेजों द्वारा क्रियान्वित भू-राजस्व तथा प्रशासनिक व्यवस्था के कारण व्यापक असंतोष था।
- इस विद्रोह को 1833 ई. में दबा दिया गया।

वहाबी आंदोलन (1820 – 70)

- वहाबी आंदोलन मूलतः एक इस्लामिक सुधारवादी आंदोलन था। जिसने कालांतर में मुस्लिम समाज में व्याप्त अन्धविश्वास एवं कुरुतियों के उन्मूलन को अपना उद्देश्य बनाया।
- इस आंदोलन के संस्थापक अब्दुल वहाब के नाम पर इसका नाम वहाँबी आंदोलन पड़ा।
- सैय्यद अहमद बरेलवी ने भारत में इस आंदोलन को प्रेरणा प्रदान की।

कूका विद्रोह

- कूका विद्रोह की शुरुआत पंजाब में 1860-1870 ई. में हुई थी।
- पश्चिमी पंजाब में 'कूका विद्रोह' की शुरुआत लगभग 1840 ई. में 'भगत जवाहर मल' द्वारा की गयी थी।
- भगत जवाहर मल को 'सियान साहब' के नाम से भी जाना जाता था।
- 1872 ई. में इसके एक नेता 'रामसिंह' को रंगून निर्वासित कर दिया और आंदोलन पर नियन्त्रण पा लिया गया।

समोसी विद्रोह

- समोसी मराठा राज्य के अधीनस्थ कर्मचारी थे। अत्यधिक लगान वसूली के कारण 1822 में उन्होंने विद्रोह कर दिया।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

गडकरी विद्रोह

- गडकरी विद्रोह अंग्रेजों के खिलाफ किया गया था।
- 1844 ई. में महाराष्ट्र में 'गड़करी जाति' के विस्थापित सैनिकों ने अंग्रेजों के विरुद्ध इस विद्रोह को अंजाम दिया।

सावंतवादी विद्रोह

- प्रवासीवादी विद्रोह: प्रवासीवादी विद्रोह भारतीयों द्वारा अंग्रेजों के खिलाफ शुरू किया गया था।
- प्रवासीवादी विद्रोह 1844 में हुआ था।
- प्रवासीवादी विद्रोह का नेतृत्व मराठा सरदार फोंडावंत ने किया था।

मुंडा एवं हो विद्रोह (1820-22)

- यह छोटा नागपुर एवं सिंह भूमि जिला से अंग्रेजों द्वारा मुंडा एवं हो जनजातियों को उनकी भूमि से बेदखल किए जाने से इस विद्रोह की नींव पड़ी। हो जनजाति ने 1820 -22 ईस्वी तक और 1831 ईस्वी में अंग्रेजी सेना का विद्रोह किया।

कोल विद्रोह (1831)

- 1831 में छोटा नागपुर में यह कोल विद्रोह हुआ
- इस विद्रोह का प्रमुख कारण कोल आदिवासियों की जमीन छीनकर मुस्लिम और सिख संप्रदाय के किसानों को दे दी इस विद्रोह में गंगा नारायण और बुद्धो भगत ने भूमिका निभाई।
- यह विद्रोह मुख्य रूप से रांची हजारीबाग पलामू मानभूम और सिंह भूमि क्षेत्र में फैला`।

संथाल विद्रोह (1855)

- सन् 1855 ईस्वी में जमींदार और साहूकारों के अत्याचार और भूमि कर अधिकारियों के दमनात्मक व्यवहार के प्रति सिद्धू एवं कान्हू के नेतृत्व में राजमहल एवं भागलपुर के संस्थान आदिवासियों ने विद्रोह कर दिया।

चुआर विद्रोह (1798)

- दुर्जन सिंह तथा जगन्नाथ के नेतृत्व में बंगाल के मिदनापुर जिलें में 1798 ईस्वी में यह विद्रोह हुआ।
- इस विद्रोह का मुख्य कारण भूमि कर एवं अकाल के कारण उत्पन्न आर्थिक संकट था इस विद्रोह में यह विद्रोह रुक-रुक कर 30 वर्षों तक चला।

खासी विद्रोह

- भारत के उत्तरी पूर्वी क्षेत्र में जब अंग्रेजों ने खासी की पहाड़ियों से लेकर सिलहट के बीच सड़क मार्ग बनाना प्रारंभ किया तो स्थानीय लोगों ने इसे ब्रिटिश राज्य का उनकी स्वतंत्रता पर हस्तक्षेप मानते हुए विद्रोह किया।

अहोम आदिवासी विद्रोह (1828)

यह ब्रिटिश सरकार ने 1828 ईस्वी में असम राज्य के अहोम प्रदेश को ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाने का प्रयत्न किया

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी हे जो आपको **"राजस्थान पुलिस कांस्टेबल"** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **"राजस्थान पुलिस कांस्टेबल"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063 , 8504091672

संस्कृति के कुछ महत्त्वपूर्ण विषय

अध्याय – I

भारत के प्रमुख शास्त्रीय नृत्य, लोकनृत्य

शास्त्रीय नृत्य	सम्बन्धित राज्य	प्रमुख नर्तक
भरतनाट्यम	तमिलनाडु	यामिनी कृष्णामूर्ति , टी बाला सरस्वती , रुक्मिणी देवी , सोनल मानसिह , मृणालिनी साराभाई , वैजयन्ती माला , हेमामालिनी
कथकली	केरल	मृणालिनी साराभाई , गुरु शंकरन , नम्बूद्रीपाद , शंकर कुरुप , के सी पणिक्कर
मोहिनीअट्टम	केरल	भारती शिवाजी , तंकमणि शांताराव
कुचिपुड़ी	आन्ध्र प्रदेश	यामिनी कृष्णमूर्ति , राधा रेड्डी , राजा रेड्डी , स्वप्न सुन्दरी
कत्थक	उत्तर प्रदेश तथा राजस्थान	बिरजू महाराज , अच्छन महाराज , गोपीकृष्ण , सितारा देवी , रोशन कुमारी , उमा शर्मा
ओडिसी	ओडिशा	प्रोतिमा देवी , संयुक्ता पाणिग्रही , सोनल मानसिह , केलुचरण महापात्र , माधवी मुद्गल
मणिपुरी	मणिपुर	सूर्यमुखी देवी , गुरु विपिन सिह

भारत के प्रमुख लोकनृत्य

राज्य	लोकनृत्य

असम	बिहू, खेलगोपाल , कलिगोपाल , बोई साजू , नटपूजा मीटू ।
पंजाब	कीकली , भाँगड़ा , गिद्दा
हिमाचल प्रदेश	जद्दा , नाटी , चम्बा , छपेली
हरियाणा	धमाल , खोरिया , फाग , डाहीकल
महाराष्ट्र	लेजिम , तमाशा , लावनी , कोली
जम्मू - कश्मीर	दमाली , हिकात , दण्डी नाच , राऊ , लडाखी
राजस्थान	गणगौर , झूमर , घूमर , झूलन लीला
गुजरात	गरबा , डाण्डिया रास , पणिहारी , रासलीला , लारया , गणपति भजन
बिहार	जट - जाटिन , घुमकड़िया , कीर्तनिया , पंवारियाँ , सोहराई , सामा , चकेवा , जात्रा
उत्तर प्रदेश	डांगा , झींका , छाऊ , लुझरी , झोरा , कजरी , नौटंकी , थाली , जद्दा
केरल	भद्रकली , पायदानी , कुड़ीअट्टम , कालीअट्टम , मोहिनीअट्टम
पश्चिम बंगाल	करणकाठी , गम्भीरा , जलाया , बाउल नृत्य , कथि , जात्रा
नागालैण्ड	कुमीनागा , रैंगमनागा , लिम , चोंग , युद्ध नृत्य , खेवा
मणिपुर	संकीर्तन , लाईहरीबा , थांगटा की तलम , बसन्तराम , राखाल
मिजोरम	चेरोकान , पाखुलिया नृत्य
झारखण्ड	सुआ , पंथी , राउत , कर्मा , फुलकी डोरला , सरहुल , पाइका , नटुआ , छऊ

ओडिशा	अग्नि , डंडानट , पैका , जदूर , मुदारी , आया , सवारी , छाऊ
उत्तराखण्ड	चांचरी / झोड़ा , छपेली , छोलिया , झुमैलो , जागर , कुमायूँ नृत्य
कर्नाटक	यक्षगान , भूतकोला , वीरगास्से , कोडावा
आन्ध्र प्रदेश	घण्टामर्दाला , बतकम्मा , कुम्मी , छड़ी , सिद्धि माधुरी
छत्तीसगढ़	सुआ करमा , रहस , राउत , सरहुल , बार , नाचा , घसिया बाजा , पंथी
तमिलनाडु	कोलट्टम , कुम्मी कारागम्
उत्तराखण्ड	जागर , चौंफला , छपेली , छोलिया

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी हे जो आपको **"राजस्थान पुलिस कांस्टेबल"** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **"राजस्थान पुलिस कांस्टेबल"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063 , 8504091672

अध्याय – 4

भारतीय चित्रकला

भारतीय चित्रकारी के प्रारंभिक उदाहरण प्रागैतिहासिक काल के हैं, जब मानव गुफाओं की दीवारों पर चित्रकारी किया करता था। भीमबेटका की गुफाओं में की गई चित्रकारी 5500 ई.पू. से भी ज्यादा पुरानी है। 7वीं शताब्दी में अजंता और एलोरा गुफाओं की चित्रकारी भारतीय चित्रकारी का सर्वोत्तम उदाहरण है।

भारतीय चित्रकारी में भारतीय संस्कृति की भांति ही प्राचीनकाल से लेकर आज तक एक विशेष प्रकार की एकता के दर्शन होते हैं। प्राचीन व मध्यकाल के दौरान भारतीय चित्रकारी मुख्य रूप से धार्मिक भावना से प्रेरित थी, लेकिन आधुनिक काल तक आते-आते यह काफी हद तक लौकिक जीवन का निरुपण करती है। आज भारतीय चित्रकारी लोकजीवन के विषय उठाकर उन्हें मूर्त कर रही है।

भारतीय चित्रकारी की शैलियाँ

भारतीय चित्रकारी को मोटे तौर पर भित्ति चित्र व लघु चित्रकारी में विभाजित किया जा सकता है।

गुफाओं की दीवारों पर की जाने वाली चित्रकारी कहते हैं, उदाहरण के लिए अजंता की गुफाओं व एलोरा के कैलाशनाथ मंदिर का नाम लिया जा सकता है। दक्षिण भारत के बादामी व सित्तानवसाल में भी भित्ति चित्रों के सुंदर उदाहरण पाये गये हैं। लघु चित्रकारी कागज या कपड़े पर छोटे स्तर पर की जाती है। बंगाल के पाल शासकों को लघु चित्रकारी की शुरुआत का श्रेय दिया जाता है।

भित्ति चित्र

- चित्रकला कला के सर्वाधिक कोमल रूपों में से एक है जो रेखा और वर्ण के माध्यम से विचारों तथा भावों को अभिव्यक्ति देती है । इतिहास का उदय होने से पूर्व कई हजार वर्षों

तक जब मनुष्य मात्र गुफा में रहा करता था, उसने अपनी सौन्दर्यपरक अतिसंवेदनशीलता और सृजनात्मक प्रेरणा को संतुष्ट करने के लिए शैलाश्रय चित्र बनाए।

- भारतीयों में वर्ण और अभिकल्प के प्रति लगाव इतना गहरा है कि प्राचीनकाल में भी इन्होंने इतिहास के समय के दौरान चित्रकलाओं तथा रेखाचित्रों का सृजन किया जिसका हमारे पास कोई प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं हैं।
- भारतीय चित्रकला के साक्ष्य मध्य भारत की कैमूर श्रृंखला, विंध्य पहाडियों और उत्तर प्रदेश के कुछ स्थानों की कुछ गुफाओं की दीवारों पर मिलते हैं।
- ये चित्रकलाएं वन्य जीवों, युद्ध के जुलूसों और शिकार के दृश्यों का आदिम अभिलेख हैं। इन्हें अपरिष्कृत लेकिन यथार्थवादी ढंग से तैयार किया गया है। ये सभी आरेखण स्पेन की उन प्रसिद्ध शैलाश्रय की चित्रकलाओं से असाधारण रूप से मेल खाती हैं जिनके संबंध में यह माना जाता है कि वे नवप्रस्तर मानव की कला कृतियां हैं।

प्रागैतिहासिक गुफा चित्रकारी भीमबेटका मध्यप्रदेश हड़प्पन संस्कृति की सामग्री की सम्पदा को छोड़ दें तो भारतीय कला कई वर्षों के लिए समग्र रूप से हमारी दृष्टि से ओझल हो जाती है। भारतीय कला की खाई को अभी तक संतोषजनक रूप से भरा नहीं जा सका है। तथापि इस अंधकारमय युग के बारे में ईसा के जन्म से पूर्व और बाद की शताब्दियों से संबंधित हमारे पुराने सहित्य में से कुछ का हवाला देकर कुछ थोड़ा-बहुत सीख सकते हैं। लगभग तीसरी-चौथी शताब्दी ईसा पूर्व का एक बौद्ध पाठ, विनयपिटक विहार गृहों के कई स्थानों का हवाला देता है जहाँ चित्रकक्ष हैं जिन्हें रंग की गई आकृतियों और सजावटी प्रतिरूपों से सजाया गया था। महाभारत और रामायण कालीन प्रंसगों का भी वर्णन मिलता है, मूल रूप में इनकी संरचना अति पुराकाल की मानी जाती है। इस प्रारम्भिक भित्ति चित्रकलाओं को महाराष्ट्र राज्य के औरंगाबाद के निकट स्थित अजन्ता के चित्रित किए गए गुफा मन्दिरों की ही भांति, बौद्ध कला की उत्तरवर्ती अवधियों की उत्कीर्ण और रंग की गई चित्रशालाओं का आदिपुरुष माना जा

कुचिपुड़ी नृत्य

कुचिपुड़ी आन्ध्र प्रदेश की एक नृत्य शैली है। यह भारतीय नृत्य की एक पारंपरिक शैली है। मूलतः कुस्सेल्वा के नाम से विख्यात ग्राम-ग्राम जाकर प्रस्तुति देने वाले अभिनेताओं के समूह के द्वारा प्रस्तुत की जाने वाली विधा है। आंध्र प्रदेश के कृष्णा जिलें में कुचिपुड़ी नामक गाँव है।

- 17वीं शताब्दी में एक प्रतिभाशाली वैष्णव कवि तथा द्रष्टा सिहेन्द्र योगी ने यक्षगान के रूप में कुचिपुड़ी शैली की कल्पना की, जिनमें अपनी कल्पनाओं को मूर्ति एवं साकार रूप प्रदान करने की अद्भुत क्षमता थी। सिद्धेन्द्र योगी के अनुयायियों अथवा शिष्यों ने कई नाटकों की रचना की और आज भी कुचिपुड़ी नृत्य-नाटक की परंपरा विद्यमान है।
  - इस शैली में एकल नृत्य प्रस्तुति व स्त्री नर्तकियों के प्रशिक्षण सहित अनेक नए तत्वों का समावेशन लक्ष्मी नारायण शास्त्री ने किया। पहले भी एकल नृत्य प्रस्तुति विद्यमान थी, पर वह केवल समुचित कार्यों में नृत्य-नाटकों के एक भाग के रूप में की थी।
  - कभी-कभी तो नाटक की प्रस्तुति में आवश्यक न होने पर भी अनुरोध अथवा आग्रह में वृद्धि करने तथा प्रस्तुति को बीच में रोकने हेतु एकल नृत्य प्रस्तुत की जाती थी। तीर्थ नारायण योगी की कृष्ण लीला-तरंगिणी से प्रेरित तरंगम ऐसी ही प्रस्तुति है।
  - शरीर संतुलन तथा पादकोशल तथा उसके नियंत्रण में नर्तक कलाकारों की दक्षता प्रदर्शित करने हेतु पीतल की थाली की किनारी पर नृत्य करना तथा सिर पर पानी से भरा घड़ा लेकर नृत्य करने जैसी कुशलताओं को जोड़ा गया। इस शताब्दी के मध्य तक कुचिपुड़ी नृत्य शैली एक सर्वथा स्वतंत्र शास्त्रीय एकल नृत्य शैली के रूप में पूर्णतः स्थापित हो गई अब कुचिपुड़ी नृत्य की दो शैलियाँ है ।
    1. नृत्य नाटक

एकल नृत्य नाटक

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **"राजस्थान पुलिस कांस्टेबल"** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है

कि ये नोट्स आपकी **"राजस्थान पुलिस कांस्टेबल"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063 , 8504091672

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

विश्व भूगोल

अध्याय – I

सौर मंडल

- सूर्य तथा उसके आसपास के ग्रह ,उपग्रह तथा शुद्र ग्रह, धूमकेतु , उल्कापिड उनके संयुक्त समूह को सौरमंडल कहते हैं।
- सूर्य सौरमंडल के केंद्र में स्थित है।
- सौरमंडल में जनक तारा के रूप में सूर्य है।
- सौर मंडल के सभी पिड सूर्य का चक्कर लगाते हैं।

सूर्य

- यह हमारा सबसे निकटतम तारा है सूर्य सौरमंडल के बीच में स्थित है। सूर्य की आयु लगभग I.5 अरब वर्ष है जिसमें से वह 5 अरब वर्ष जि चुका है।
- सूर्य के अंदर हाइड्रोजन का हिलियम में संलयन होता है और ईंधन प्लाज्मा अवस्था में रहता है।
- आंतरिक संरचना के आधार पर सूर्य को तीन भागों में बांटते हैं।

Core(कोर)

यह सूर्य के मध्य भाग है इसका तापमान लगभग I.5 मिलियन सेल्सियस है इसी में हाइड्रोजन का हिलियम में संलयन होता है यह प्लाज्मा अवस्था है।

Redatice Zone (विकिरण मंडल)

कोर में हुए संलयन के फलस्वरूप कई प्रकार की किरणें निकलती है जो **Reader Time** जोन में दिखती है। इसमें एक्स-रे तथा फोटोन पाए जाते हैं।

संवहन मंडल

इसमें हाइड्रोजन से बने सेल पाए जाते हैं जो अंदर की ओर बड़े होते हैं तथा बाहर की ओर छोटे होते हैं।

सौर ज्वाला

जब कोर में बहुत अधिक ऊर्जा बन जाती है तो वह सूर्य के तीनो परतों से पार करके हाइड्रोजन के सेल को चीरता हुआ सूर्य की सतह को छोड़कर सौरमंडल में प्रवेश कर जाता है।

जिस जवाला के पास तापमान कम है उसके पास ऊर्जा भी कम रहता है और उसे सूर्य वापस खींच लेता है।

और जिस ज्वाला के पास तापमान अधिक रहता है वह सौरमंडल में दूसरे ग्रहों तक पहुंच जाता है।

जब यह पृथ्वी के करीब से गुजरता है तो गुरूत्वाकर्षण के प्रभाव में आकर पृथ्वी पर गिरने लगता है। किंतु वायुमंडल इसे विचलित कर लेता है और पृथ्वी को जलने से रोकता है इस कारण तीन घटनाएं उत्पन्न होती है।

1. पृथ्वी पर संचार में बाधा आती है।
2. एक ध्वनि उत्पन्न होती है जिसे **vasher** कहते हैं।
3. एक प्रकाश उत्पन्न होता है जिसे **अरौरा** कहते हैं।
4. उत्तरी गोलार्द्ध में इस प्रकाश में अरौरा बोरियोलिस तथा दक्षिणी गोलार्द्ध में अरौरा आस्टेलियोसिस कहते हैं।

सौर कलंक

- वह ज्वाला जिसका तापमान कम था और उसके पास उर्जा भी कम थी सूर्य गुरुत्वाकर्षण के कारण वापस खींच लेता है।
- यह दो सेल के बीच के खाली जगह से अंदर प्रवेश करता है। इसका तापमान 4000 डिग्री सेल्सियस होता है जबकि सौर ज्वाला का तापमान 6000 डिग्री सेल्सियस होता है।
- अतः इसका तापमान अपेक्षाकृत कम होता है अतः यह एक धब्बा के समान दिखता है जिसे शोर कलंक कहते हैं।

सौर कलंक चक्र (Sun spots cycle)

- सौर ज्वाला सूर्य के विश्वत रेखा से 40 डिग्री अक्षांश तक जाता है।

- इसे जाने में 5.5 वर्ष तथा आने में 5.5 वर्ष लगते हैं अतः Sun spot cycle 11 वर्ष का होता है।
- 2013 में 23 वां cycle पूरा हुआ था, वर्तमान में 24 cycle वां चल रहा है।
- एक cycle में (11 years में) वर्ष में **100 solar spot** होते हैं।

चुंबकीय चाप (Magnetic Arc)

जब Sun spot बनता है तो वहां की चुंबकीय क्षमता बढ़ जाती है। इन चुंबकीय किरणों को अपनी ओर खींच लेता है जिसे चुंबकीय चाप कहते हैं।

सूर्य की बाहरी परत

सूर्य के बाहर उसकी तीन परतें हैं ।

1. **प्रकाश मंडल**

यह सूर्य का दिखाई देने वाला भाग है इसका तापमान 6000 डिग्री सेल्सियस होता है।

2. **वरुण मंडल**

यह बाहरी परत के आधार पर मध्य भाग है इसका तापमान 32400 डिग्री सेल्सियस होता है।

3. **(corona)**

- यह सूर्य का सबसे बाहरी परत होता है जो लपट के समान होता है इसे केवल सूर्य ग्रहण के समय देखा जाता है इसका तापमान 21lac डिग्री सेल्सियस होता है।
- सूर्य में 75% हाइड्रोजन तथा 24% हिलीयम है।
- शेष तत्व की मात्रा 1% में ही निहित है।
- सूर्य का द्रव्यमान पृथ्वी से 332000 गुना है।
- सूर्य का व्यास पृथ्वी से 109 गुना है।
- सूर्य का गुरुत्वाकर्षण पृथ्वी से 28 गुना है।
- सूर्य का घनत्व पृथ्वी से 20 गुना है।
- सूर्य से प्रति सेकंड 10^{26} जूल ऊर्जा निकलती है।
- सूर्य पश्चिम से पूरब घूर्णन करता है।
- सूर्य का विषुवत रेखीय भाग 25 दिन में घूर्णन कर लेता है।

- सूर्य का ध्रुवीय भाग 31 दिन में घूर्णन कर लेता है।

ग्रह

वैसा आकाशीय पिंड जिसके पास ना अपनी ऊष्मा हो और ना ही अपना प्रकाश हो वह ऊष्मा तथा प्रकाश के लिए अपने निकटतम तारे पर आश्रित हो।तथा उसी का चक्कर लगाता हो प्रारंभ मे ग्रहों कि संख्या 9 थी परंतु वर्तमान में 8 ग्रह है ग्रहों केा 2 श्रेणियों में बांटते है।

पार्थिव

- इन्हें आंतरिक ग्रह भी कहते हैं।
- यह पृथ्वी से समानता रखते हैं।
- इनका घनत्व अधिक होता है तथा यह ठोस अवस्था में होते हैं।

इनके उपग्रह कम होते हैं या होते ही नहीं है इन ग्रहों की संख्या चार

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **"राजस्थान पुलिस कांस्टेबल"** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **"राजस्थान पुलिस कांस्टेबल"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063 , 8504091672

अध्याय – 2

महाद्वीप एवं महत्त्वपूर्ण स्थान

एशिया की प्रमुख नदियाँ

नाम	संबंधित देश	विशेषताएं
आमू दरिया	अफगानिस्तान,तजाकिस्ता,तुर्कमेनिस्तान, उज़्बेकिस्तान	• उद्गम स्थान - पामीर पर्वतीय क्षेत्र • अर्द्ध-शुष्क क्षेत्र में बहती है।
सीर-दार्या	कजाकिस्तान, किर्गिस्तान तजाकिस्तान,उज़्बेकिस्तान	• मुहाना - अरल सागर में
चाओ-फ्राया नदी	थाईलैंड की प्रमुख नदी	• मुहाना-थाईलैंड की खाड़ी • इसका बेसिन चावल उत्पादन हेतु प्रसिद्ध है। • इसके मुहाने पर थाईलैंड की राजधानी बैंकॉक स्थित है।
टिगरिस नदी एवं यूफ्रेट्स नदी	तुर्की, इराक,सीरिया	• उद्गम स्थान-टॉरस पर्वत (टर्की) • यह बेसिन खजूर उत्पादन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। • इन नदियों को क्रमशः दजला और

		फरात नाम से भी जाना जाता है।
येलो रिवर (ह्वागहों)	चीन	• उद्गम स्थान - कुनलून पर्वत • मुहाना - पो हाई की खाड़ी (येलो सागर) • अपने कटाव व बाढ़ के लिए प्रसिद्ध यह नदी 'चीन का शोक' कहलाती है। • पीले रंग के लोयस निर्मित मैदान से प्रवाहित होती है इसके कारण यह अत्यधिक मात्रा में सिल्ट का निक्षेप करती है।
यांग्त्सिं क्यांग नदी	चीन	• मुहाना - पूर्वी चीन सागर • एशिया की सबसे लंबी नदी • इसी नदी के तट पर शंघाई एवं बुहान शहर स्थित है। • इस नदी पर 'थ्री गोर्ज डैम' स्थित है।
इरावदी नदी	म्यांमार की प्रमुख नदी	• उद्गम स्थान- माली और नामी नदी का संगम • मुहाना - अंडमान सागर • इसके डेल्टाई क्षेत्र पर म्यांमार का यांगून शहर स्थित है।
सालवीन नदी	म्यांमार की प्रमुख नदी	• उद्गम स्थान - चीन (तिब्बत का पठार) • मुहाना - अंडमान सागर • यह म्यांमार की सबसे लंबी नदी है।

मेकांग नदी	चीन,थाईलैंड - लाओस,कंबोडिया, वियतनाम (प्राकृतिक सीमा - म्यांमार लाओस तथा थाईलैंड लाओस)	• उद्गम स्थान - तिब्बत का पठार • मुहाना - दक्षिणी चीन सागर • इस नदी के किनारे कंबोडिया की राजधानी 'नॉमपेन्ह' स्थित है। • विश्व में अमेजन नदी के बाद दूसरे स्थान पर सर्वाधिक जैव विविधता वाला बेसिन है।
जॉर्डन नदी	इजरायल व जॉर्डन	• मुहाना - मृत सागर में
लीना नदी	रूस	• मुहाना - आर्कटिक सागर (लॉपटेब सागर)
ओब नदी	रूस	• मुहाना - कारा सागर (आर्कटिक सागर)
येनेसी नदी	रूस	• मुहाना - कारा सागर (आर्कटिक सागर)
अमूर नदी	रूस, चीन	• मुहाना - ओखोत्स्क सागर (प्रशांत महासागर)
सिक्यांग नदी	चीन	• मुहाना दक्षिण चीन सागर • डेल्टाई क्षेत्र में रेशम उत्पादन किया जाता है। • इस के मुहाने पर चीन के 'हांगकांग' व 'ग्वांगझाउ' शहर स्थित है।

		• उद्गम स्थान - चेमयुंगडुंग ग्लेशियर • मुहाना - बंगाल की खाड़ी • तिब्बत (चीन) में इसे 'यारलूंग-सांगपो' तथा बांग्लादेश में 'पद्मा' के नाम से जाना जाता है। • दिबांग व लोहित प्रमुख सहायक नदियां हैं। • बांग्लादेश में तीस्ता नदी इससे मिलती है।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

एशिया की प्रमुख जल संधियां

जलसंधि	विशेषताएं
बेरिंग जलसंधि	• अलास्का (अमेरिका) को रूस से अलग करती है। • पूर्वी चुकची सागर एवं बेरिंग सागर को जोड़ती है।
तत्तर जलसंधि	• रूसी मुख्यभूमि को रूस के सखालिन द्वीप से अलग करती है। • जापान सागर को ओखोत्स्क सागर से जोड़ती है।

ला-पैराज जलसंधि या सोया जलसंधि	• जापान के होकड़ो द्वीप को रूस के सखालिन द्वीप से अलग करती है। • जापान सागर को ओखोत्स्क सागर से जोड़ती है।
सुगारू जलसंधि	• होंकैडो को होंशु द्वीप से अलग करती है। • जापान सागर को प्रशांत महासागर से जोड़ती है।
कोरिया जलसंधि या सुशिमा जलसंधि	• कोरिया प्रायद्वीप को जापान के क्यूशु द्वीप से अलग करती है। • पूर्वी चीन सागर को जापान सागर से जोड़ती है।
ताइवान जलसंधि (फोरमोसा जलसंधि)	• ताइवान को चीन से अलग करती है। • पूर्वी चीन सागर को दक्षिणी चीन सागर से जोड़ती है।
लुज़ोन जलसंधि	• ताइवान को लुज़ोन द्वीप से अलग करती है। • दक्षिणी चीन सागर व फिलिपिन सागर को जोड़ती है।
मकस्सार जलसंधि	• सेलेबीस द्वीप को बोर्नियो द्वीप से अलग करती हैं • सेलेबीस सागर को जावा सागर से जोड़ती है।
सुंडा जलसंधि	• इंडोनेशिया के जावा को सुमात्रा से अलग करती है। • हिद महासागर को जावा सागर से जोड़ती है।
मलक्का जलसंधि	• मलेशिया (मलाया) को सुमात्रा द्वीप से अलग करती है। • अंडमान सागर (हिद महासागर) को दक्षिण चीन सागर(

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	प्रशांत महासागर) से जोड़ती है।
जोहोर जलसंधि	• सिंगापुर को मलेशिया से अलग करती है। • दक्षिणी चीन सागर को अंडमान सागर से जोड़ती है।
पाक जल संधि	• भारत के पम्बन द्वीप को श्रीलंका से अलग करती है। • मन्नार की खाड़ी को पाक की खाड़ी से जोड़ती है।
होर्मुज़ जलसंधि	• यु. ए. ई. ओमान को ईरान से अलग करते हैं। • फारस की खाड़ी को ओमान की खाड़ी से जोड़ती है।
बाब-एल-मंदेब जलसंधि	• यमन को जिबूती से अलग करती है। • लाल सागर को अदन की खाड़ी से जोड़ती है।

एशिया की प्रमुख झीलें

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी हे जो आपको **"राजस्थान पुलिस कांस्टेबल"** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **"राजस्थान पुलिस कांस्टेबल"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063 , 8504091672

अध्याय – 4

महासागर

पृथ्वी का जल से ढका भाग जलमण्डल कहलाता है।

पृथ्वी के लगभग 70.8% भाग पर जलमण्डल का विस्तार है। उत्तरी गोलार्द्ध के लगभग 40% तथा दक्षिणी गोलार्द्ध के 81% भाग पर जलमण्डल का विस्तार है।

जलमण्डल को आकार और स्थिति की दृष्टि से महासागर (Ocean), सागर

a), खाड़ियों (straits) आदि में विभाजित किया जाता है।

जलमण्डल के अंतर्गत प्रमुख रूप से चार महासागर हैं--प्रशांत महासागर, अटलांटिक महासागर, हिन्द महासागर, आर्कटिक महासागर।

प्रशांत महासागर

यह पृथ्वी का सबसे बड़ा एवं गहरा महासागर है, जो लगभग 1,65,246,200 वर्ग किमी क्षेत्र में फैला हुआ है।

प्रशांत महासागर की आकृति लगभग त्रिभुजाकार है, जिसका शीर्ष उत्तर में बेरिंग के मुहाने पर है।

प्रशांत महासागर के पश्चिम में एशिया तथा ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप, पूर्व में उत्तरी तथा दक्षिणी अमेरिका और दक्षिण में अंटार्कटिका महाद्वीप है।

प्रशांत महासागर के बेसिन के अधिकांश भागों की गहराई लगभग 7,300 मीटर तक है।

4. जलमण्डल

प्रशांत महासागर में 20,000 से भी अधिक द्वीप हैं। प्रशांत महासागर का उत्तरी भाग सबसे अधिक गहरा है जिसकी औसत गहराई 5,000 से 6,000 मीटर है।

प्रशांत महासागर में मिडनाओ गर्त की गहराई 10,000 मीटर से भी अधिक है। अटाकामा तथा टोंगा गर्त क्रमशः लगभग 8,000 और 9,000 मीटर गहरे हैं। अल्युशियन, क्युराइल, जापान तथा बेनिन महत्त्वपूर्ण गर्त हैं जिनकी गहराइयाँ 7,000 से 10,000 मीटर तक हैं।

अटलांटिक महासागर

अटलांटिक महासागर आकार में प्रशांत महासागर के लगभग आधा है। यहसम्पूर्ण संसार के लगभग छठे भाग में विस्तृत है।

अटलांटिक महासागर की आकृति अंग्रेजी भाषा के अक्षर 's' से मिलती-जुलती है।

अटलांटिक महासागर का क्षेत्रफल ८२,५५१,५०० वर्ग किमी है।

अटलांटिक महासागर के पश्चिम में दोनों अमेरिका तथा पूर्व में यूरोप और अफ्रीका स्थित हैं। दक्षिण में यह खुला हुआ है और अंटार्कटिका महाद्वीप तक विस्तृत है। उत्तर में यह ग्रीनलैण्ड, आइसलैण्ड तथा अन्य छोटे द्वीपों से घिरा हुआ-सा लगता है।

अटलांटिक महासागर के बेसिन का प्रमुंख स्थलाकृतिक लक्षण "मध्य अटलांटिक कटक' है। यह लगभग १५,००० किमी लम्बा तथा लगभग ५,००० मीटर ऊंचा है। यह खिंचाव एवं भ्रंशन से बना है। इस कटक काउत्तरी भाग डॉल्फिन श्रेणी और दक्षिणी भाग चैलेन्जर श्रेणी के नाम से प्रसिद्ध हैं। अजोर्स का पाइको द्वीप मध्य अटलांटिक कटक का सर्वोच्च भाग है।

अटलांटिक महासागर में उत्तरी केमन तथा पोर्टोरिको नामक दो द्रोणियाँ और रोमांश तथा दक्षिणी सैंडविच नामक दो गर्त हैं।

अटलांटिक महासागर में बरमुडा सदृश कुछ प्रवाल द्वीप तथा असेंसन, ट्रिस्ता दी कान्हा, सेंट हेलेना और गुआ सदृश अनेक ज्वालामुखी द्वीप हैं।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

हिन्द महासागर

हिन्द महासागर क्षेत्रफल और विस्तार की दृष्टि से पृथ्वी पर तीसरा सबसे महासागर है। किस

हिन्द महासागर का क्षेत्रफल 73,552,700 वर्ग किमी है और इसकी औसत गहराई लगभग ५,००० मीटर है।

हिन्द महासागर उत्तर की ओर

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी हे जो आपको **"राजस्थान पुलिस कांस्टेबल"** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है

कि ये नोट्स आपकी **"राजस्थान पुलिस कांस्टेबल"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063 , 8504091672

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

भारत भूगोल

अध्याय – I

सामान्य परिचय

- भूगोल (Geography) लैटिन भाषा के शब्द "Geo + graphie" से मिलकर बना है। "Geo" का अर्थ है पृथ्वी तथा "graphie" का अर्थ है वर्णन या व्याख्या करना। सामान्यतः
- इसके अन्तर्गत पृथ्वी और उस पर दिखाई देने वाली सभी बातों या तथ्यों का अध्ययन किया जाता है।
- वर्तमान समय में भूगोल को अनेक प्रकार से विभाजित करने का प्रयास किया गया है और इन्हीं प्रकारों में से एक प्रकार है भौतिक भूगोल।
- भौतिक भूगोल के अन्तर्गत सामान्यतः पृथ्वी से संबंधित स्थलमण्डल (Lithosphere), जलमण्डल (Hydrosphere), वायुमण्डल (Atmosphere) तथा पर्यावरण भूगोल (Environmental Geography) का क्रमबद्ध अध्ययन तथा इनके मध्य पारस्परिक क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

भारत की स्थिति व सीमाओं से सम्बंधित महत्त्वपूर्ण बिंदु –

- भारत एशिया महाद्वीप का एक देश है, जो एशिया के दक्षिणी भाग में हिन्द महासागर के शीर्ष पर तीन ओर समुद्रों से घिरा हुआ है। पूरा भारत उत्तरी गोलार्द्ध में पड़ता है।
- भारत का अक्षांशीय विस्तार 8°4' उत्तरी अक्षांश से 37°6'उत्तरी अक्षांश तक है।
- भारत का देशान्तर विस्तार 68°7' पूर्वी देशान्तर से 97°25' पूर्वी देशान्तर तक है।
- भारत का क्षेत्रफल 32,87,263 वर्ग किमी. है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से संसार में भारत का सातवाँ स्थान है। यह रूस के क्षेत्रफल का लगभग 1/5,संयुक्त राज्य अमेरिका के क्षेत्रफल का 1/3 तथा ऑस्ट्रेलिया के क्षेत्रफल का 2/5 है।
- जनसंख्या की दृष्टि से संसार में भारत का चीन के बाद दूसरा स्थान है।
- विश्व का 2.4% भूमि भारत के पास है जबकि विश्व की लगभग 17.5% जनसंख्या भारत में रहती है।

- भारत के उत्तर में नेपाल, भूटान व चीन, दक्षिण में श्रीलंका एवं हिन्द महासागर, पूर्व में बांग्लादेश, म्यांमार एवं बंगाल की खाड़ी तथा पश्चिम में पाकिस्तान एवं अरब सागर है। भारत को श्रीलंका से अलग करने वाला समुद्री क्षेत्र मन्नार की खाड़ी (Gulf of Mannar) तथा पाक जलडमरूमध्य(Palk Strait) है।
- प्रायद्वीप भारत का दक्षिणतम बिन्दु-कन्याकुमारी है।
- भारत का सुदूर दक्षिणतम बिन्दु - इन्दिरा प्वाइंट (ग्रेटनिकोबार में है)।

देश की चतुर्दिक सीमा बिन्दु	
• दक्षिणतम बिन्दु- इन्दिरा प्वाइंट (ग्रेट निकोबार द्वीप) • उत्तरी बिन्दु- इन्दिरा कॉल (जम्मू-कश्मीर) • पश्चिमी बिन्दु- सर क्रीक (गुजरात) • पूर्वी बिन्दु-वालांगू (अरुणाचल प्रदेश) • मुख्य भूमि की दक्षिणी सीमा- कन्याकुमारी (तमिलनाडु)	
स्थलीय सीमाओं पर स्थित भारतीय राज्य	
पाकिस्तान (५)	गुजरात, राजस्थान, पंजाब, जम्मू और कश्मीर
अफगानिस्तान (१)	जम्मू और कश्मीर
चीन (५)	जम्मू और कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तरांचल, सिक्किम,अरुणाचल प्रदेश
नेपाल (५)	उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, बिहार, पश्चिम बंगाल, सिक्किम
भूटान (४)	सिक्किम, पश्चिम बंगाल, असम, अरुणाचल प्रदेश
बांग्लादेश (५)	पश्चिम बंगाल, असम, मेघालय, त्रिपुरा, मिजोरम

म्यांमार (4)	अरुणाचल प्रदेश,नागालैण्ड, मणिपुर, मिजोरम

- भारत का उत्तरी अन्तिम बिन्दु- इंदिरा कॉल है।

<u>मुख्य बिन्दु</u>

- कर्क रेखा (Tropic of Cancer) भारत के बीचों -बीच से गुजरती है।
- भारत को पाँच प्राकृतिक भागों में बाँटा जा सकता है ।
- उत्तर का पर्वतीय प्रदेश
- उत्तर का विशाल मैदान
- दक्षिण का प्रायद्वीपीय पठार
- समुद्री तटीय मैदान
- थार का मरुस्थल
    - भारत का मानक समय (Indian Standard Time) इलाहाबाद के पास नैनी से लिया गया है। जिसका देशान्तर 82°30 पूर्वी देशान्तर है। (वर्तमान में मिर्जापुर) यह ग्रीनविच माध्य समय (GMT) से 5 घण्टे 30 मिनट आगे है।
    - भारत की लम्बाई उत्तर से दक्षिण तक 3214 किमी. तथा पूर्व से पश्चिमी तक 2933 किमी. है।
    - भारत की समुद्री सीमा 7516.6 किमी. लम्बी है जबकि स्थलीय सीमा की लम्बाई 15,200 किमी. है। भारत की मुख्य भूमि की तटरेखा 6,100 किमी. है।

क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान भारत का सबसे बड़ा राज्य है। जनसंख्या की दृष्टि से उत्तर प्रदेश देश का सबसे बड़ा

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी हे जो आपको ***"राजस्थान पुलिस कांस्टेबल"*** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है

कि ये नोट्स आपकी **"राजस्थान पुलिस कांस्टेबल"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063 , 8504091672

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – 2

भौतिक विभाजन

भारत एक विशाल भू – भाग है जिसका निर्माण अलग – अलग भू-गर्भीय काल के दौरान हुआ है भू-गर्भीय निर्माणों के अलावा इस विशाल भूभाग पर अपक्षय अपरदन तथा निक्षेपण का प्रभाव हैं/

भारत की स्थलाकृति को पांच भागों में बाँटा जा सकता हैं/

- उत्तर भारत का पर्वतीय क्षेत्र
- प्रायद्वीपीय पठार
- मध्यवर्ती विशाल मैदान
- तटवर्ती मैदान
- द्वीप समूह

- **पर्वत**

I. उत्तर भारत का विशाल पर्वतीय क्षेत्र

यह विश्व की सर्वोच्च पर्वतीय स्थलाकृति है ,जिसका विस्तार भारत के पश्चिम से लेकर पूर्व तक है/ इस पर्वतीय श्रेणी को तीन भागों में बाँटा जा सकता हैं /

1.ट्रांस हिमालय श्रेणी

2.हिमालय पर्वत श्रेणी

3.पूर्वांचल की पहाड़ियों

ट्रांस हिमालय :- ट्रांस हिमालय का निर्माण हिमालय से भी पहले हो चुका था इसके अन्तर्गत काराकोरम लद्दाख कैलाश व जास्कर आती है इन श्रेणियों पर वनस्पति का अभाव पाया जाता है।

(A) काराकोरम श्रेणी - यह ट्रांस हिमालय की सबसे उत्तरी श्रेणी है।

- भारत की सबसे ऊंची चोटी k2 या गाडविन ऑस्टिन (8611 m) काराकोरम श्रेणी पर ही स्थित है।

- यह विश्व की दूसरी सबसे ऊँची चोटी है।
- काराकोरम दर्रा एवं इंदिरा कॉल इसी दर्रा में स्थित है
- काराकोरम दर्रा काराकोरम श्रृंखला स्थित कश्मीर को चीन को जोड़ने वाला संकीर्ण दर्रा हैं।
- भारत का सबसे लम्बा ग्लेशियर सियाचिन स्थित है
- विश्व का सबसे ऊँचा सैनिक अड्डा (सियाचिन) यहीं अवस्थित है
- काराकोरम श्रेणी पर चार प्रमुख हिमनद (ग्लेशियर) स्थित हैं।
  - सियाचिन (72 km)
  - बाल्तोरा (58km)
  - बैफो (60 km)
  - हिस्पर (61 Km)

(B) **लद्दाख श्रेणी** - विश्व की सबसे बड़ी ढाल वाली चोटी राकापोशी लद्दाख श्रेणी पर ही स्थित है।

- लद्दाख श्रेणी दक्षिण पूर्व की ओर कैलाश श्रेणी के रूप में स्थित है। यह श्रेणी सिन्धु नदी व इसकी सहायक नदी के बीच जल विभाजक का कार्य करती है।
- यह भारत का न्यूतम वर्षा वाला क्षेत्र है
- इसका सर्वोच्च शिखर माउंट कैलाश है

(C) जास्कर श्रेणी- यह ट्रांस हिमालय की सबसे दक्षिणी श्रेणी हैं

- नंगापर्वत इस पर्वत श्रेणी की सबसे ऊँची चोटी है।
- लद्दाख व जास्कर श्रेणियों के बीच से ही सिन्धु नदी बहती है।

1. **वृहद या हिमाद्रि या महान हिमालय**- इसका विस्तार नंगा पर्वत से नामचा बरुआ पर्वत तक धनुष की आकृति में फैला हुआ है जिसकी कुल लम्बाई 2500 km तक है तथा औसत ऊंचाई 6100 मी॰ तक है। विश्व की सर्वाधिक ऊंची चोटियां इसी श्रेणी पर पाई जाती है जिसमें प्रमुख है-

- माउंट एवरेस्ट (8848 मी.) विश्व की सबसे ऊंची चोटी
- कंचनजंगा (8598 मी.)
- मकालू (8481 मी.)
- धौलागिरी (8172 मी.)

- अन्नपूर्णा (8076 मी.)
- नंदा देवी (7817 मी.)

- एवरेस्ट को पहले तिब्बत में 'चोमोलुगंमा'के नाम से जाना जाता था जिसका अर्थ 'पर्वतो की रानी'।
- हिमालय का निर्माण भारतीय सह – ऑस्ट्रलियाई प्लेट एवं यूरोशियाई प्लेट की अभिसरण प्रक्रिया से हुआ हैं।
- एवरेस्ट, कंचनजंगा, मकालू, धौलागिरि, नंगा पर्वत , नामचा बरुआ इसके महत्त्वपूर्ण शिखर हैं।
- भारत में हिमालय की सर्वोच्च ऊँची चोटी कंचन जंगा यहीं स्थित हैं।
- यह विश्व की तीसरी सबसे ऊँची चोटी है।

2. **<u>लघु या मध्य हिमालय</u>**–

- महान हिमालय के दक्षिण में तथा शिवालिक के उत्तर में इसका विस्तार है। इसकी सामान्य ऊंचाई 3700 से 4500 मी. है।
- इसके अन्तर्गत कई श्रेणियाँ पाई जाती हैं।
  - पीर पंजाल (जम्मू कश्मीर)
  - धौलाधार (हिमाचल प्रदेश)
  - नागटिब्बा (उत्तराखण्ड)
  - कुमायूँ (उत्तराखण्ड)
  - महाभारत (नेपाल)
- लघु हिमालय तथा महान हिमालय के बीच कई घाटियों का निर्माण हुआ है।
  - कश्मीर की घाटी (जम्मू कश्मीर)
  - कुल्लु काँगड़ा घाटी (हिमाचल प्रदेश)
  - काठमाण्डु घाटी (नेपाल)
- लघु हिमालय अपने स्वास्थ्यवर्धक पर्यटन स्थलों के लिए भी प्रसिद्द है जिसके अन्तर्गत शामिल हैं –
- कुल्लु, मनाली, डलहौजी, धर्मशाला ,शिमला (हिमाचल प्रदेश)
  अल्मोड़ा, मस्री, चमोली(उत्तराखण्ड)

- लघु हिमालय की श्रेणियों की ढालों पर शीतोष्ण घास के मैदान पाये जाते है जिन्हे जम्मू-कश्मीर में मर्ग (गुलमर्ग,सोनमर्ग) व उत्तराखण्ड में 'बुग्याल व पयार' कहा जाता है।

3. **<u>शिवालिक या बाह्य हिमालय</u>**

- मध्य हिमालय के दक्षिण में शिवालिक हिमालय की अवस्थिति को बाह्य हिमालय के नाम से जानते हैं
- यह लघु हिमालय के दक्षिण में स्थित है।
- शिवालिक और लघु हिमालय के बीच स्थित घाटियों को पश्चिम में दून (जैसे- देहरादून, कोटलीदून, पाटलीदून) व पूर्व में द्वार (जैसे- हरिद्वार) कहते हैं।
- शिवालिक को जम्मू कश्मीर में कश्मीर पहाड़ियां तथा अरुणाचल प्रदेश में डाफला, मिरी, अबोर व मिश्मी की पहाड़ियो के नाम से जाना जाता है।

चोस- (Chos)

- शिवालिक से पंजाब व हिमाचल प्रदेश में छोटी- छोटी धाराएँ निकलती है जिन्हें स्थानीय भाषा में चोस कहा जाता है।
- ये धाराएँ शिवालिक का अपरदन कर देती है एवं शिवालिक को कई भागो बाँट देती है।

<u>करेवा</u>

पीरपंजाल श्रेणी के निर्माण के समय कश्मीर घाटी में कुछ अस्थायी झीलों का निर्माण हो गया नदियों के द्वारा लेकर आए गए अवसाद के कारण यह झीलें अवसाद से भर गई।

ऐसे उपजाऊ क्षेत्रों में जाफरन/केसर की खेती की जाती है जिन्हें करेवा कहा जाता है।

<u>ऋतु प्रवास</u>

जम्मू और कश्मीर में रहने वाली जनजातियों गुज्जर, बकरवाल, झुकिया, भूटिया इत्यादि मध्य हिमालय में बर्फ के पिछलने के उपरान्त निर्मित होने वाले घास के मैदानों में अपने पशुओं को चराने के लिए प्रवास करते हैं तथा ये पुनः सर्दियों के दिनों में मैदानी भागों में आ जाते हैं जिसे ऋतु प्रवास कहा जाता है।

<u>पूर्वांचल की पहाड़ियाँ</u>

पूर्वांचल की पहाड़ियाँ हिमालय का ही विस्तार हैं

नामचा बरुआ के निकट हिमालय अक्ष संधीय मोड़ के कारण दक्षिण की ओर मुड़ जाता है। पटकाई, नागा, मणिपुर, लुशाई, या मिजो पहाड़ी आदि को को हिमालय का विस्तार बन जाता हैं यह पहाड़ियाँ भारत एवं म्यांमार सीमा पर स्थित हैं।

- नागा पहाड़ी की सर्वोच्च चोटी माउंट सारमती है।
- मिजो पहाड़ी की सर्वोच्च चोटी ब्लू माउंट है।
- पूर्वांचल की पहाड़ियाँ काफी कटी - फटी हैं ।
- गारो खासी एवं जयंतिया पहाड़ी शिलांग के पठार पर अवस्थित हैं।
- पूर्वांचल की पहाड़ियां भारतीय मानसून को दिशा प्रदान करती हैं।
- इस तरह ये पहाड़ियां जल विभाजक के साथ - साथ जलवायु विभाजक हैं।

हिमालय का प्रादेशिक विभाजन

नदियों के द्वारा हिमालय को 4 प्रादेशिक भागों में बाँटा जाता है।

कश्मीर हिमालय

पंजाब हिमालय भी कहते हैं क्योंकि 5 नदियों के संगम से बना मैदान है। सिंधु से सतलुज के मध्य स्थित। यह सिंधु गाँर्ज से लेकर सतलज गाँर्ज तक 560 किमी. लंबा है।

कुमाऊ, हिमालय

इसका विस्तार सतलज नदी से लेकर काली नदी के गाँर्ज तक 320 किमी. लंबाई में है। यह मुख्यतः उत्तराखंड राज्य में विस्तृत हैं। इसमें बद्रीनाथ , केदारनाथ, नंदादेवी, त्रिशूल आदि प्रमुख चोटियाँ हैं।

नेपाल सिक्किम हिमालय

इसका विस्तार काली नदी से लेकर तीस्ता नदी के गाँर्ज तक 800 कि. मी. लंबाई में है।

माउंट एवरेस्ट, कंचनजंगा,तथा मकालू इसी में स्थित है।

असम हिमालय

इसका विस्तार तीस्ता नदी से लेकर ब्रह्मपुत्र नदी के गाँर्ज तक 320 किमी. लंबाई में है यह पूर्वी सिक्किम, भूटान तथा अरुणाचल प्रदेश में स्थित हैं।

हिमालय का महत्त्व

हिमालय पर्वत की स्थिति भारत के लिए महत्त्वपूर्ण है, यह उत्तर से आने वाली हवाओं को रोकता हैं तथा समुन्द्रों से आने वाली हवाओं को रोककर वर्षा करता है।

हिमालय के अत्यधिक तुंगता युक्त होने के कारण यहाँ कई ग्लोशियर स्थित हैं इन ग्लोशियरो सेदेश नित्यवाही नदियां निकलती हैं।

हिमालयी क्षेत्र में सघन वन व घास को मैदान पाए जाते हैं जो कि पशुओं को चराने के काम आते हैं।

हिमालयी क्षेत्र में वन्यजीवों, पादपों,औषधियों इत्यादि की विभिन्न प्रजातियों पाई जाती हैंये प्रजातियों /इन प्रजातियों के कारण पूर्वी हिमालय का भाग विश्व के हॉट स्पॉट में शामिल हैं।

हिमालयी क्षेत्र में लिग्नाइट, पैट्रोलियम, ताम्बा, सीसा जैसे अनेक खनिज मिलते हैं।

पर्यटन उद्योग की दृष्टि से भी यह क्षेत्र सम्पन्न हैं यहाँ, गुलमर्ग, श्री नगर, मसूरी, शिमला, धर्मशाला, रानीखेत, देहरादून इत्यादि क्षेत्र स्थित हैं।

पर्वतीय वनों की उपस्थिति के कारण इस क्षेत्र में अनेक प्रकार के वृक्ष पाए जाते हैं जिनमें उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन, शीतोष्ण कटिबंधीय वन, पतझड़ वन, अल्पाईन वन, कोणधारी वन इत्यादि पाए जाते हैं।

धार्मिक दृष्टिकोण से हिमालयी क्षेत्र में बद्रीनाथ, केदारनाथ, अमरनाथ, हरिद्वार इत्यादि स्थित है।

भारत के प्रमुख दर्रे

हिमालय विश्व की सबसे ऊँची पर्वतमाला हैं और इसे पार करना दुष्कर हैं लेकिन इसमें कुछ दर्रे है जिनसे इस दुर्गम पर्वतमाला को पार किया जा सकता हैं।

इन पर्वतमाला की कुछ दर्रे इस प्रकार हैं –

1. पश्चिमी हिमालय के दर्रे
2. पूर्वी हिमालय के दर्रे
3. पश्चिमी घाट के दर्रे

I.<u>पश्चिमी हिमालय के दर्रे : -</u>

काराकोरम: - यह काराकोरम श्रेणी मे अवस्थित भारत की सबसे ऊँची चोटी है जो उत्तर में स्थित है/इसकी ऊंचाई 5000 मी. है और भारत के लद्दाख को चीन के सिकियंग प्रान्त से मिलाता है/

चांगला : - यह लद्दाख को तिब्बत से मिलाता है यह शीत ऋतु में हिमपाद के लिए बंद रहता है/

बनिहाल : - यह पीरपंजाल श्रृंखला में स्थित हैं / इसी में जवाहर सुरंग स्थित है /

लानकला : -यह जम्मू – कश्मीर के चीन अधिकृत अक्साई चीन में स्थित है / और तिब्बत की राजधानी तथा लद्दाख के बीच सम्पर्क बनाता है/

बरालाचा ला :- यह मनाली और लेह को आपस में जोड़ता हैं इसी से मनाली – लेह सड़क गुज़रता हैं / यह शीत ऋतु बंद रहता हैं

पीर पंजाल : - यह पीर पंजाल पर्वत श्रेणी में स्थित है जम्मू से श्री नगर जाने का मार्ग हैं लेकिन आजादी के बाद इसे बंद कर दिया गया है/

जोजि ला : - यह श्री नगर, कारगिल एवं लेह के बीच संपर्क को स्थापित करता है इस के महत्त्व को देखते हुए श्री नगर जोजिला सड़क को राष्ट्रीय राजमार्ग घोषित किया गया है/

खारदुन्गला :- यह जम्मू कश्मीर के काराकोरम पर्वत श्रेणी में छः हजार मीटर से भी अधिक ऊंचाई पर स्थित है इसी में भारत की सबसे ऊँची सड़क स्थित है |

थांग ला : -इस दर्रे से देश की दूसरी सबसे ऊँची सड़क गुज़रती है |

रोहतांग :- यह हिमाचल के लौह और स्पीती के बीच में संपर्क बनाता है /

शिपकी ला : -यह झेलम महाखंड पर छः हजार मीटर से अधिक की ऊंचाई पर स्थित है जो हिमाचल प्रदेश को तिब्बत से मिलाता हैं |

लिपु लेख : - यह उत्तराखंड को तिब्बत से मिलाता है |यह उत्तराखंड के पिथौरागढ़ जिलें में

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको ***"राजस्थान पुलिस कांस्टेबल"*** *के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी* ***"राजस्थान पुलिस कांस्टेबल"*** *की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /*

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063 , 8504091672

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – 3

नदियाँ एवं झीलें

गंगा नदी

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

- गंगा नदी का उद्गम् उत्तराखंड राज्य के उत्तरकाशी जिलें में गोमुख के निकट गंगोत्री हिमनद से हुआ हैं। जहां यह भागीरथी के नाम से जानी जाती हैं।
- गंगा नदी की ल. 2525km (उत्तराखंड) में 110 km. उ0प्र0 में 1450 km.तथा बिहार में 445 km व पश्चिम बंगाल में520 km) हैं।
- उत्तराखण्ड में देवप्रयाग में भागीरथी, अलकनंदा नदी से मिलती है तथा इसके बाद यह गंगा कहलाती है
- अलकनंदा नदी का स्त्रोत बद्रीनाथ के ऊपर सतोपथ हिमनद से हुआ हैं।
- भागीरथी से देव प्रयाग में मिलने से पहले अलकनंदा से कई सहायक नदियाँ आकर मिलती हैं।

स्थान	नदी संगम
देवप्रयाग	भागीरथी + अलकनंदा

रुद्रप्रयाग	मंदाकिनी + अलकनंदा
कर्ण प्रयाग	पिंडार + अलकनंदा
नंद प्रयाग	मंदाकिनी + अलकनंदा
विष्णु प्रयाग	धौलीगंगा + अलकनंदा

- गंगा नदी हरिद्वार(उत्तराखंड) के बाद मैदानी क्षेत्रो में प्रवेश करती है तथा अपने दक्षिण पूर्व में बहते हुए इलाहाबाद (उ० प्र०) में पहुचती है जहां इससे यमुना नदी (गंगा की सबसे बड़ी सहायक नदी) आकर मिलती हैं।
- इसके बाद यह बिहार व प. बंगाल मे प्रवेश करती है। प. बंगाल में यह दो वितरिकाओं (धाराओ) में बट जाती है। एक धारा हुगली नदी कहलाती है जो प.बं. में चली जाती है तथा मुख्य धारा प.बं. होते हुए बांग्लादेश में प्रवेश कर जाती हैं।
- बांग्लादेश में प्रवेश करने के बाद इससे ब्रह्मपुत्र नदी आकर मिलती है जिसके बाद यह पदमा के नाम से जानी जाने लगती है
- अन्त में यह बंगाल की खाड़ी में अपना जल गिराती है।

<u>गंगा की प्रमुख सहायक नदियां</u>

यमुना (सबसे लम्बी सहायक नदी),रामगंगा, गोमती , घाघरा , गडक , कोसी , महानंदा , सोन (दाहिनी तरफ से) इत्यादि।

यमुना नदी –

इस नदी का उद्गम उत्तराखण्ड में बदरपूंछ श्रेणी की पश्चिमी ढाल पर स्थित यमुनोत्री हिमनद से हुआ है।

- यमुना नदी गंगा की सबसे पश्चिमी व सबसे लम्बी नदी हैंजो गंगा से इलाहाबाद में आकर मिलती है ।
- प्रायद्वीप पठार से निकलने वाली चंबल सिंध, बेतवा केन इसके दाहिने तट पर मिलने वाली सहायक नदियां है इसके बाएं तट पर हिडन रिंद सेगर वरुणा आदि नदियां मिलती है।
- चम्बल नदी म. प्र. के मालवा पठार मेंमहू के निकट निकलती है तथा राजस्थान के कोटा में बहते हुए उ०प्र०में यमुना से आकर मिलती है यह अपनी 'उत्खात भूमि' (Badlond Topography) के लिए प्रसिद्ध है।

रामगंगा नदी- उत्तराखण्ड में गैरसेन के निकटगढवाल की पहाड़ियो से निकलती है तथा कन्नौज उत्तरप्रदेश में गंगा से आकर मिल जाती है ।

गोमती नदी- पीलीभीत जिलें से निकलती है तथा गाजीपुरमे गंगा नदी से मिलती है। लखनऊ व जौनपुर इसी के किनारे बसे हैं ।

घाघरा नदी- तिब्बत के पठार में स्थित मापचाचुंगोहिमनद से निकलती है तथाबाराबकी जिला में शारदा नदी (काली गंगा)इससे आकर मिलती

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **"राजस्थान पुलिस कांस्टेबल"** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **"राजस्थान पुलिस कांस्टेबल"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063 , 8504091672

अध्याय - 6

मृदा / मिट्टी

भारत के मृदा वर्गीकरण के दिशा में कही कार्य किये गए हैं/ जिनमें भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् (ICAR) द्वारा 1956 में किया गया कार्य अधिक महत्त्वपूर्ण हैं / ICARद्वारा संरचनात्मक मृदा और खनिज, मृदा के रंग व संसधानात्मक महत्त्व को ध्यान में रखते हुए भारत के मृदा को 8 भागों में विभाजित किया हैं/

मृदा के प्रकार

1. जलोढ़ मृदा (तराई मृदा , बांगर मृदा, खादर मृदा)
2. काली मृदा
3. लाल – पीली मृदा
4. लैटेराइट मृदा
5. पर्वतीय मृदा
6. मरुस्थलीय मृदा
7. लवणीय मृदा
8. पीट एवं जैव मृदा

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

मिट्टी के अध्ययन के विज्ञान को मृदा विज्ञान (पेडोलॉजी) कहा जाता हैं।

1953 में केन्द्रीय मृदा संरक्षण बोर्ड का गठन किया गया।

मृदा शब्द की उत्पति लैटिन भाषा के शब्द "सोलम" से हुई, जिसका अर्थ हैं - फर्श।

मूल चट्टानों, जलवायु, भूमिगत उच्चावच, जीवों के व्यवहार तथा समय से मृदा अपने मूल स्वरूप में आती हैं अथवा प्रभावित होती हैं।

मृदा में सबसे अधिक मात्रा में क्वार्टज खनिज पाया जाता हैं।

ऐपेटाइट नामक खनिज से मृदा को सबसे अधिक मात्रा में फास्फोरस प्राप्त होता हैं।

वनस्पति मिट्टी में ह्युमस की मात्रा निर्धारित करती हैं।

मृदा में सामान्यतः जल 25 प्रतिशत होता हैं।

जलवायु मिट्टी में लवणीकरण, क्षारीयकरण, कैल्सीकरण, पाइजोलीकरण में सबसे महत्त्वपूर्ण कारक हैं। मृदा को जीवीत तंत्र की उपमा प्रदान की गई हैं।

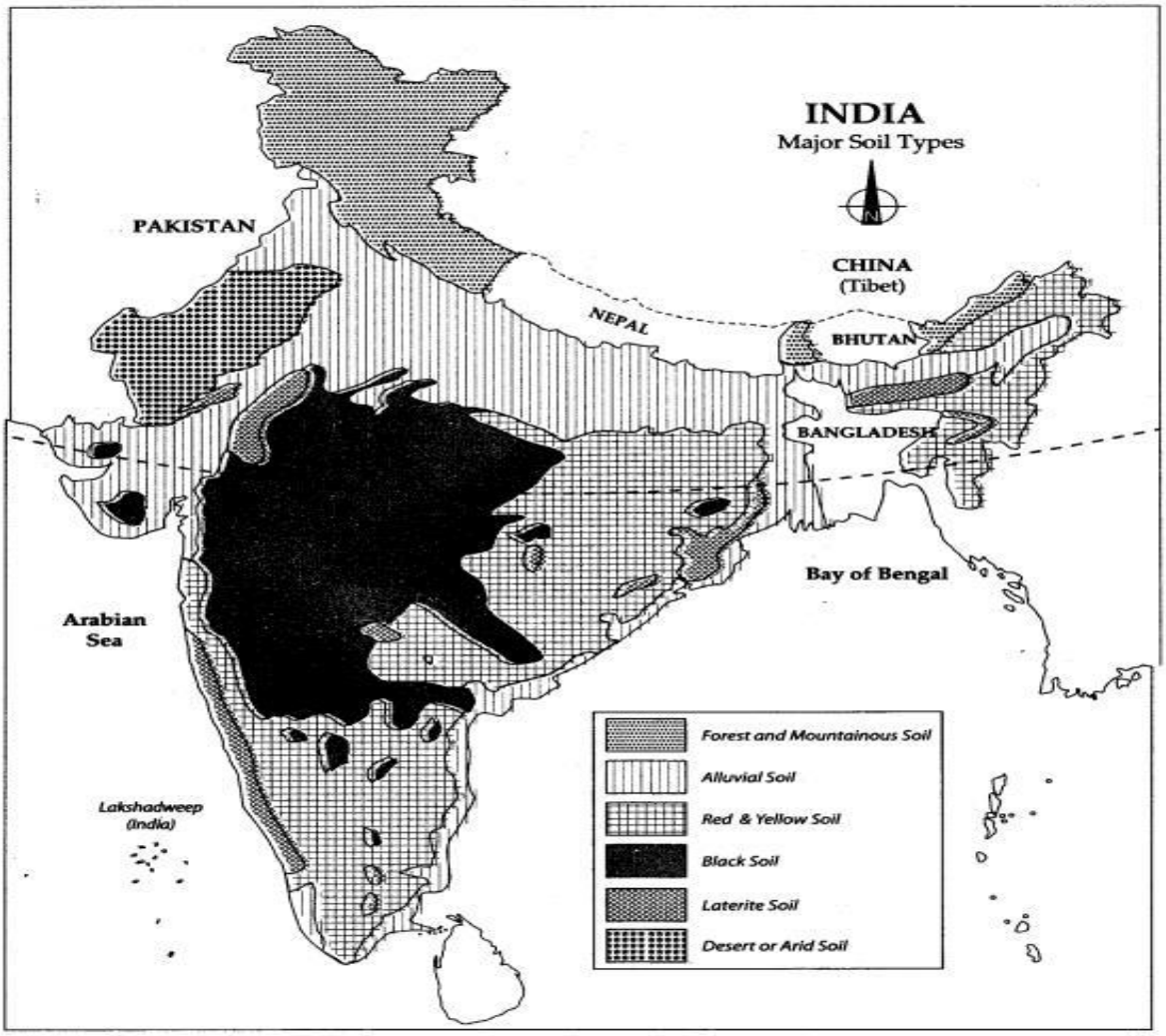

I.जलोढ़ मिट्टी –

- यह भारत में लगभग 15 लाख वर्ग कि.मी. (43.4%) क्षेत्र पर विस्तृत हैं।
- इस मृदा का निर्माण नदियों द्वारा लाए गए तलछट के निक्षेपण से हुआ है / इस प्रकार यह एक अक्षेत्रीय मृदा है
- इस मृदा के दो प्रमुख क्षेत्र है –
- उत्तर क विशाल मैदान
- तटवर्ती मैदान
- जलोढ़ मृदा नदियों की घाटियों एवं डेल्टाई भाग में भी पाएँ जाते है
- ये नदियों द्वारा निर्मित मैदानी भाग में पंजाब से असम तक तथा नर्मदा, ताप्ती, महानदी, गोदावरी, कृष्णा व कावरी के तटवर्ती भागों में विस्तृत हैं।
- यह मिट्टी उच्च भागों में अपरिपक्व तथा निम्न क्षेत्रों में परिपक्व हैं।

- नई जलोढ़ मिट्टी से निर्मित मैदान खादर कहलाते हैं
- पुरानी जलोढ़ मिट्टी के मैदान बांगर कहलाते हैं।
- इनमें पोटाश व चुना प्रचुर मात्रा में पाया जाता है, जबकि फास्फोरस, नाइट्रोजन व जीवांश का अभाव पाया जाता हैं।
- यह उपजाऊ मृदा है
- इस मृदा को काँप मृदा या कछारी मृदा भी कहा जाता है

इस मृदा को तीन भागो में बाँटा जाता है-

।.तराई मृदा

- इस मृदा में महीन कंकड़, रेत, चिकनी मृदा, छोटे – छोटे पत्थर आदि पाएँ जाते है
- इस मृदा में चट्टानी कणों के होने से जल ग्रहण की क्षमता अधिक होती है
- इस मृदा में चूने की मात्रा अधिक होती हैं
- यह गन्ने की कृषि के लिए उपयुक्त होता है
- 2.बांगर मृदा
- यह पुरानी जलोढ़ मृदा है यह मृदा सतलज एवं गंगा के मैदान के उपरी भाग तथा नदियों के मध्यवर्ती भाग में पाई जाती है
- यहाँ बाढ़ का पानी नही पहुचं पाता है
- इस मृदा में चीका एवं बालू की मात्रा लगभग बराबर होता है
- यह मृदा रबी के फसल के लिए उपयुक्त होता है

3.खादर मृदा

- यह नवीन जलोढ़ मृदा है यहाँ प्रत्येक वर्ष बाढ़ का पानी पहुँचने से नवीनीकरण होता रहता है।
- यह मृदा खरीफ के फसल के लिए उपयुक्त होता है

2.**लाल-पीली मिट्टी –**

- यह देश के लगभग 6.। लाख वर्ग कि.मी. (।४.6%) भू-भाग में हैं।
- इस मिट्टी का विकास आर्कियन ग्रेनाइट, नीस तथा कुड़प्पा एवं विध्यन बेसिनों तथा धारवाड़ शैलों की अवसादी शैलो के उपर हुआ हैं।

- इनका लाल रंग लौह ऑक्साइड की उपस्थिति के कारण हुआ है।
- यह मिट्टी आंशिक रूप से अम्लीय प्रकार ही होती हैं। इसमें लोहा, एल्युमिनियम तथा चूने का अंश कम होता हैं तथा जीवांश, नाइट्रोजन तथा फास्फोरस की कमी पाई जाती हैं।
- यह मृदा झारखण्ड के संथाल परगना अवाम छोटा नागपुर का पठार पश्चिम बंगाल के पठारी क्षेत्र तमिलनाडु कर्नाटक दक्षिण – पूर्व महाराष्ट्र पश्चिमी एवं दक्षिणी आंध्रप्रदेश मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के अधिकांश भाग ओडिशा एवं उत्तर प्रदेश के झाँसी ललितपुर मिर्जापुर में पाई जाती है /
- इस प्रकार के मृदा में मुख्यत : दलहन चावल एवं मोटे अनाज की कृषि की जाती है
- तमिलनाडु व कर्नाटक में इस मृदा में रबड़ एवं कहवा का विकास किया जा रहा है

3.**काली मिट्टी –**

- इसमें जलधारण क्षमता सबसे अधिक होती हैं।
- स्थानीय भाषा में इसे रेगुर कहा जाता हैं।
- इसके अतिरिक्त यह मिट्टी उष्ण कटिचरनोजम तथा काली कपासी मिट्टी के नाम से जानी जाती हैं।
- इस मिट्टी का काला रंग टिटेनीफेरस मैग्नेटाइट एवं जीवांश की उपस्थिति के कारण होता हैं।
- यह सर्वाधिक मात्रा में महाराष्ट्र में पाई जाती हैं।

इसका निर्माण दक्कन ट्रेप के लावे से

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी हे जो आपको **"राजस्थान पुलिस कांस्टेबल"** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **"राजस्थान पुलिस कांस्टेबल"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

अध्याय – 8

प्रमुख खनिज एवं ऊर्जा संसाधन

भारत में खनिजों का वितरण -

खनिज संसाधनों की मेखलाऐ (Belts of Mineral Resources)

भारत में खनिजों का वितरण समान नहीं हैं। भारत में पाये जाने वाले विविध प्रकार के खनिजों को उनके वितरण के अनुसार निम्न मेखलाओं में सीमाबद्ध किया जा सकता है।

1. **बिहार-झारखण्ड-उड़ीसा-पश्चिम बंगाल मेखला :** यह मेखला छोटा नागपुर व समीपवर्ती क्षेत्रों में फैली हुई हैं। यह मेखला लौह अयस्क मैंगनीज, तांबा, अभ्रक, चूना पत्थर, इल्मेंनाइट, फास्फेट, मॉक्साइट आदि खनिजों की दृष्टि से धनी है। इसमे झारखण्ड खनिज उत्पादन की दृष्टि से प्रमुख राज्य है।
2. **मध्यप्रदेश-छत्तीसगढ़-आन्ध्रप्रदेश-महाराष्ट्र मेखला :** इस मेखला में भी लौह अयस्क, मैंगनीज, बॉक्साइट, चूना पत्थर, ऐस्बेस्टॉस, ग्रेफाइट, अभ्रक, सिलिका, हीरा आदि बहुलता से प्राप्त होते हैं।
3. **कर्नाटक-तमिलनाडु मेखला :** यह इखला सोना, लिग्नाइट, लौह अयस्क, तांबा, मैंगनीज, जिप्सम, नमक, चूना पत्थर के लिए प्रसिद्ध हैं।
4. **राजस्थान-गुजरात मे**खला : यह मेखला पैट्रोलियम, प्राकृतिक गैस, यूरेनियम, तांबा, जस्ता, घीया पत्थर, जिप्सम, नमक, मुल्तानी मिट्टी आदि खनिजों की दृष्टि से धनी है।
5. **केरल मेखला :** केरल राज्य में विस्तृत इस मेखला में इल्मेनाइट, जिरकन, मोनोजाइट आदि अणुशक्ति के खनिज, चिकनी मिट्टी, गार्नेट आदि बहुलता से पाये जाते है।

भारत में उपलब्ध खनिज संसाधन (Available Mineral Resources in India)

वृहद तौर पर भारत में 125 प्रकार के ज्ञात खनिजों में आर्थिक दृष्टि से बड़े पैमाने पर महत्त्वपूर्ण खनिजों की संख्या 35 हैं। योजना आयोग ने भारत में खनिजों की उपब्धता व महत्ता के आधार पर 3 श्रेणियों में विभक्त किया है। पर्याप्त उत्पादन के साथ आर्थिक महत्त्व वाले खनिज : लौह अयस्क, मैंगनीज, अभ्रक, कोयला, सोना, इल्मेनाइट, बॉक्साइट व भवन निर्माण सामग्री आदि । 2. पर्याप्त संरक्षित भण्डार वाले खनिज : औद्योगिक मिट्टियां,

क्रोमाइट, अणु खनिज आदि। 3. औद्योगिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण किन्तु अल्प उपलब्धता वाले खनिज : टिन, गन्धक, निकल, तांबा, कोबाल्ट, ग्रेफाइट, पारा, खनिज तैल आदि।

नवीन भू-गर्भिक सर्वेक्षणो द्वारा देश मे प्राकृतिक गैस, खनिज तेल, सीसा, जस्ता, ताश, सोना पाइराइट, फास्फेट, जिप्सम, लिग्नाइट आदि आर्थिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण खनिजों के नये भण्डार पाएं गये हैं। भारत में खनिज संसाधनों के भण्डार : देश मे प्रमुख खनिजों के संरक्षित भण्डार निम्नानुसार है।

लौह अयस्क (Iron Ore)

- आधुनिक औद्योगिक सभ्यता का आधारभूत खनिज - लौह अयस्क के भण्डार व उत्पादन की दृष्टि से भारत विश्व का एक महत्त्वपूर्ण देश हैं।
- भारत में लौह अयस्क मुख्यतः प्रायद्वीपीय धारवाड़ संरचना में पाया जाता है
- विश्व के कुल लौह अयस्क का लगभग 3 प्रतिशत भारत में निकाला जाता है
- कुल उत्पादन का 50 प्रतिशत से भी अधिक निर्यात कर दिया जाता है
- गोवा में उत्पादित होने वाले संपूर्ण लौह अयस्क को निर्यात कर दिया जाता है।

लौह अयस्क के प्रकार (Types of Iron - Ore)

भारत में लौह अयस्क मुख्यत: 4 प्रकार का प्राप्त होता है :

1. मैग्नेटाइट 2. हेमेटाइट 3. लोमोनाइट 4. सिडेराइट

मैग्नेटाइट : यह सर्वोच्च किस्म का लौह अयस्क होता है, जिसमें शुद्ध धातु का अंश 72 प्रतिशत तक होता है। इसका रंग काला होता है। इसमें चुम्बकीय लोहे के ऑक्साइड होते हैं। मैग्नेटाइट अयस्क के भण्डार कर्नाटिक, आन्ध्रप्रदेश, तमिलनाडु, गोवा, झारखण्ड आदि राज्यों में पाये जाते हैं। 2. हेमेटाइट : यह लाल या भूरे रंग का होता है। इसमें शुद्ध धातु की मात्रा 60-70 प्रतिशत तक होती है। यह मुख्यत: झारखण्ड, मध्यप्रदेश, उड़ीसा, महाराष्ट्र, कर्नाटिक व गोवा राज्यों में मिलता है। 3. लिमोनाइट : इसका रंग पीला या हल्का भूरा होता है। इसमें 40 से 60 प्रतिशत तक शुद्ध धातु का अंश होता है। पश्चिम बंगाल, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश आदि राज्यों में इस किस्म का लौहा पाया जाता है ।। 4. सिडेराइट ; इस किस्म के लौहे का रंग हल्का भूरा होता है। इसमें धातु का अंश 40 से 48 प्रतिशत तक होता है तथा अशुद्धियां अधिक होती है।

लौह अयस्क के संरक्षित भण्डार (Reserves of Iron - ore)

विश्व परिप्रेक्ष्य में लौह अयस्क के संचित भण्डारों की दृष्टि से भारत बहुत धनी देश हैं। सर्वेक्षण के अनुमानों के अनुसार भारत में विश्व के कुल संचित भण्डार का एक चौथाई भाग निहित हैं। कच्चे लौहे की दृष्टि से भारत का विश्व में प्रथम स्थान हैं।

लौह अयस्क के उत्पादन का प्रादेशिक वितरण

(Regional Distribution of Iron Production)

विश्व में लौह अयस्क उत्पादक राज्यों में भारत का सातवां स्थान हैं। देश में लौह अयस्क उत्पादन में स्वतंत्रता प्राप्ति पश्चात् निरन्तर वृद्धि हुई है। वर्ष 1950-51 में लौह अयस्क का उत्पादन जहां 4.1 मिलियन टन (मूल्य लगभग 3 करोड़ रू.) था, वह 10 वर्ष पश्चात् 1960 - 61 में 4 गुना बढ़कर 14.7 मिलियन टन हो गया।

कर्नाटक :

यह राज्य भारत के लौह अयस्क उत्पादक राज्यों में अग्रणीय राज्य हैं। जो देश के कुल लौह अयस्क का लगभग एक चौथाई भाग उत्पन्न करता है।

उड़ीसा :

यहाँ देश का लगभग 22 प्रतिशत लौह अयस्क प्राप्त होता हैं। यहाँ लौह अयस्क उत्पादन की दृष्टि से मयूरभंज जिलें में गोरुमा हिसानी बादाम पहाड़, सुलेपट मुख्य हैं जहां लौहांश की मात्रा 60 प्रतिशत से अधिक हैं।

छत्तीसगढ़ :

यह राज्य देश के कुल लौह अयस्क का लगभग 20 प्रतिशत उत्पादन करता हैं। यहाँ उत्तम किस्म का मैग्नेटाइट व हेमेटाइट लौह अयस्क पाया जाता हैं। यहां मुख्य लौह अयस्क उत्पादक जिलों में बस्तर, दुर्ग रायगढ, बिलासपुर, मण्डला, बालाघाट सरगूजा आदि है।

गोवा:

भारत के अन्य लौह अयस्क उत्पादन खनन क्षेत्रों की तुलना में यहां की खनन क्षेत्रों का विकास तीव्र गति से हुआ है। वर्तमान समय में यह देश का लगभग 18 प्रतिशत लौह अयस्क उत्पादन करने वाला राज्य हैं हालांकि कुछ वर्षों तक इसका प्रथम स्थान भी रहा।

झारखण्ड:

खनिजों की दृष्टि से इस धनी राज्य को देश के लौह अयस्क संरक्षित भण्डारों का लगभग 25 प्रतिशत भाग अवस्थित हैं तथा देश के कुल लौह अयस्क उत्पादन का लगभग 18 प्रतिशत इस राज्य से प्राप्त होता है।

महाराष्ट्र :

इस राज्य के लौह अयस्क उत्पादक क्षेत्र इसके पूर्वी तथा दक्षिण पश्चिम दो धुरी क्षेत्रों में विस्तृत है। प्रथम पूर्वी धूरी क्षेत्र चांदा जिलें में अवस्थित हैं - इस क्षेत्र में पीपलगांव देवलागांव लोहरा, सूरजगढ, असोला मुख्य खदानें हैं।

आन्ध्रप्रदेश :

अधिकांशत: इस राज्य में 50 से 60 प्रतिशत शुद्धता वाले लौह अयस्क के जमाव पाये जाते हैं, कुछ क्षेत्रों में मैग्नेटाइट किस्म के लौह अयस्क के भी संरक्षित भण्डार पाये जाते हैं।

गुजरात :

यही लिमोनाइट किस्म का लौह अयस्क पाया जाता हैं। यहाँ पोरबन्दर, भावनगर, नवागर बड़ोदरा जूनागढ, खाण्डेश्वर आदि लौह अयस्क उत्पादक जिलें मुख्य हैं।

केरल :

इस राज्य में कोजीकोडे जिला लौह अयस्क उत्पादन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं। यहीं इलीचेतीमाला चेहरा, आलमयादा नानभिडा आदि प्रमुख लौह अयस्क उत्पादक क्षेत्र हैं। यहां मैग्नेटाइट किस्म का लौह अयस्क पाया जाता हैं।

राजस्थान :

राजस्थान में हेमेटाइट किस्म का लौह अयस्क पाया गया हैं। लौह अयस्क उत्पादन की दृष्टि से राजस्थान एक महत्त्वपूर्ण राज्य नहीं हैं। यहाँ लौह अयस्क उत्पादक क्षेत्रों में जयपुर जिलें में मोरीजा बानोल क्षेत्र, दौसा जिलें नीमला उदयपुर जिलें में नाथरा की पाल मुख्य हैं।

लौह अयस्क का व्यापार (Trade of Iron ore)

भारत के विदेशी व्यापार में लौह अयस्क के निर्यात की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। अनुमान हैं कि भारत में कुल खनिज निर्यात मूल्य में 60 प्रतिशत योगदान लौह अयस्क प्रदान

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **"राजस्थान पुलिस कांस्टेबल"** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे

*हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी "**राजस्थान पुलिस कांस्टेबल**" की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /*

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063 , 8504091672

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय -II

अन्य महत्त्वपूर्ण one liner तथ्य

भारत का भूगोल: -

1. पूर्वी तटीय मैदान का एक अन्य नाम कोरोमंडल तटीय मैदान है।
2. भारतीय मानक समय 82.5° E रेखांश पर अपनाया जाता है।
3. भारत का मानक समय ग्रीनविच माध्य समय से $5\frac{1}{2}$ घंटे आगे है।
4. भारत के दक्षिण छोर का नाम निकोबार द्वीप में स्थित इंदिरा पॉइंट है।
5. भारत के दक्षिणी छोर को इंदिरा पॉइंट कहा जाता है।
6. क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत संसार का सातवां सबसे बड़ा देश है।
7. भारत का क्षेत्रफल, पाकिस्तान से लगभग चार गुना बड़ा है।
8. भारतीय उपमहाद्वीप मूलतः गोंडवानालैंड का एक अंग था।
9. दक्षिण ध्रूव प्रदेश (अंटार्कटिका) में स्थित भारत के स्थायी अनुसंधान केंद्र का नाम दक्षिण गंगोत्री है।
10. हिमाचल प्रदेश के किन्नौर जिले की सीमा चीन के साथ लगती है।
11. भारत का सबसे बड़ा संघ राज्य क्षेत्रअंडमान और निकोबार द्वीपसमूह है।
12. राज्यों अरुणाचल प्रदेश, असम और मणिपुर समूह के साथ नागालैंड की साझी सीमाएं हैं।
13. भारत के राजस्थान राज्य का क्षेत्रफल सबसे अधिक है।
14. आन्ध्र प्रदेश राज्य की तटरेखा सबसे लंबी है।
15. भारत की तटरेखा7500 किमी है।
16. लक्षद्वीप द्वीपसमूह अरब सागर में स्थित है।
17. लक्षद्वीप में 36 द्वीपसमूह हैं।
18. अंडमाननिकोबार द्वीप में 'गद्दीदार चोटी' (सैडिल पीक) उत्तरी अंडमानमें स्थित है।
19. पश्चिम बंगाल की सीमाएं तीन देशों के साथ लगती हैं।
20. आन्ध्रप्रदेश और तमिलनाडु के तटीय भू-भाग को कोरोमंडल कहते हैं।
21. केरल के तट को मालाबार तट कहते हैं।
22. भारत की सबसे लंबी सुरंग, जवाहर टनल जम्मू और कश्मीर राज्य में स्थित है।

23. 'स्मार्ट सिटी' कोचीन में स्थापित की जा रही है।
24. दीव एक द्वीप गुजरात से हट कर है।
25. "गुजरात तट से दूर जिस विवादास्पद तटीय पट्टी पर भारत और पाकिस्तान बातचीत कर रहे हैं, उसका नाम सर क्रीक है।
26. प्रस्तावित समुद्र मार्ग 'सेतुसमुद्रम' मन्नार की खाड़ी समुद्री वीथिकाओं (Sea-lanes) से गुजरने वाली नहर है।
27. भारत का पुडुचेरी संघ शासित प्रदेश ऐसा है, जिसमें चार जिलें हैं, किंतु उसके किसी भी जिलें की सीमा, उसके किसी अन्य जिलें की सीमा से नहीं मिलती।
28. संघ राज्य क्षेत्र पुडुचेरी की सीमा कर्नाटक के साथ नहीं लगती हैं।
29. झीलों के अध्ययन को लिम्नोलाजी कहते हैं।
30. जोजी-ला दर्रा श्रीनगर और लेह को जोड़ता है।
31. कुल्लू घाटी धौलाधर और पीर पंजाल के बीच स्थित है।
32. कुल्लू घाटी धौलाधर और पीर पंजाल पर्वतीय श्रेणियों "पर्वत मालाओं" के बीच स्थित है।
33. हिमाचल प्रदेश में स्थित दर्रा शिपकिला है।
34. माउंट एवरेस्ट को सागरमाथा भी कहते हैं।
35. हिमालय की सबसे पूर्वी चोटी नमचा बरवा है।
36. गोडविन आस्टिन एक शिखर है।
37. भारत में सबसे ऊँची चोटी के-2 गोडविन आस्टिन है।
38. अरावली पर्वत हिमालयी श्रृंखला
39.
40. का अंग नहीं है।
41. बृहत्तर (ग्रेटर) हिमालय का दूसरा नाम हिमाद्रि है।
42. नाग तीबा और महाभारत पर्वत मालाएं निम्न-हिमालय में शामिल हैं।
43. भारत में सबसे ऊँचा पठार लद्दाख पठार है।
44. प्रायद्वीप भारत में उच्चतम पर्वत चोटी अनाईमुडी है।
45. अनाईमुडी शिखर सह्याद्री में स्थित है।
46. पीर पंजाल पर्वत श्रेणी भारत में स्थित है।
47. पंचमढ़ी पर्वतीय स्थल को 'सतपुड़ा की रानी' कहते हैं।
48. लोकटक झील, जिस पर जलविद्युत परियोजना का निर्माण किया गया था, मणिपुर राज्य में स्थित है।
49. 'लोकटक' एक झील है।

50. लोनार झील महाराष्ट्र में स्थित है।
51. सबसे बड़ी मानव निर्मित झील गोविद सागर है।
52. नागा, खासी और गारो पहाड़ियां पूर्वांचल पर्वतमाला में स्थित हैं।
53. शिवसमुद्रम जलप्रपात कावेरी नदी के मार्ग में पाया जाता है।
54. शिवसमुद्रम कावेरी नदी द्वारा बनाया गया जलप्रपात है।
55. बलतोड़ा हिमनद कराकोरम पवर्तमाला में स्थित है।
56. भारत का सबसे ऊँचा जलप्रपात कर्नाटक राज्य में है।
57. सबसे ऊँचा भारतीय जलप्रपात गरसोप्पा है। जोग एक गैर पंकितबद्ध शब्द हैं।
58. ऊँचे क्षेत्रों में लैटेराइट मृदा की रचना अम्लीयहोती है।
59. पर्वतीय स्लोपों पर मृदा अपरदन को समोच्च रेखीय जुताई द्वारा नियंत्रित किया जा सकता है।
60. भारतीय उत्तरी मैदानों की मृदा सामान्यतः तलोच्चन द्वारा बनी है।
61. कपास के उत्पादन के लिए सबसे अच्छी मिट्टी काली लावा मिट्टी है।
62. लोनी और क्षारीय मृदा का भारत में एक और नाम कल्लर है।
63. व्यर्थ भूमि के अंतर्गत अधिकतम क्षेत्र वाला राज्य राजस्थान है।
64. पेट्रोलाजी में चट्टानका अध्ययन किया जाता है।
65. मृदा की लवणता चालकता से मापी जाती है।
66. भारत के भू-भाग में 35 प्रतिशत भाग पर वर्ष में 75 सेमी. से कम वर्षा होती है।
67. भारत का सबसे सूखा भाग पश्चिम राजस्थान है।
68. भारत की जलवायु मानसूनी है।
69. अक्टूबर और नवंबर के महीनों में भारी वर्षा कोरोमंडल तट पर होती है।

उत्तरी पूर्वी मानसून से तमिलनाडु प्रदेश में वर्षा

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **"राजस्थान पुलिस कांस्टेबल"** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है

कि ये नोट्स आपकी **"राजस्थान पुलिस कांस्टेबल"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063 , 8504091672

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय - 12

पारिस्थितिकी और वन्य जीव

पारिस्थितिकी -

पारिस्पितिकी विज्ञान विज्ञान की वह शाखा है जिसके अन्तर्गत जीव- विज्ञान तथा भूगोल के मौलिक सिद्धात की पारस्परिक व्याख्या की जाती है अर्थात किसी कालखण्ड विशेष मे, किसी स्थान पर जीवों का उसके पर्यावरण के साथ पारस्परिक सम्बन्धो का अध्ययन पारिस्थितिकी हलाता है।

Ecology लैटिन भाषा के 2 शब्दो से मिलकर बना हुआ - OIKOS ओर LOGOS जहाँ OIKOS से आशय है निवास स्थान जबकि LOGOS अध्ययन शब्द को प्रतिबिम्बित करता है अर्थात् किसी जीव के निवास स्थान या आवास के अध्ययन को पारिस्थितिकी कहा जाता है।

इकोलॉजी शब्द के जन्मदाता राइटर महोदय है जबकि इस शब्द की सैहदान्तिक व्याख्या अर्नेस्ट हैकल ने प्रस्तुत की थी इसलिए पारिस्थितिक विज्ञान या जन्मदाता हैकल को ही समझा जाता है।

Leveles of ecological study [पारिस्थितिक विज्ञान अध्ययन के विभिन्न स्तर]

1. जनसख्या (Population)
2. समस्ती (Cummunity)
3. पारितन्त्र (Eco-System)
4. बायोम (जीबोम)
5. जैवमण्डल (Bio-sphere)

1. **जनसंख्या:-** किसी निश्चित कालखण्ड में स्थान विशेष पर समान प्रजाति मे पाये जाने वाले जीवों की कुल संख्या को परिस्थितिक जनसंख्या कहते है।

यहाँ प्रजाति से आशय है वह जैव-समूह जिसमे स्वरूपगत , आनुवाशिक भिन्नता हो तथा सफल लैंगिग एवं अलैंगिक प्रजनन पाया जाता है। जनसंख्या पारिस्थितिकी के अध्ययन की सबसे छोटी इकाई है।

2. समुदाय- समुदाय निर्धारित स्थान - विशेष मे जीवो का वैसा समूह है जो की एक-दूसरे से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से अंतर्सम्बन्धित होते है। अर्थात् समुदाय की आवश्यक शर्त है की इसमे विभिन्न प्रजातियाँ पारिस्थितिक उर्जा के लिए एक-दूसरे पर आश्रित होती है।

3. पारिस्थितिक तन्त्र – पारिस्थितिकी तन्त्र पारिस्थितिकी विज्ञान के अन्तर्गत सूक्ष्म से लेकर ब्रह्द क्रियात्मक इकाई है जिसमे जैविक एवं अजैविक घटको के मध्य अन्तर्सम्बन्धो से उत्पन्न उर्जा प्रवाह का अध्ययन किया जाता है।

पारिस्थिति तन्त्र शब्द के जन्मदाता आर्थर टान्सले महादय हैं परन्तु इसकी सैंधान्तिक व्याख्या E.P. Odem महोदय ने अपनी पुस्तक Fundamental of Ecology मे की है इसलिए Father of Ecosystem Odem महोदय को कहा जाता है।

Types of EcSo-system - क्रियात्मकता के आधार पर पारितन्त्र 2 प्रकार के होते हैं-

1. प्राकृतिक पारितन्त्र 2. क्रत्रिम पारितन्त्र

1. **प्राकृतिक पारितन्त्र-** पारितन्त्र का वह अंग है जिसमें मानवीय हस्ताक्षेप नहीं होता इसके 2 महत्वपूर्ण अंग हैं-

(अ) स्थलिय पारितन्त्र, घासभूमि पारितन्त्र, मरुभूमि पारितन्त्र etc.

(ब) जलीय पारितन्त्र- जलीय पारितन्त्र स्वभावतः 2 प्रकार का होता है-

(1) प्रवाही जल का पारितन्त्र

(2) स्थायी जल का पारितन्त्र

स्थायी जल का पारितन्त्र विभिन्न प्राक्रतिक पारितन्त्र में सर्वाधिक स्थिर पाया जाता है। सागरिय पारितन्त्र जलीय पारितन्त्रों में सर्वाधिक स्थिर है।

2 **क्रत्रिम पारितन्त्र-** पारितन्त्र का वह अंग जोकि मानव द्वारा अपनी आवश्यकताओं के अनिरुप निर्मित किया जाता है उसे क्रत्रिम पारितन्त्र कहते हैं जैसे - कृषि भूमि का पारितन्त्र।

पारितन्त्र के घटक- क्रियात्मक पारितन्त्र मे मुख्य रुप से 2 प्रकार के घटक पाये जाते हैं जाकि एक-दूसरे से ऊर्जा प्रवाह द्वारा जूडे होते हैं।

(1) अजैविक घटक- पारितन्त्र के अजैविक घटक तीन वर्गो में विभक्त किये जा सकते हैं-

(1) कार्बनिक घटक- कार्बनिक घटकों का निर्माण पारितन्त्र में विभिन्न जैव- रासायनिक प्रकियाओं द्वारा होता है इसलिए इन्हे रासायनिक घटको के नाम से भी जानते हैं जैसे- कार्बोहाइड्रेटस, प्रोटिन, वसा आदि।

(2) भौतिक घटक- इन्हे जलवायुविक घटाकों की भी श्रेणी में रखते हैंजैसे तापमान, आद्रता, वायुमण्डलिय दाब, पवन परिसंचरण आदि के साथ-साथ उँचाई।

(3) खनिज घटक- अजैविक घटकों में पारितन्त्र में खनिजों का महत्वपूर्ण योगदान हैं जोकि विभिन्न पोषण स्तरों में चक्रीय प्रवाह के रूप में प्राप्त होते हैं। जैसे- कैल्शियम, सोडियम, पोटेशियम, P, fe, Cu, O 2 आदि।

(2) **जैविक स्वपोषि-** वह जैव समुदाय जोकि भौतिक तत्वों से अपने लिए स्वयं भोज्य ऊर्जा उत्पन्न करता हैंउन्हे स्वपोषि कहा जाता हैं। इनके 2 महत्वपूर्ण वर्ग हैं-

1. प्राकाश संश्लेषीत जीव- जोकि सूर्य से प्राप्त उर्जा द्वारा अपना भोजन निर्मित करता हैं इसके अन्तर्गत मुख्य रूप से पादप समूह आते हैं।

2. रासायनिक संश्लेषीत जीव- वह सूक्ष्म जीव जोकि सूर्य प्रकाश की अनुपस्थिति में जैव-रासायनिक प्रक्रिया द्वारा अपना भोजन निर्माण करते हैं।

परपोषी- वह जैव समूह जोकि अपने भोज्य उर्जा हेतु स्वपोषियों पर निर्भर करता हैं उसे परपोषी जैव समूह कहते हैं इसे 2 वर्गो में रखा जाता हैं-(1) Marco (2) Micro

Functionality of the Eco-system-

(1) पारितन्त्र में उर्जा का प्रवाह विभिन्न पोषण स्तरों में हमेशा एकदिशीय होता हैं-

(2) पारितन्त्र कर सन्तुलन उर्जा प्रवाह पर ही निर्भर करता हैं।

(3) एक पोषण स्तर से दूसरे पोषण स्तर में स्थानान्तरित होती हुई उर्जा के अधिकांश मात्रा का ह्रास हो जाता हैं परन्तु उर्जा विनिष्ट नही होती।

(4) लिण्डमैन के अनुसार प्रत्येक पोषण स्तर में उर्जा का स्थानान्तरण केवल 10% होता हैं इसे लिण्डमैन के 10% का नियम कहा जाता हैं।

(5) पारितन्त्र में स्थानान्तरित उर्जा, उर्जा संरक्षण के नियम का पालन करती हैं अर्थात् उर्जा न तो उत्पन्न होती हैं और न ही विनष्ट बल्कि प्रत्येक पोषण स्तर में यह भिन्न-भिन्न जैव-रासायनिक पदार्थो के रूप में संचित होती हैं।(10%नियम का कम/अधिक होना परितन्त्र सन्तुलित नही हैं।)

(6) पारितन्त्र में उर्जा का महत्वपूर्ण स्त्रोत सूर्य हैं अर्थात् सूर्य से प्राप्त उर्जा पारितन्त्र में क्रियात्मक उत्पन्न करती हैं।

(7) उर्जा स्थानान्तरण को हम निम्नलिखित प्रकार से देख सकते हैं।(10:उष्मा श्वसन और अपघटन में नष्ट हो जाती हैं)

पोषण स्तर [Tropic Level]

उत्पादक →उपभोक्ता→IIउपभोक्ता→IIIउपभोक्ता

लिण्डमैन महोदय के अनुसार पारितन्त्र में उर्जा संग्रहण उत्पादक समूह द्वारा की जाती हैं। उत्पादकों से उपभोकताओं में उर्जा का स्थानान्तरण चरणबध्य प्रक्रिया से होता हैं इसके प्रत्येक चरणों को ही पोषण स्तर कहा जाता हैं।

पोषण स्तर 4 वर्गो में विभक्त हैं-

(1) पोषण स्तर I- इसके अन्तर्गत स्वपोषी जैव समूह आता हैं। जिसे उत्पादक भी कहा जाता हैं। जैसे- हरे पौधे या वनस्पतियाँ, वह सूक्ष्म जीव जोकि रासायनिक संश्लेषण करते हैं वह प्रथम पोषण स्तर में आते हैं।

(2) पोषण स्तर 2- यह उपभोक्ताओं का प्रतिनिधित्व करने वाला वर्ग हैं जिसमे प्रथम श्रृणी के उपभोक्ता अर्थात् शाकाहारी समूह को सम्मिलित किया जाता हैं। जैसे- गाय, हिरण etc.

(3) पोषण स्तर 3- इसमें द्वितीय श्रृणी का उपभोक्ता समूह आता हैं जिसे माँसाहारी कहते हैं। जैसे- बाघ, शेर etc.

(4) पोषण स्तर 4- इसमें तृतीय श्रृणी का उपभोक्ता समूह सम्मिलित किया जाता हैं जिसे सर्वाहारी कहते हैं। जैसे- मानव, कुत्ता, बिल्ली

पारिस्थितिक तन्त्र मे उत्पादकता उत्पादक समूह द्वारा जैव-रासायनिक प्रक्रिया से या प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया से अर्जित की गई या संचित की गई कुल उर्जा की माता को ही पारितन्त्र की उत्पादकता कहते हैं यह 2 प्रकार की होती हैं-

(1) प्राथमिक उत्पादकता (2) द्वितीय उत्पादकता

उत्पादक समूहों द्वारा प्रकाश संश्लेषण या रासायनिक संश्लेषण द्वारा संचित ऊर्जा का मात्रा को प्राथमिक उत्पादकता कहते हैं जैसे वनस्पति समूह की उत्पादकता। प्राथमिक उत्पादकता 2 प्रकार की होती हैं-

1. **सकल प्राथमिक उत्पादकता (GPP)**- उर्जा की कूल संचित मात्रा

2. **शुद्ध प्राथमिक उत्पादकता (NPP)**- श्वसन आदि क्रियाओं के उपरान्त उत्पादको में शेष बची हुइ उर्जा की मात्रा जिसका प्रयोग जैव-द्रव्यय निर्माण में किया जाता हैं। जैव द्रव्यमान जैव समूह का शुष्क भार होता हैं जिसे kg cal/cm 2 दिन के आधार पर मापा जाता हैं। विषुक्त रेखा से ध्रुवों की ओर जाने

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको ***"राजस्थान पुलिस कांस्टेबल"*** *के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी* ***"राजस्थान पुलिस कांस्टेबल"*** *की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /*

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063 , 8504091672

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

जैव विविधता संरक्षण

आइए जानते हैं वनस्पतिजात और प्राणीजात के बचाव के क्या उपाय हैं:-

(1) वृक्षों को लगाना तथा वृक्षों के काटने पर प्रतिबंध।
(2) शिकार पर पूर्णतः प्रतिबंध तथा सख्त कानून लाना।
(3) घरेलू इंधन में सामाजिक वानिकी एवं कृषि वानिकी का उपयोग करना।
(4) लकड़ी के फर्नीचर की जगह अन्य वस्तुओं के फर्नीचर जैसे प्लास्टिक, लोहे आदि का प्रयोग करना।
(5) लोगों के बीच जागरूकता अभियान, सेमिनार एवं वन संरक्षण से संबंधित सम्मेलन आदि करना।
उपरोक्त उपायों से वन संरक्षण को बढ़ावा मिलेगा।

भारत में वन और वन्य जीवन का संरक्षण

प्राकृतिक आवास में रहने वाले जीव-जंतुओं को वन्य जीवन के रूप में जाना जाता है। वनों और वन्य जीवन में तीव्र गति से हो रहे ह्रास के कारण इनका संरक्षण आवश्यक हो गया है।

पेड़-पौधों और वन्य जीवन के संरक्षण के प्रमुख उद्देश्य:-

- पेड़-पौधों एवं वन्यजीवों के प्राकृतिक आवास की सुरक्षा।
- सुरक्षित क्षेत्रों में जीवों का उचित रख-रखाव।
- पेड़-पौधों एवं वन्यजीवों के लिए जैव मंडल रिजर्व के स्थापना करना।
- विश्व के जियो में अनुवांशिकी पदार्थ की वर्तमान श्रृंखला को बनाए रखना।
- अधिनियमों एवं कानून लाकर वन्य जीवों एवं पेड़-पौधों की रक्षा करना।

प्राकृतिक तथा मानवजनित कारकों के प्रभाव से होने वाली जैव विविधता हानि को बचाये जाने के लिए किये गये उपाय जैव विविधता संरक्षण के अन्तर्गत आते हैं।इन उपायों को 2 वर्गो में विभक्त किया जा सकता हैं-

(1) स्व स्थानिक संरक्षण (In-situ Conservation)

(2) परा स्थानिक संरक्षण (Ex-situ Conservation)

स्थानिक संरक्षण में जैव समुदाय का संरक्षण उसके उत्पति क्षेत्र पर ही किया जाता है जैसे- वन जीव अभ्यारण, राष्ट्रीय पार्क, बायोस्फीयर रिजर्व (जैव मण्डल आरक्षण) सामुदायिक आर्थिक क्षेत्र, पवित्र वन/उपवन।

जबकि परा स्थानिक संरक्षण के अन्तर्गत जैव-विविधता को जन्तु या पादप के उत्पति क्षेत्र से प्रथक स्थान पर संरक्षित करने का प्रयास किया जाता

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी हे जो आपको **"राजस्थान पुलिस कांस्टेबल"** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **"राजस्थान पुलिस कांस्टेबल"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063 , 8504091672

भारत की राजव्यवस्था

अध्याय – 5

नागरिकता

अर्थ एवं महत्व

भारत में दो तरह के लोग रहते हैं।

1. नागरिक (भारतीय राज्य के पूर्व सदस्य, राजनैतिक अधिकार प्राप्त)
2. विदेशी (ये अन्य राज्य के नागरिक होते हैं।)

विदेशी

मित्र (रूस) (भारत के साथ सकारात्मक सम्बन्ध)

शत्रु (पाक) (जिनसे भारत का युद्ध चल रहा हो।)

- विदेशी गिरफ्तारी व नजरबंदी के विरुद्ध सुरक्षित नहीं होते (Art- 22)

भारतीय नागरिकों को प्राप्त विशेषाधिकार जो विदेशियों को प्राप्त नहीं -

1. धर्म, मूल वंश, जाति, लिग या जन्म स्थान के आधार पर विभेद के विरुद्ध अधिकार (Art-15)
2. लोक नियोजन के विषय में समता का अधिकार (Art-16)
3. वाक स्वतंत्र एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, सम्मेलन, संघ, संचरण, निवास व व्यवसाय की स्वतंत्रता (Art - 19)
4. संस्कृति और शिक्षा संबंधी अधिकार (Art 29 व 30)।
5. लोकसभा और राज्य विधानसभा चुनाव में मतदान का अधिकार।
6. संसद एवं राज्य विधानमंडल की सदस्यता के लिए चुनाव लड़ने का अधिकार।

7. सार्वजनिक पदों, जैसे- राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, उच्चतम एवं उच्च न्यायलय के न्यायधीश, राज्यों के राज्यपाल, महान्यायवादी एवं महाधिवक्ता की योग्यता रखने का अधिकार।

<u>संवैधानिक उपबन्ध</u>

- संसद में नागरिकता अधिनियम 1955 को लागू किया जिसका 1957, 1960, 1985, 1986, 1992, 2003, 2015 में संशोधन किया गया।
- संविधान के अनुसार चार श्रेणियों के लोग भारत के नागरिक बने –

1. एक व्यक्ति, जो भारत का मूल निवासी है और तीन में से कोई भी एक शर्त पूरी करता है। ये शर्ते हैं- यदि उसका जन्म भारत में हुआ हो, या उसके माता-पिता में से किसी भी एक का जन्म भारत में हुआ हो या संविधान लागू हो के पांच वर्ष पूर्व से भारत में रह रहा हो।

2. एक व्यक्ति, जो पाकिस्तान से भारत आया हो और यदि उसके माता-पिता या दादा-दादी अविभाजित भारत में पैदा हुए हो और निम्न में से कोई एक शर्त पूरी करता हो, वह भारत का नागरिक बन सकता है- यदि वह 19 जुलाई, 1948 से पूर्व स्थानांतरित हुआ हो, अपने प्रवसन की तिथि से उसने समान्यतः भारत में निवास किया हो; और यदि उसने 19 जुलाई 1948 को या उसके बाद भारत में अवसन किया हो तो वह भारत के नागरिक के रूप में पंजीकृत हो, लेकिन ऐसे व्यक्ति का पंजीकृत होने के लिए छः माह तक भारत में निवास आवश्यक है। (Art - 6)

3. एक व्यक्ति, जो 1 मार्च, 1947 के बाद भारत से पाकिस्तान स्थानांतरित हो गया हो, लेकिन बाद में फिर भारत में पुनर्वसि के लिए लौट आये तो वह भारत का नागरिक बन सकता है। उसे पंजीकरण प्रार्थना पत्र के बाद छह माह तक रहना होगा (Art - 7)

4. एक व्यक्ति, जिसके माता पिता या दादा-दादी अविभाजित भारत में पैदा हुए हों लेकिन वह भारत के बाहर रह रहा हो। फिर भी वह भारत का नागरिक बन सकता है, यदि उसने भारत के नागरिक के रूप में पंजीकृत कूटनीनिज्ञ तरीके से पार्षदीय प्रतिनिधि के रूप में आवेदन किया हो। यह व्यवस्था भारत के बाहर रहने वाले भारतीयों के लिए बनाई गई है ताकि वे भारत की नागरिकता ग्रहण कर सके (Art-8)

नागरिकता का अर्जन

- जन्म से
- वंश के आधार पर
- पंजीकरण द्वारा
- प्राकृतिक रूप से
- क्षेत्र समाविष्ट द्वारा

नागरिकता की समाप्ति

- स्वैच्छिक त्याग
- बर्खास्तगी के द्वारा
- वंचित करने द्वारा

स्वैच्छिक त्याग :- एक भारतीय नागरिक जो पूर्ण आयु और क्षमता का हो। ऐसी घोषणा के उपरान्त वह भारत का नागरिक नहीं रहता। अपनी नागरिकता त्याग सकता है। यदि इस तरह की घोषणा तब हो जब भारत युद्ध में व्यस्त हो तो केन्द्र सरकार इसके पंजीकरण को एक तरफ रख सकती हैं। व्यक्ति के साथ प्रत्येक नाबालिक बच्चा भी भारतीय नागरिक नहीं रहता यद्यपि इस तरह के बच्चे की उम्र ।४ वर्ष होने पर भारतीय नागरिक बन सकता है।

बर्खास्तगी के द्वारा :

यदि कोई व्यक्ति स्वेच्छा से किसी अन्य देश की नागरिकता ग्रहण कर ले तो उसको भारतीय नागरिकता स्वयं बर्खास्त हो जायेगी । हालांकि यह व्यवस्था तब लागू नहीं होगी जब भारत युद्ध में व्यस्त हो ।

वंचित करने द्वारा :- केन्द्र सरकार द्वारा भारतीय नागरिक को आवश्यक रूप से बर्खास्त करना होगा यदि

(i) यदि नागरिकता फर्जी तरीके से प्राप्त की गयी हो ।

(ii) यदि नागरिक के प्रति अनादर जताया हो ।

(iii) यदि नागरिक में युद्ध के दौरान शत्रु के साथ गैर कानूनी रूप से संबंध स्थापित किया हो या उसे कोई राष्ट्रविरोधी सूचना दी हो।

(iv) पंजीकरण या प्राकृतिक नागरिकता के पांच वर्ष के दौरान नागरिक को किसी देश में दो वर्ष की कैद हुई हो।

(v) नागरिक सामान्य रूप से भारत के बाहर सात वर्षों से रह रहा हो।

एकल नागरिकता

- भारत में एकल नागरिकता है।

भारतीय संविधान संघीय है और

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी हे जो आपको **"राजस्थान पुलिस कांस्टेबल"** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **"राजस्थान पुलिस कांस्टेबल"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063 , 8504091672

अध्याय – 5

मौलिक अधिकार

भारत के संविधान के भाग तीन में अनु. 12 से 35 तक में मौलिक अधिकारों से सम्बन्धित प्रावधान हैं।

मौलिक अधिकारों की अवधारणा को U.S.A से अपनाया गया हैं। भारत की व्यवस्था में मौलिक अधिकारों के निम्नलिखित महत्व हैं।

(1) मौलिक अधिकारों के माध्यम से राजनीतिक एवं प्रशासनिक लोकतंत्र की स्थापना होती हैं। अर्थात कोई भी नागरिक प्रत्यक्ष अथवा अ प्रत्यक्ष रूप में राजनीति में भागीदारी कर सकता है और प्रत्येक नागरिक अपनी योग्यता के आधार पर प्रशासन का हिस्सा बन सकता हैं।

(2) मौलिक अधिकारों के माध्यम से सरकार की तानाशाही अथवा व्यक्ति विशेष की इच्छा पर नियंत्रण स्थापित होता हैं।

(3) मौलिक अधिकारों के माध्यम से व्यक्ति की स्वतंत्रता एवं सुरक्षा स्थापित होती हैं।

(4) मौलिक अधिकारों के माध्यम से विधी के शासन की स्थापना होती हैं।

(5) मौलिक अधिकारों के माध्यम से अल्पसंख्यक और दुर्बल वर्ग को सुरक्षा प्राप्त होती हैं।

(6) मौलिक अधिकारों के माध्यम से पंथनिरपेक्ष राज्य की अवधारणा को सुरक्षा प्राप्त होती हैं और इसको बढ़ावा मिलता हैं।

(7) मौलिक अधिकार सामाजिक समानता एवं सामाजिक न्याय यात्रा की स्थापना करते हैं।

(8) मौलिक अधिकारों के माध्यम से व्यक्ति की गरिमा एवं सम्मान की रक्षा होती हैं।

(9) मौलिक अधिकार सार्वजनिक हित एवं राष्ट्र की एकता को बढ़ावा देते हैं।

मौलिक अधिकारों की विशेषताए

(1) मौलिक अधिकार न्यायालय में वाद योग्य हैं। अर्थात मौलिक अधिकारों का उल्लंघन होने पर सुरक्षा के लिए न्यायालय में अपील की जा सकती है।

(2) कुछ मौलिक अधिकार केवल नागरिकों से सम्बंधित हैं। जबकि कुछ मौलिक अधिकार व्यक्ति से संबंधित है।

(3) मौलिक अधिकारों पर युक्तियुक्त प्रतिबन्ध लगाया गया है।

(4) मौलिक अधिकार राज्य के विरुद्ध प्रदान किए गये हैं। इसलिए ये राज्य के लिए नकारात्मक जबकि व्यक्ति के लिए सकारात्मक है।

(5) ये राज्य के प्राधिकार की कम करते हैं और व्यक्ति के सम्मान को बढ़ावा देते हैं।

(6) संसद को भी यह अधिकार नही कि वह मौलिक अधिकार से सम्बंधित मूल ढ़ाचे में परिवर्तन कर सके। (नकारात्मक परिवर्तन)

(7) आपातकाल के समय अनु० 20 और 21 के तहत प्राप्त मौलिक अधिकारों को छोड़कर अन्य मौलिक अधिकार निलंबित किए जा सकते हैं।

(8) मौलिक अधिकार शत्रु देश के नागरिक तथा अन्य देशों को प्राप्त नहीं हैं।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

<u>मौलिक अधिकारों की आलोचना</u> –

(1) इनका कोई स्पष्ट दर्शन नहीं है। अधिकांश मौलिक अधिकारों की व्याख्या उच्च न्यायालय एवं सर्वोच्च न्यायालय पर छोड़ दी गई है।

(2) इनमें स्पष्टता का अभाव है और ये सामान्य लोगों की समझ से बाहर है।

(3) मौलिक अधिकार आर्थिक व्यय की स्थापना नहीं करते।

(4) आपातकाल के समय इनका निलबन हो जाता है।

(5) निवारक निरोध जैसे प्रावधान मौलिक अधिकारों को कमजोर करते हैं और राज्य को नागरिकों पर हावी कर देते हैं।

(6) संसद के अधिकार हैं कि अनुछेद - 368 का प्रयोग कर इनमे कमी कर सकती है।

(7) मौलिक अधिकारों के सम्बन्ध में मिलने वाला न्याय अत्यधिक महंगा है तथा प्रकिया जटिल है।

(I) समता का अधिकार :- (अनु० 14-18)

(i) विधि के समक्ष एवं विधियों का समान संरक्षण-

संविधान के अनु० 14 में विधि के समक्ष समता एवं विधियों के समान संरक्षण का प्रावधान हैं। विधी के समक्ष समता की अवधारणा ब्रिटेन से प्रभावित हैं। विधी के समक्ष समता से आशय हैं, विधी सर्वोच्च होगी। और कोई भी विधिक व्यक्ति विधी से ऊपर नही होगा।

विधी के समक्ष समता की निम्नलिखित विशेषताए होती हैं –

(a) कोई भी व्यक्ति (गरीब, अमीर, प्राधिकारी अथवा सामान्य व्यक्ति, सरकारी संगठन गेर सरकारी संगठन)

विधी से ऊपर नही होगा।

(b) किसी भी व्यक्ति के लिए अथवा व्यक्ति के पक्ष में विशेषाधिकार नहीं होंगे।

(c) न्यायालय सभी व्यक्तियों के साथ समान व्यवहार करेंगा।

विधि के समक्ष समता के सिद्धांत के भारत के संबंध में निम्नलिखित अपवाद हैं।

(i) भारत का राष्ट्रपति अथवा राज्यों के राज्यपाल पर पद पर रहते हुए किसी भी प्रकार का आपराधिक मुकदमा नही चलाया जाएगा।

(ii) राष्ट्रपति अथवा राज्यपाल के इन पदों पर रहते हुए लिए गए निर्णयों के सम्बन्ध में न्यायालय में प्रश्नगत नही किया जायेगा।

(iii) कोई व्यक्ति यदि संसद अथवा राज्य विधानमंडल की कार्यवाही को उसी रूप में प्रकाशित करता हैं तो उसे दोषी नही माना जायेगा।

(iv) संसद अथवा राज्य विधानमंडल के सदस्यों को सदन की कार्यवाही के आरम्भ होने के 40 दिन पूर्व तथा कार्यवाही के समाप्त होने के 40 दिन बाद तक किसी दीवानी मामले में न्यायलय में उपस्थित होने के लिए बाध्य नही किया जायेगा।

(v) विदेशी राजनयिक अथवा कूटनीतिज्ञ फोजदारी मामलो एवं दीवानी मामलो से मुक्त होंगे।

(vi) अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों जैसे – UNO, ADB, WB, IMF आदि के अधिकारी एवं कर्मचारी दीवानी एवं फौजदारी मामलो से मुक्त होंगे।

विधियों के समान संरक्षण की अवधारणा U.S.A. की देन हैं।

विधियों के सामान संरक्षण से आशय हैं। "समान के साथ सामान व्यवहार तथा असमान के साथ असमान व्यवहार"

इस अवधारणा को सकारात्मक माना जाता हैं, क्योंकि इसके माध्यम से किसी के साथ अन्याय नही होता।

भारत में बाल सुधार कानून, अनुसूचित जाति एवं जनजाति के लिए विशेष कानून, महिलाओ के लिए विशेष कानून इसका उदाहरण हैं।

कुछ आधारो पर विभेद का प्रतिशेद

अनु. 15 में यह प्रावधान हैं कि राज्य किसी नागरिक के साथ केवल धर्म, मूल, वेश, जाति, लिग या जन्म स्थान को लेकर विभेद नही करेगा। यह व्यवस्था राज्य और व्यक्ति दोनों पर समान रूप से लागू होती हैं।

इसमें प्रावधान हैं कि राज्य के द्वारा दुकानों, सार्वजनिक भोजनालयो, होटल, मनोरंजन के स्थान आदि पर उपर्युक्त आधारों पर भेदभाव नही किया जायेगा। इसके अलावा राज्य निधि से पोषित कुओ, तालाबो, स्नानाघाट आदि का प्रयोग करने से किसी व्यक्ति को उपर्युक्त आधारों पर रोका नही जायेगा।

इसमें यह भी प्रावधान हैं कि राज्य महिलाओ एवं बच्चो के लिए विशेष व्यवस्था कर सकता हैं।

इसमें यह भी व्यवस्था हैं कि राज्य SC,ST तथा शैक्षणिक एवं सामाजिक दृष्टि से पिछड़े हुए वर्गों के लिए शैक्षणिक संस्थाओ में आरक्षण कर सकता हैं।

इसमें प्रावधान हैं कि राज्य आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लिए शैक्षणिक संस्थाओ में आरक्षण कर सकता है।

लोक नियोजन के सम्बन्ध में अवसर की समता (अनु०- 16)

अनु. 16 में यह प्रावधान कि राज्य के अधीन किसी भी पद पर नियुक्ति के सम्बन्ध में अवसर की समता होगी। केवल धर्म, वंश, जाति, लिग तथा जन्म स्थान के आधार पर भेदभाव नहीं किया जाएगा।

लेकिन निम्नलिखित मामलो में अवसर की समता के सिद्धांत का उल्लंघन किया जा सकता है –

(1) संसद किसी विशेष रोजगार के लिए निवासी की शर्त शामिल कर सकती है। इसी प्रावधान के तहत अनेक राज्यों में राज्य के मूल निवासियों की विशेषाधिकर प्रदान किए गए है।

(2) किसी धर्म से संबंधित नियुक्ति के मामले में धर्म विशेष के होने की सीमा लगाई जा सकती है।

(3) विशेष वर्ग के लिए अलग व्यवस्था की जा सकती है। जैसे- SC, ST, शैक्षणिक और सामाजिक दृष्टि से पिछड़ा वर्ग तथा आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग तथा कुछ राज्यों में महिलाओ के सम्बन्ध में विशेष प्रावधान है।

अस्प्रश्यता का उन्मूलन (अनु.-17)

संविधान के अनु० 17 में यह प्रावधान है कि अस्पृश्यता_को समाप्त किया जाता है और किसी भी रूप में अस्पृश्यता को बढ़ावा देना दण्डनीय अपराध होगा। इसके संबंध में दंड वह होगा ही संसद विधी द्वारा निर्धारित करें। संविधान में अस्पर्शता के संबंध में विशेष व्यवस्था नही की गई।

अतः संसद के द्वारा नागरिक अधिकार सुरक्षा अधिनियम-1955 के माध्यम से अस्पृश्यता को समाप्त किया।

नागरिक अधिकार सुरक्षा अधि. के अनुसार निम्नलिखित क्रियाकलापों को अपराध माना गया।

(a) सार्वजानिक पूजा स्थल में प्रवेश से रोकना।

(b) किसी भी तरीके में अस्पृश्यता का बचाव करना।

(c) सार्वजनिक स्थल जैसे - दुकान, होटल, मनोरंजन के साधन आदि के उपभोग से रोकना।

(d) सार्वजनिक संस्थान जैसे – शिक्षण संस्थान, चिकित्सालय आदि में प्रवेश से वंचित करना।

(e) अनुसूचित जाति का जातिसूचक शब्द के माध्यम से अपमान करना।

(f) किसी व्यक्ति को कोई सेवा अथवा वस्तु देने से इंकार करना।

- उपर्युक्त नियम राज्य एवं व्यक्ति दोनों से सम्बंधित हैं। अर्थात न तो राज्य के द्वारा और ना ही व्यक्ति के द्वारा इनका उल्लंघन किया जायेगा।
- उपर्युक्त कानून के सम्बन्ध में राज्य का यह कर्तव्य हैं कि वह लोगों को इस सम्बन्ध में सुरक्षा प्रदान करे।

<u>उपाधियों का अंत (अनु. 18)</u>-

संविधान के अनु. 18 में उपाधियों के सम्बन्ध में निम्नलिखित प्रावधान हैं –

(a) राज्य सेवा एवं विद्या को छोड़कर अन्य किसी भी प्रकार की उपाधि प्रदान नही करेगा।

(b) भारत का कोई नागरिक विदेशी राज्य से भी किसी प्रकार की उपाधि प्राप्त नही

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **"राजस्थान पुलिस कांस्टेबल"** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **"राजस्थान पुलिस कांस्टेबल"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063 , 8504091672

अध्याय – 8

राष्ट्रपति

- भारत में 'राष्ट्रप्रमुख' के रूप में राष्ट्रपति के पद की व्यवस्था को अपनाया गया हैं। ब्रिटिश क्राउन और अमेरिकी राष्ट्रपति से भिन्न, संविधान निर्माताओं ने भारतीय व्यवस्था के अनुरूप इस पद के एक संतुलित स्वरूप को अपनाया। गणतांत्रिक प्रणाली होने के कारण संविधान में 'निर्वाचित राष्ट्रपति' के प्रावधान को शामिल किया गया।

1.1. कार्यपालिका प्रमुख

- मंत्रिमंडलीय कार्यपालिका में सामान्यतः दो प्रमुख होते हैं: एक 'वास्तविक प्रमुख' एवं दूसरा 'नाममात्र या औपचारिक प्रमुख'। भारत में राष्ट्रपति नाममात्र प्रमुख है। तथा राष्ट्रपति कार्यालय की प्रकृति काफी सीमा तक औपचारिक हैं।
- शासन व्यवस्था में औपचारिक प्रमुख की आवश्यकता निम्नलिखित कारणों से होती हैं:
- राष्ट्र प्रमुख के रूप में: राष्ट्रपति देश की एकता, अखंडता एवं एकजुटता का प्रतीक हैं। अतः व्यवहारिक रूप से राजप्रमुख न होते हुए भी भारतीय राष्ट्रपति को राष्ट्रप्रमुख की भूमिका प्रदान की गयी हैं।
- दलगत राजनीति से मुक्त रखने हेतः राष्ट्रपति कार्यालय को दलगत राजनीति से ऊपर माना जा सकता हैं।
- प्रशासन की निरंतरता हेतुः मंत्रिपरिषद का कार्यकाल अनिश्चित होता हैं और यह लोकसभा में बहुमत पर निर्भर करता हैं। ऐसे में प्रशासन में निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए एक निश्चित कार्यकाल वाले कार्यालय का होना आवश्यक हैं।
- संघवादी स्वरूप को बनाए रखने हेतुः भारत के संदर्भ में एक अतिरिक्त कारण, संघवाद भी हैं। राज्य विधानसभाओं के सदस्य भी राष्ट्रपति के चुनाव में भाग लेते हैं। इसलिए, यह कहा जा सकता हैं कि राष्ट्रपति संघ के अतिरिक्त राज्यों का भी प्रतिनिधित्व करता हैं।
- संविधान के भाग 5 के अनुच्छेद 52 से 78 तक में संघ की कार्यपालिका का वर्णन हैं।

- अनुच्छेद 52 के अनुसार, भारत का एक राष्ट्रपति होगा। यहाँ "होगा" शब्द के लिए "shall" का प्रयोग किया गया है, जिसका अर्थ है कि भारत का राष्ट्रपति अपने पद पर सदैव विधमान होगा। यह पद न तो कभी रिक्त रखा जा सकता हैं और न ही इसे कभी समाप्त किया जा सकता हैं। राष्ट्रपति का चुनाव, इसके कार्यकाल की समाप्ति से पहले ही संपन्न करवाए जाने का प्रावधान किया गया हैं। अस्वस्थता के कारण अस्थायी अनुपस्थिति आदि के मामले में उपराष्ट्रपति, राष्ट्रपति का पद धारण करेगा जब तक कि राष्ट्रपति अपना पदभार पुनर्ग्रहण न करें।

1.2. स्थायी कार्यपालिका एवं अस्थायी कार्यपालिका

अनुच्छेद 53 (1) के अनुसार संघ की कार्यपालिका शक्ति राष्ट्रपति में निहित होगी और वह इसका प्रयोग इस संविधान के अनुसार स्वयं या अपने अधीनस्थ अधिकारियों के द्वारा करेगा।

विवरण

- राष्ट्रपति, अपनी इस कार्यपालिकीय शक्ति का प्रयोग मुख्यतः दो प्रकार के अधीनस्थ अधिकारियों के माध्यम से करता हैं:
- स्थायी कार्यपालिा या नौकरशाही
- अस्थायी या राजनीतिक कार्यपालिका
- स्थायी कार्यपालिका या नौकरशाही
- स्थायी कार्यपालिका के अंतर्गत अखिल भारतीय सेवाएँ (IAS, IPS, IFoS), प्रांतीय सेवाएँ] स्थानीय सरकार के कर्मचारी और लोक उपक्रमों के तकनीकी एवं प्रबंधकीय अधिकारी सम्मिलित होते हैं। सेवाएँ
- नौकरशाही अथवा स्थायी कार्यपालिका की आवश्यकता क्यों घ्
- संविधान निर्माता ब्रिटिश शासन के दौरन अपने अनुभव से गैर-राजनीतिक एवं व्यावसायिक रूप से दक्ष प्रशासनिक मशीनरी के महत्व को जानते थे।
- नौकरशाही, वह माध्यम हैं जिसके द्वारा सरकार की लोकहितकारी नीतियाँ जनता तक पहुँचती हैं।
- सरकार के स्थायी कर्मचारी के रूप में कार्य करने वाले ये प्रशिक्षित एवं प्रवीण अधिकारी, नीतियों को बनाने व उसे लागू करने में मंत्रियों का सहयोग करते हैं।

- वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों में नीति-निर्माण एक अत्यंत ही जटिल कार्य बन गया हैं जिसके लिए विशेषज्ञता एवं गहन ज्ञान की आवश्यकता हैं। इसके लिए दक्ष एवं स्थायी कार्यपालिका की आवश्यकता हैं।
- राजनीतिक या अस्थायी कार्यपालिका का ध्यान सामान्यतः नीति-निर्माण एवं क्रियान्वयन में अल्पकालीन राजनीतिक लाभ पर केंद्रित होता हैं। जबकि, स्थायी कार्यपालिका दीर्घकालीन समाजिक - आर्थिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए ही नीति-निर्माण एवं क्रियान्वयन में मंत्रियों को परामर्श देती हैं।
- सरकारो के बदलने के बावजूद भी स्थायी कार्यपालिका, नीतियों में निरंतरता एवं लोकप्रशासन में एकरूपता बनाए रखने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देती हैं।
- स्थायी कार्यपालिका एवं राजनीतिक कार्यपालिका के मध्य संबंध
- संसदीय शासन प्रणाली में, राजनीतिक कार्यपालिका (मंत्रीपरिषद, प्रधानमंत्री सहित) सरकार के प्रभारी होते हैं एवं स्थायी कार्यपालिका या प्रशासन इनके नियंत्रण एवं देखरेख में होता हैं।
- यह मंत्री की जिम्मेदारी हैं कि वह प्रशासन पर राजनीतिक नियंत्रण रखे।
- राजनीतिक कार्यपालिका, जहाँ सामूहिक रूप से लोकसभा या विधायिका के प्रति उत्तरदायी होती हैं, वहीं स्थायी कार्यपालिका या नौकरशाही अपने संबंधित विभागों के मंत्रियों के प्रति उत्तरदयी होती हैं।
- नौकरशाही से यह अपेक्षा की जाती हैं कि यह राजनीतिक रूप से तटस्थ हो, अर्थात् नौकरशाही, नीतियों पर विचार करते समय किसी राजनीतिक दृष्टिकोण या विचारधार का समर्थन नहीं करेगी।
- लोकतंत्र में सरकारों के बदलने पर नौकरशाही की जिम्मेदारी हैं कि वह नई सरकार को अपनी नीति बनाने एवं लागू करने में मदद करें।
- हमारा संविधान राष्ट्रपति के पद का सृजन करता हैं किंतु शासन की प्रणाली राष्ट्रपतीय नहीं हैं। शासन की राष्ट्रपतीय और संसदीय प्रणाली को समझना एवं उनके भेद जानना आवश्यक हैं। राष्ट्रपति प्रणाली के मुख्य लक्षण इस प्रकार हैं:
- राष्ट्रपति राज्य का अध्यक्ष होता हैं और साथ ही शासनाध्यक्ष भी। वह राज्य व्यवस्था मंे शीर्षस्थ होता हैं। वह वास्तव में कार्यपालक होता हैं, नाममात्र का नहीं। उसमें जो शक्तियाँ निहित हैं उनका वह व्यवहार में और वास्तव में उपयोग करता हैं।

- सभी कार्यपालिका शक्तियाँ राष्ट्रपति में निहित होती हैं। राष्ट्रपति } नियुक्त मंत्रिमंड़ल उसे केवल सलाह देता हैं यह आवश्यक नही हैं कि वह उनकी सलाह माने। वह उनकी सलाह लेकर अपने विवेक के अनुसार कार्य कर सकता हैं।
- राष्ट्रपति जनता द्वारा प्रत्यक्ष रूप से निर्वाचित होता हैं। राष्ट्रपति के पद की अवधि विधान-मंड़ल की इच्छा पर आश्रित नहीं हैं। विधान-मंड़ल न तो राष्ट्रपति का निर्वाचन करता हैं और न उसे उसके पद से हटा सकता हैं।
- राष्ट्रपति और मंत्रिमंड़ल के सदस्य, विधान मंड़ल के सदस्य नहीं होते हैं। राष्ट्रपति विधान-मंड़ल की अवधि के अवसान के पूर्व उसका विघटन नहीं कर सकता। विधान-मंड़ल राष्ट्रपति की पदावधि को महाभियोग द्वारा ही समाप्त कर सकता हैं अन्यथा नहीं। इस प्रकार राष्ट्रपति और विधान-मंड़ल नियत अवधि के लिए निर्वाचित होते हैं और एक दूसरे से स्वतंत्र होते हैं। एक का दुसरे में हस्तक्षेप नहीं होता।

1.3 राष्ट्रपति पद के लिए अर्हताएँ

- अनु. 58 के अनुसार राष्ट्रपति पद के चुनाव के लिए एक व्यक्ति को निम्नलिखित अर्हताओं को पूर्ण करना आवश्यक हैं:
    - वह भरत का नागरिक हो।
    - वह 35 वर्ष की आयु पूर्ण कर चुका हों।
    - वह लोकसभा का सदस्य निर्वाचित होने के योग्य हों।
    - वह संघ सरकार अथवा किसी राज्य सरकार अथवा किसी स्थानीय प्राधिकरण अथवा किसी सार्वजनिक प्राधिकरण में लाभ के पद पर न हों।

1.4 राष्ट्रपति की पदावधि (Term of Office)

- अनु. 56 के अनुसार, राष्ट्रपति की पदावधि, उसके पद धारण करने की तिथि से पांच वर्ष तक होती हैं। हालाँकि वह निम्नलिखित रीतियों से अपने कार्यकाल के दौरान ही पदमुक्त हो सकता हैं:
- भारत के उपराष्ट्रपति को लिखित में त्यागपत्र सौंपकर।
- संविधान का अतिक्रमण करने पर अनुच्छेद 61 में वर्णित महाभियोग की प्रक्रिया द्वारा उसे पदमुक्त किया जा सकता हैं। अनु. 61(1) के तहत, महाभियोग हेतु एकमात्र आधार 'संविधान का अतिक्रमण' उल्लिखित हैं।

- यदि राष्ट्रपति का पद उसकी मृत्यु, त्यागपत्र, निष्कासन अथवा किन्हीं अन्य कारणों से रिक्त हो तो उपराष्ट्रपति, नये राष्ट्रपति के निर्वाचित होने तक कार्यवाहक राष्ट्रपति के रूप में कार्य करेगा। यदि उपराष्ट्रपति, का पद रिक्त हों, तो भारत का मुख्य न्यायाधीश (और यदि यह भी पद रिक्त हो तो उच्चतम न्यायालय का वरिष्ठतम न्यायाधीश) कार्यवाहक राष्ट्रपति के रूप में कार्य करेगा।

पद रिक्त होने की तिथि से छह महीने के

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **"राजस्थान पुलिस कांस्टेबल"** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **"राजस्थान पुलिस कांस्टेबल"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063 , 8504091672

अध्याय – II

भारतीय संसद

संघीय विधानमंडल (संसद)

'संसद' शब्द अंग्रेजी के 'पार्लियामेंट' का हिन्दी रूपान्तर है। इसकी उत्पत्ति फ्रेंच शब्द 'Parler' (जिसका अर्थ है बोलना या बातचीत करना) और लैटिन शब्द 'Parliamentum' से हुई है। लैटिन भाषा-भाषी लोग इसे भोजन के बाद की जाने वाली वार्ताओं के लिए प्रयोग करते थे। यह वार्ता पादरी लोग अपने-अपने पूजा गृहों में करते थे और इन वार्ताओं को 13वीं सदी की एकलवादी सरकारों ने 'गरिमाविहीन' कहकर निंदा की थी। मैथ्यू पेरिस ऑफ सेन्ट अल्बान्स, वह प्रथम व्यक्ति था जिसने 1239 और पुनः 1249 ई. में 'Parliament' शब्द का पादरियों, अर्लो, और लार्डो की महान परिषद के लिए प्रयोग किया था। तब से यह शब्द विभिन्न मुद्दों एवं समसामयिक विषयों पर बातचीत करने का मंच सुलभ कराने वाली सभाओं के लिए प्रयोग किया जाने लगा।

भारत की संघात्मक व्यवस्था में केन्द्रीय विधानमंडल को संसद कहते हैं। एक विचारधारा और जनता की प्रतिनिधिक संस्था के रूप में संसद युगों से उन सिद्धांतों की चिरस्थायी स्मारक रही है जिनका हम नैतिक और राजनीतिक रूप से सदैव समर्थन करते रहे हैं। जब तक संसद जनाकांक्षाओं की अभिव्यक्ति तथा उसे पूरा करने वाला निकाय के रूप में कार्य करती रहेगी, तब तक यह देश में अशांति, असंतोष एवं अराजकता को रोकने का सबसे सशक्त माध्यम बनी रहेगी। संभवतः इन्हीं कारणों से महात्मा गांधी ने कहा था कि, 'संसदीय सरकार के बिना हमारा अस्तित्व कुछ भी नहीं रहेगा।'

भारतीय संविधान के अनु. 79 के अनुसार संघ के लिए एक संसद होगी जो राष्ट्रपति और दो सदनों से मिलकर बनेगी जिनके नाम राज्यसभा और लोकसभा होंगे। राज्यसभा को उच्च सदन या द्वितीय सदन भी कहा जाता है, इसी प्रकार लोकसभा को निम्न सदन या प्रथम सदन कहते हैं। राज्यसभा को उच्च सदन तथा लोकसभा को निम्न सदन कहने का कारण उसमें चुनकर आने वाले सदस्यों की तुलनात्मक योग्यता है। परम्परागत रूप में ऐसा माना जाता है कि लोक सभा में जनता द्वारा चुनकर ऐसे लोग आते हैं जो लोकप्रिय तो हाते हैं किन्तु यह आवश्यक नहीं कि वे अत्यंत योग्य एवं विद्वान ही हों, इसमें एसे लोग भी प्रायः आते रहे हैं जिनके पास अत्यंत मामूली किताबी ज्ञान भी न रहा हो, जबकि राज्यसभा के सदस्यों का चुनाव जनता द्वारा चुने हुए लोग करते हैं, अतः उसके सदस्य लोकसभा के सदस्यों की तुलना

में अधिक योग्य तथा जानकार होंगे, इसीलिए लोकसभा को निम्न सदन तथा राज्यसभा को उच्च सदन कहते हैं।

विधेयक पहले लोकसभा में प्रस्तुत किए जाते हैं और यहां से पारित हो जाने के बाद वे राज्यसभा में भेजे जाते हैं। चूंकि अधिकांश विध 'यक पहले लोकसभा में आते हैं और बाद में वे राज्यसभा में भेजे जाते हैं। अतः विधयेयकों के प्रस्तुतीकरण की ट्टष्टि से लोकसभा को प्रथम सदन तथा राज्यसभा को द्वितीय सदन कहा जाता है।

प्रथम और द्वितीय सदन कहने का एक आधार और भी है। लोकतंत्र में जनता सर्वोच्च होती है। चूंकि लोकसभा के सदस्यों का चुनाव जनता द्वारा प्रत्यक्ष होता है और राज्यसभा का चुनाव जनता द्वारा अप्रत्यक्ष अर्थात् जनता के प्रतिनिधियों द्वारा होता है, इसलिए भी लोकसभा को प्रथम सदन तथा राज्यसभा को द्वितीय सदन कहा जाता है।

अनु. 79 में राष्ट्रपति को संसद का अनिवार्य अंग बताया गया है क्योंकि वह संसद के सत्र को आहूत करता है, उसका स्थगन कर सकता है और लोकसभा का विघटन कर सकता है। कोई भी विधेयक, जिसे संसद के दोनों सदनों ने पारित कर दिया है, वह राष्ट्रपति की अनुमति से ही 'विधि' के रूप धारण करता है। संसद से पारित हुए विधेयकों का तबतक कोई अर्थ नहीं है जबतक कि, राष्ट्रपति के उसपर अपनी अनुमति न दे दी हो।

लोकसभा

प्रथम लोकसभा का गठन 17 अप्रैल, 1952 को हुआ था। लोकसभा के गठन के सम्बन्ध में संविधान के दो अनच्छेद, यथा 81 तथा 331 में प्रावधान किया गया है। लोकसभा संसद का प्रथम अथवा निम्न सदन है। इसे 'लोकप्रिय सदन' भी कहा जाता है क्योंकि, इसके सभी सदस्य जनता द्वारा वयस्क मताधिकार के आधार पर प्रत्यक्ष रूप से चुने जाते हैं। लोकसभा में अधिकतम 552 सदस्य हो सकते हैं। लोकसभा की अधिकतम सदस्य संख्या 552 है इनमें से 530 सदस्य राज्यों से जबकि केंद्र शासित प्रदेशों से 20 सदस्य चुने जाते हैं जबकि 2 आंग्ल भारतीय सदस्य भारत के राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत किए जाते हैं। लोकसभा की वर्तमान सदस्य संख्या 545 से इनमें से 530 सदस्य राज्यों से जबकि 13 सदस्य केंद्र शासित प्रदेशों से चुने जाते हैं जबकि 2 आंग्ल भारतीय सदस्य भारत के राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत किए जाते हैं।

- *91वाँ संविधान संशोधन अधिनियम 2001 में प्रावधान किया गया है कि लोकसभा की अधिकतम सदस्य संख्या 552 सन 2026 तक बनी रहेगी।*

- परिसीमन अधिनियम 1952 के अनुसार त्रिसदस्यीय परिसीमन आयोग का गठन किया जाता है। न्यायमूर्ति कुलदीप सिह की अध्यक्षता में चौथा परिसीमन आयोग का गठन वर्ष 2001 में किया गया। देश में पहला परिसीमन आयोग 1952 में, दूसरा 1962 में और तीसरा ऐसा आयोग 1973 में गठित किया गया था।
- लोकसभा का कार्यकाल अपनी प्रथम बैठक से अगले 5 वर्ष तक होती है।
- लोकसभा का सदस्य बनने के लिए व्यक्ति में निम्नलिखित योग्यताएं होनी आवश्यक हैं:

1. वह भारत का नागरिक हो।

2. उसकी आयु 25 वर्ष से कम न हो।

3. वह संघ सरकार तथा राज्य सरकार के अधीन किसी लाभ के पद पर न हो (सरकारी नौकरी में न हो) 4. वह पागल / दिवालिया न हो।

- नवगठित लोकसभा अपने अध्यक्ष (स्पीकर) तथा उपाध्यक्ष का चुनाव करती है। लोकसभा - अध्यक्ष का कार्यकाल पाँच वर्ष होता है, किन्तु अपने पद से वह स्वेच्छा से त्यागपत्र दे सकता है अथवा अविश्वास प्रस्ताव द्वारा उसे हटाया जा सकता है।
- 61वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1989 के द्वारा यह व्यवस्था कर दी गई कि 18 वर्ष की आयु पूरी करने वाला नागरिक लोकसभा या राज्य विधानसभा के सदस्यों को चुनने के लिए वयस्क माना जाएगा।
- लोकसभा विघटन की स्थिति में 6 मास से अधिक नहीं रह सकती।
- लोकसभा का गठन अपने प्रथम अधिवेशन की तिथि से पाँच वर्ष के लिए होता है।
- लेकिन प्रधानमंत्री की सलाह पर लोकसभा का विघटन राष्ट्रपति द्वारा 5 वर्ष के पहले भी किया जा सकता है।
- क्योंकि लोकसभा के दो बैठकों के बीच का समयान्तराल 6 मास से अधिक नहीं होना चाहिए।
- लोकसभा की अवधि एक बार में 1 वर्ष से अधिक नहीं बढ़ायी जा सकती है।
- आपात उद्घोषणा की समाप्ति के बाद 6 माह के अन्दर लोकसभा का सामान्य चुनाव कराकर उसका गठन आवश्यक है।

अधिवेशन

- लोकसभा का अधिवेशन । वर्ष में कम से कम 2 बार होना चाहिए
- लोकसभा के पिछले अधिवेशन की अन्तिम बैठक की तिथि तथा आगामी अधिवेशन के प्रथम बैठक की तिथि के बीच 6 मास से अधिक का अन्तराल नहीं होना चाहिए, लेकिन यह अन्तराल 6 माह से अधिक का तब हो सकता है, जब आगामी अधिवेशन के पहले ही लोकसभा का विघटन कर दिया जाए।
- अनुच्छेद 85 के तहत राष्ट्रपति को समय-समय पर संसद के प्रत्येक सदन, राज्यसभा एवं लोकसभा को आहुत
- करने, उनका सत्रावसान करने तथा लोकसभा का विघटन करने का अधिकार प्राप्त है।

विशेष अधिवेशन

- राष्ट्रीय आपातकाल की घोषणा को नामंजूर करने के लिए लोकसभा का विशेष अधिवेशन तब बुलाया जा सकता है। जब लोकसभा के अधिवेशन में न रहने की स्थिति में कम से कम 10 सदस्य राष्ट्रपति को अधिवेशन बुलाने के लिए लिखित सूचना दें या जब अधिवेशन चल रहा हो, तब लोकसभा को इस आशय की लिखित सूचना दें। ऐसी लिखित सूचना अधिवेशन बुलाने की तिथि के 14 दिन पूर्व देनी पड़ती है। ऐसी सूचना पर राष्ट्रपति या लोकसभाध्यक्ष अधिवेशन बुलाने के लिए बाध्य हैं।

लोकसभाध्यक्ष - लोकसभा अध्यक्ष लोकसभा का प्रमुख पदाधिकारी होता है और लोकसभा की सभी कार्यवाहियों का संचालन करता है -

- लोकसभा अध्यक्ष का निर्वाचन लोकसभा के सदस्यों के द्वारा किया जाता है।
- लोकसभा अध्यक्ष के निर्वाचन की तिथि राष्ट्रपति निश्चित करता है।
- लोकसभाध्यक्ष लोकसभा के सामान्य सदस्य के रूप में शपथ लेता है।
- लोकसभाध्यक्ष को कार्यकारी अध्यक्ष शपथ ग्रहण कराता है।
- कार्यकारी अध्यक्ष जो लोकसभा में सबसे अधिक उम्र का सदस्य होता है।
- आगामी लोकसभा चुनाव के गठन के बाद उसके प्रथम अधिवेशन की प्रथम बैठक तक अपने पद पर बना रहता है। लोकसभाध्यक्ष उपाध्यक्ष को अपना त्यागपत्र दे देता है।
- लोकसभा के सदस्यों के बहुमत से पारित संकल्प द्वारा अपने पद से हटाया जा सकता है।

- लोकसभाध्यक्ष का कार्य एवं शक्तियाँ लोकसभा के सम्बन्ध में काफ़ी अधिक हैं, जिनका वर्णन निम्न प्रकार किया जा सकता है-

राज्यों में लोकसभा सदस्यों की संख्या

1. उत्तर प्रदेश 80	2. महाराष्ट्र 48
3. पश्चिम बंगाल 42	4. बिहार 40
5. तमिलनाडु 39	6. मध्य प्रदेश 29
7. कर्नाटक 28	8. गुजरात 26
9. राजस्थान 25	10. आंध्र प्रदेश 25
11. ओडिशा 21	12.केरल 20
13. तेलंगाना 17	14. असम 14
15. झारखण्ड 14	16. पंजाब 13
17. छत्तीसगढ़ 11	18. हरियाणा 10
19. जम्मू / कश्मीर 6	20. उत्तराखण्ड 5
21. हिमाचल प्रदेश 4	22.आंध्रप्रदेश 2
23. गोवा 2	24. मणिपुर 2
25. मेघालय 2	26. त्रिपुरा 2
27. मिजोरम 1	28. नागालैंड 1
29. सिक्किम 1	

केन्द्रशासित प्रदेशलोकसभा सदस्यों की संख्या

1. दिल्ली 7	2. अंडमान निकोबार 1
3.चण्डीगढ़ 1	4. दादरा / नागर हवेली 1
5. दमन एवं दीव 1	6. लक्षद्वीप 1
7. पुदुचेरी 1	

राज्यसभा

संसद के दो सदन हैं - लोक सभा और राज्यसभा। राज्यसभा संसद का उच्च और द्वितीय सदन है। राज्यसभा राज्यों का प्रतिनिधित्व करती है।

और इसके सदस्य विभिन्न राज्यों के प्रतिनिधि होते है। यह एक स्थाई सदन है और कभी भंग नहीं होता, किन्तु इसके 1/3 सदस्य प्रति दो वर्ष के बाद स्थान खाली कर देते हैं, जिनकी पूर्ति नए सदस्यों से होती है। भारत का उपराष्ट्रपति राज्यसभा का पदेन सभापति होता है।

राज्यसभा में अधिक-से-अधिक 250 सदस्य हो सकते है। इनमें 238 राज्यों तथा केन्द्रशासित प्रदेशों से निर्वाचित और 12 सदस्य राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत होते है। ये 12 सदस्य ऐसे होते हैं जिन्हें साहित्य, विज्ञान, कला सामजिक सेवा इत्यादि का विशेष ज्ञान होता है।

राज्यसभा की वर्तमान सदस्य संख्या 245 में , राज्यों से 233 तथा राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत 12 सदस्य होते हैं।

***राज्यों के प्रतिनिधि** - सदस्यों का निर्वाचन अप्रत्यक्ष रीति से होता है। राज्यों के*

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

*नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यही समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **"राजस्थान पुलिस कांस्टेबल"** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **"राजस्थान पुलिस कांस्टेबल"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे , धन्यवाद /*

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063 , 8504091672

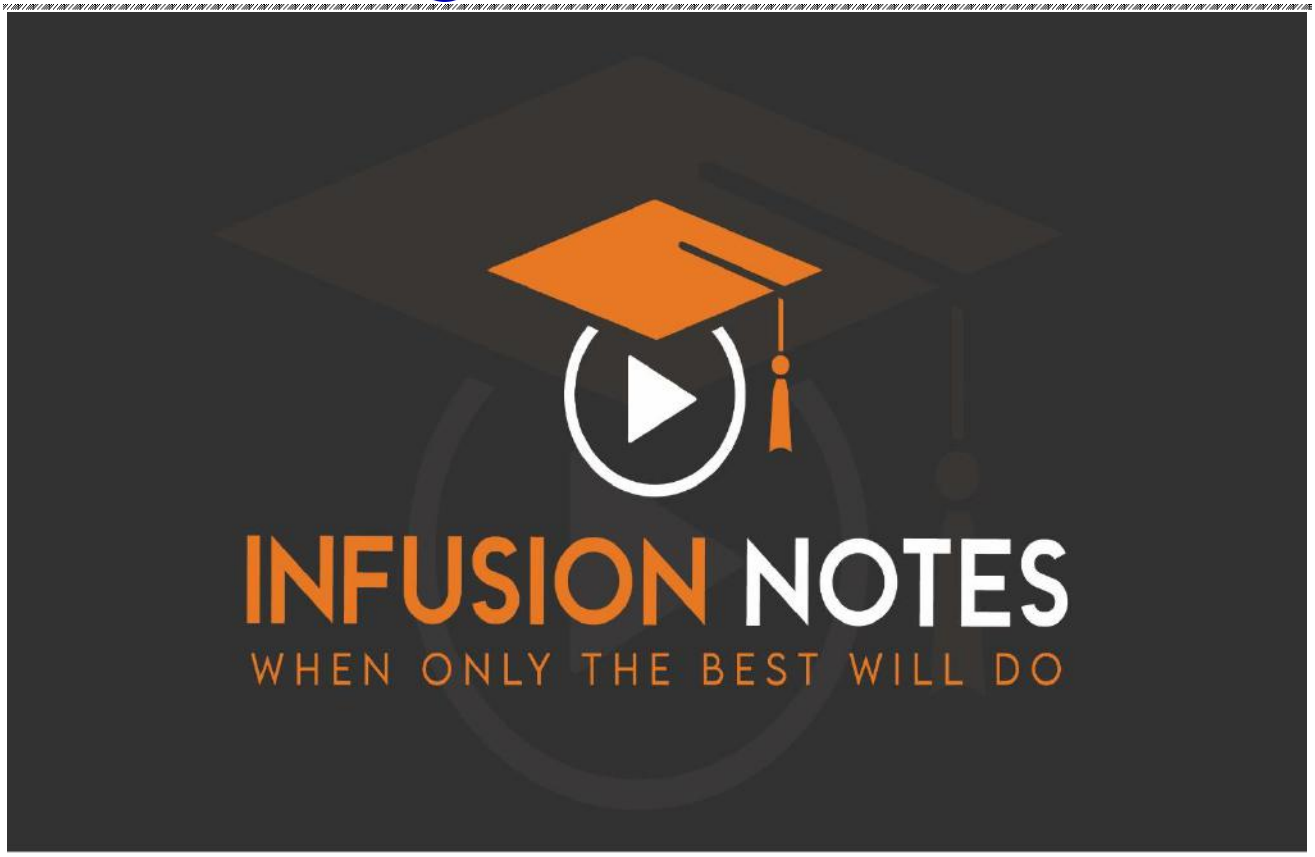

AVAILABLE ON/

01414045784

contact@infusionnotes.com

http://www.infusionnotes.com/